महाराजा रघु का याग

१ स्वाहा ११ ०४ १९९१

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों पठन-पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है, क्योंकि उस अनन्तवान के लिए सृष्टि के प्रारम्भ से और वर्तमान के काल तक मानव अन्वेषण कर रहा है, और यह विचार रहा है कि वह जो प्रभु अनन्तवान हैं, उसका ज्ञान और विज्ञान कितना विशाल है। तो इसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, अन्वेषण करता रहा है, अपनी विज्ञानशाला में विद्यमान हैं, और वह विज्ञान के ऊवर अन्वेषण कर रहा है, और उस विज्ञान को कहाँ तब ले जाता है, इसको वह माप नही सकता, परन्तु एक आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता है, वह आध्यात्मिकवाद में ही रमण करता रहता है, और आध्यात्मिकवाद मानो देखो, इतनी अनुपम धारा में रमण करने लगता है, क्या वह आध्यात्मिकवाद मानो देखो, उसकी आत्मा का विषय बन करके रहता है, क्योंकि प्रत्येक मानव आत्मा की प्रेरणा के आधार पर अपने क्रियाकलापों को वह निहित करता रहा है। तो इसीलिए वेद का ऋषि यही कहता है, कि आत्मा और मन मस्तिष्क के द्वारा ही मानव को अपने क्रियाकलापों में सदैव रत्त रहना चाहिए। आज का हमारा वेदमन्त्र मानो यह कहा रहा है प्राणं ब्रीहि वर्णनं ब्रह्वा स्वः व्रता ऋषि-मुनियों का बेटा! एक वेदमन्त्र को ले करके जब अन्वेषण करने लगता है, और विचारने लगता है क्या यह जो यागां भवि वर्णसुतं ब्रह्मा मानो यह जो याग है, यह अपने में कितना विचित्र है, और परमपिता परमात्मा का एक अनूठा जगत है, और उस ऊँचे मंगल ब्रहे ऊँची सुगठिता में, मानव अपने को उसी में गठित करना चाहता है।

तो मेरे प्यारे! मुझे एक काल आज स्मरण आ रहा है, आज के वेदमन्त्रों के आधार पर मैंने एक वाक् प्रगट किया था, क्या ऋषि-मुनियों का जब भी समूह एकान्त स्थली पर विद्यमान होता है, तो अपने गम्भीर जगत में चले जाते हैं, और जब आध्यात्मिकवाद मानो देखो, इस विज्ञान में रमण करने लगता है, और आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिकवाद दोनों का मानव सौम्यता को प्राप्त हो जाता है। मेरे पुत्रों! वह सोम बन जाता है, तो इसीलिए हम जब उस सोम को पान करते हैं, तो हमारा जो जीवन है वह अमरावति को प्राप्त हो जाता है, तो बेटा! हमारे यहाँ सोम की बड़ी विचित्र महिमा का वर्णन आता है, मानो देखो, कहीं उत्तरायण को हमारे यहाँ सोम कहते हैं, जब उत्तरायण में गमन करने लगता है। तो सोम की उपलब्धि हो जाती है। बेटा! हमारे यहाँ उत्तरायण का बड़ा विचित्र एक स्वरूप माना गया है, क्योंकि उत्तरायण उसे कहते हैं, जहाँ मानव प्रकाश में रहता है। और अन्धकार उसके निकट नही आ पाता। तो उसे सोम कहते हैं, और सोम का जो स्थान है, वह मानो देखो, उत्तरायण कहलाता है। उत्तरायण में सोम रहता है, और वह सोम्यता को जब प्राप्त होता है, तो सोम का पान करने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यहाँ सोम के बड़े पर्यायवाची शब्द माने जाते हैं। क्योंकि सोम कहते हैं मधुर वाणी को और मधुर वाणी में भी यदि स्वाहाः होता है, मधुर वाणी में भी मधुर पन और ज्ञान होता है, और सत्य होता है तो वह वाणी उसी को मानो सौम्यता को प्राप्त होती है, और यदि वाणी के रूप में ही मानो देखो, जल और अन्न का भी मुनिवरों! देखो, शोधन किया हुआ अन्न पान किया जाता है, और जल को भी सोम बना करके पान किया जाता है। तो वह सौम्य बन जाता है। तो हमारे यहाँ उसका नाम सोम कहा गया है, हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में सोम के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं, मानो देखो, यह ज्ञान देखो, जो भौतिक ज्ञान आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनो

एक सूत्र में आ जाते हैं तो हमारे यहाँ उसका नाम भी सोम कहा गया है क्योंकि देखो, भौतिक ज्ञान और विज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान और विज्ञान का जब समन्वय हो जाता है, तो मानव अपने में धन्य हो जाता है, और यह स्वीकार करता है कि मैं सोम बन गया हूँ, तो सौम्यता को प्राप्त करना यह मानव का कर्तव्य है। सौम्यता की आभा में रत्त रहना ही मानवीयतव कहलाता है, और वह देवता को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहा है, एक समय बेटा! देखो, अमृतं ब्रहे अमरावती अमृतो सम्भवा कृता बेटा! देखो, एक समय कात्यायनी से यह प्रश्न किया गया कि हे कात्यायनी! यह सोम क्या है? तो कात्यायनी ने यह कहा कि-प्रभु! मैं सोम को नही जानती, उन्होंने मैत्रयी से कहा कि देवी! यह सोम क्या है? तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि यह सोम क्या है? तो वह मैत्रयी ने कहा-प्रभु! यह जो सोम है, यह ज्ञान है, यह जो सोम है, यह प्राण है, और जब यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके स्वाहाः कहता है वह भी सोम कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब पर्यायवाची इतने शब्द सोम के बन गएं। तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि हे देवी! यह मानो सोम स्वाहाः कैसे कहलाता है। उन्होंने कहा यह जो स्वाहाः शब्द है, यह द्यौ लोक में जाता है, यदि मानव का यज्ञमान का या होता गणों का यज्ञशाला में देखो, मन कर्म वचन एकाग्र होते हैं। और जिस देवता के प्रति मन्त्र का उद्गीत गाया जाया रहा है। उसी देवता का उसके हृदय में मानो वास हो जाता है। तो वह स्वाहा उसी देवता को प्राप्त हो करके वह देवता उसके बदले सोम प्रदान कर देता है। बेटा! वह सोम कहलाता है। तो स्वाहा जो शब्द है यह सोम बन जाता है। तो मुनिवरों! देखो, जब मैत्रयी ने यह कहा तो उन्होंने कहा कि हे भगवन! मैं एक समय देखो, अमृतं ब्रह्मा कात्यानं जसुते देवत्वां मैं एक समय मानो एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके मनन कर रही थी, और मैं यह उच्चारण कर रही थी कि मेरा जो सोम है, मेरा जो स्वाहा है, यह मानो देखो, सर्पराज को प्राप्त हो जाएं, अथवा यह सिंहराज को प्राप्त हो जाएं, तो यह सिंहराज को प्राप्त हो जाता है। क्योंकि मन कर्म और वचन तीनों ही उसके साथ होते हैं। जब तीनों मेरे साथ रहते हैं तो जिसके प्रति मैं आह्वान के रूप में परिणत कराना चाहती हूँ। तो मानो वह स्वाहाः उसी को प्राप्त होता है। स्वाहाः का अर्थ है स्वाहाः कहते हैं मानो देखो, अपनी वाणी को स्वाहाः कहते हैं। अपने चित्रों को स्वाहाः कहतें हैं। मानो देखो, जो साकल्य की जो धाराएं उत्पन्न होती हैं, और उन धाराओं को जो अपने में पान करना चाहता है। जानों कि वह सोम का पान कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जब माता मलदाल्सा का जीवन स्मरण आता है, तो माता मदालसा ने यह कही वेदमन्त्रों में अध्ययन किया एक समय वह बाल्य अमृतं मानो देखो, अपने में वेदमन्त्रों का उद्गीत गा रही थी, प्रातःकालीन उन्होंने अपनी यज्ञशाला में याग किया और याग के पश्चात गान गाने लगी गान क्या था सोमं ब्रह्मा वर्णसुतं विराचां चक्रे व्रत्यां देवत्वां मा वर्णनं प्राणा मानो देखो, मैं यह अप्रतं मानो देखो, वह उद्गीत गा रही थी माता मलदाल्सा कहती थी कि मेरा जो यज्ञ का स्वाहाः है, यह सोम को प्राप्त हो जाएं, और सोमं ब्रह्वा मानो यह सोम को प्राप्त होता रहे, तो वह सोम को प्राप्त हो गया, अब विचार आया कि सोम यहाँ किसे कहा गया? तो मेरे प्यारे! देखो, वेद की एक आख्यिका आती है, और वेदमन्त्र कहता है सोहम ब्रह्मा स्वयं बह्वा सोमं प्री वर्णनं बह्वे आत्मां भू वर्णनं मानो देखो, सोम उसे कहते हैं कि जहाँ आत्मा का परमात्मा से मिलान होता है, और आत्मा परमात्मा की प्रतिभा में रत्त हो जाता है। तो उसका सोम कहते हैं। मानो देखो, मिलन होने का नाम सोम हैं, जब सन्धि का काल आता है, और सन्धि को हमारे यहाँ सोम कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब दो वस्तुओं की सन्धि होती है। मिलन होता है, जैसे आत्मा परमात्मा का मिलन होता है, जैसे बाह्य जगत का और आन्तरिक जगत का समन्वय होता है। जैसे स्वाहाः उच्चारण करने वाला यज्ञमान जब स्वाहाः कहता है, जब दोनो का मिलन होता है, तो बेटा! उसको सौम्य कहते हैं। तो विचारने में आता है कि वह सौम्य आभा कहलाती है, तो विचार आता रहता है, मेरे पुत्रों! सौम्यं ब्रहा हम सोम के आधीन न बनें हम सोम

के आधीन न बनें, सोम हमें प्राप्त हों परन्तु हम सोम को प्राप्त न हो ऐसा बेटा! उद्गीत गाने वाला उद्गीत गाता है। तो माता मल्दालसा ने यह वाक् जब अपने में श्रवण किया, तो सोम प्राणों को भी कहते हैं, जब प्राण और अपान को मिलाने की सत्ता मुनिवरों! साधक मे हो जाती है। तो वही साधक मुनिवरों! ओ३म् ब्रहे स्वाहाः कह करके और वह मुनिवरों! देखो, प्राण और अपान का दोनो का समन्वय करता है, और दोनो का जब सन्धिकाल हो जाता है, तो उसको सोम कहते हैं, मेरे प्यारे! वही तो सोम कहलाया गया है। तो मुनिवरों! देखो, माता मलदाल्सा ने याग करने का विचार बनाया तो बेटा! याग कहते हैं, यज्ञमान बाह्य जगत में अग्नि का ध्यान करता है। अग्नि को प्रचंड करता है। उस स्वाहाः से इसी प्रकार जब मेरी प्यारी माता याग करती है, तो उसका याग ही कुछ और प्रतिभाशाली होता है। बेटा! वेदमन्त्रों में इस प्रकार की अनन्य विद्याएं हमारे यहाँ आती रही हैं। जिनको प्रायः हमारे यहाँ माताएं जानती हैं, और माताएं मुनिवरों! देखो, उस काल में जानती रही हैं, आधुनिक काल का तो मुझे इतना प्रतीत नही है, देखो, माता जो प्राणो को जान लेती है, और प्राणों का सन्निधान जान लेती है। तो मानो देखो, वह माता अपने में सोम का पान करा सकती है। तो मुझे बेटा! माता मलदाल्सा का जीवन प्रायः स्मरण आता रहता है। माता मलदाल्सा के सम्बन्ध में वैदिक साहित्य में यह आया है। उनके विचारों में की वह अपनी आत्मा अपने विचारों में अपने प्राण और अपान को दोनों का समन्वय करती हुई और वह जो गर्भस्थल में जो आत्मा होता है। अथवा शिशु हैं उससे वह वार्त्ता प्रगट करती रही है। तो माता मलदाल्सा उसका जब उदबुद्ध गान गाती है। तो मानो देखो, आत्मा से कहती है, कत्मोसी ब्रण कृतं हे आत्मा! तू कौन है? कैसे मेरे गर्भ में तूने प्रवेश किया है। तो मुनिवरों! देखो, वह आत्मां भू वर्णनं ब्रहे मेरे प्यारे! देखो, प्राण और अपान का दोनो का समन्वय करना ही माता के गर्भ की आत्मा अपने में वार्त्ता प्रगट करती है। मेरे प्यारे! देखो, जब प्राण और अपान का दोनों का मिलन हो करके उसमें समान की पुट लगाई जाती है, और समान की पुट उदान के ऊपर सवार हो जाते हैं, और वह मानो देखो, सामान्य प्राण के आधार पर जब वह गमन करते हैं, तो माता इतनी साधक बनी है, क्या माता मल्दाल्सा अपने गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रगट करती है, और उसको साक्षात्कार दृष्टिपात करती है। और वह कहती है हे आत्मा! तू मेरे गर्भ में तेरा प्रवेश हुआ, तो वह गर्भ का आत्मा कहता है, सोमं सोमं शमं ब्रद्वे कृतं मानो देखो, हम सोम को पान करने आए हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह सोम को पान कराती है। वह सोम एक औषध होती है। जो पर्वतीय क्षेत्रों में प्राप्त होती है, और मानो देखो, उस औषधि को ले करके और उसमें मृचिका औषध का समन्वय करते हुए उसको खरल करके जब उसको अग्नि में तपा करके और मानो उसको स्वच्छ बना करके और गायत्रिणी मन्त्रों से उसको पुट दी जाती है। गायत्राणी मन्त्रों से पुट दी जाती हैं। वेदमन्त्रों से भी मानो देखो, वह महा मृतिका मन्त्र से भी देखो, उसको पुट लगाई जाती है। तो वह मुनिवरों! देखो, तपा हुआ औषध वह अमृत बन गया है। वह सोम बन गया है। उसको माता पान करती है, जिस माह का मानो देखो, जो भी कहा आता है, उसी माह का वह औषध बना करके सोम बना करके मेरे पुत्रों! वह अपनी गर्भ की आत्मा को प्रदान करती रही है, और वह जब कहती है कि प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः और समानाय स्वाहाः कह करके उसमें आहुति देती है, और स्वाहा कहती है तो मुनिवरों! देखो, वह सोम याग कहलाता है। उसे हम सौम्य याग कहते हैं। उसके गर्भ का आत्मा गर्भ का जो रहने वाला जो शिशु है, वह ब्रह्मवेत्ता की विद्या को माता के उदगारों से अपने में ग्रहण कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण आता है, कि वैदिक साहित्य में इस प्रकार की विद्याए बेटा! देखो, माताओं और आचार्यों के गर्भ में पनपती रही हैं। इस प्रकार का देखो, विज्ञान प्रायः हमारे यहाँ होना चाहिए मेरे प्यारे! देखो, माता मलदाल्सा का जीवन स्मरण है, क्या वह अपनी गर्भ की आत्मा को ब्रह्म विद्या देती रही, और वह ब्रह्म विद्या क्योकि माता ही दे सकती है। क्योंकि माता जो है, वह पांचं ब्रहे द्वितीय

वर्णा आस्वातं पृथ्वी लोकां मानो देखो, वह प्रत्येक माह में लोक-लोकान्तरों की शिक्षा दे करके और अन्त में वह कहती है, कि यह ब्रह्म का एक चक्र कहलाता है, यह ब्रह्म कहलाती है, और इस माला को तुम धारण करो तो उसी माला के आश्रित मेरे प्यारे! देखो, बाल्य माता के गर्भ में पनपता रहा है। तो मुनिवरों! देखो, माता मलदाल्सा ब्रह्म विद्या दे रही है। और ब्रह्म विद्या पाना ही यह मानवीयता का एक कर्तव्य माना गया है। तो विचार आता रहता है बेटा! माता इस प्रकार सोम का पान करती रही है, और वह माताएं जब सोम का पान करती है तो उनके गर्भ से ऊर्ध्वा ऊर्ध्ववेत्ता ब्रह्मचारियों का जन्म होता है, वह ब्रह्मवेत्ता बन करके ब्रह्म की चर्चा करते रहते हैं, वह अपने में ब्रह्मनिष्ठ होते रहे हैं। तो इस प्रकार को जो विद्यां अपने में धारण करता है। वह महान और पवित्र कहलाता है। बेटा! मैं द्वितीय देखो, द्वितीय विषय पर चला गया हूँ। यह आज का विषय मेरा नही था, परन्तु मुझे कही से यह प्रेरणा प्राप्त हो रही थी कि इस पर कुछ उदगार दियें जाएं। परन्तु मैं याग के सम्बन्ध में विचार-विनिमय दे रहा था कि माता अपने में भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों में परिणत होता रहा है, मेरे प्यारे! देखो, याग कितने प्रकार के होते हैं? उन यागों के ऊपर मैं बहुत से कर्मकाण्ड भी जानता हूँ, परन्तु कुछ नही जान पाया। तो बेटा! जैसे अग्निष्टोम याग कहलाता है, वह अग्नि के ऊपर मानो देखो, याग अश्वत हो करके और वह अन्तरिक्ष में द्यौ में अपनी उड़ाने उड़ता हैं। वह शोधन करते रहते हैं, वह विज्ञान के वांगमय में जब प्रवेश होते हैं, तो विज्ञान की उन धाराओं में वह रमण करता है। जहाँ पृथ्वी के गर्भ में वह तरंगे जाएगी, वहाँ हम सोम उत्पन्न करेंगे, वह देखो, बाह्य जगत में मानो देखो, अग्नि की धाराओं में और वायु की तरंगो में रमण करेंगे वहाँ भी अमृत को प्रदान करते हैं। वह सोमवेत्ता बना देते हैं। सौम्य बनाती रहती है। तो आओ, मेरे पुत्रों! इस सन्दर्भ में मैं विशेष चर्चा नही प्रगट करूंगा केवल विचार-विनिमय यह कि हम अपने में याज्ञिक बनें, क्योंकि याग का प्रकरण बड़ा विचित्र प्रकरण है। जो ऋषि-मुनि बेटा! एकान्त स्थलियों में विद्यमान हो करके अपने में यागों का चयन करते रहें हैं। मेरे प्यारे! देखो, सत्य उच्चारण करना और सत्य भी देखो, वेद के मन्त्रों से गुथां हुआ हो, तो वह भी मुनिवरों! देखो, तरंगे बन करके याज्ञिक बन जाते हैं। एक बेटा! देखो, अग्नि मंत जब यज्ञमान स्वाहाः कहता है। तो स्वाहाः का अपना बड़ा महत्व माना गया है। क्योंकि यज्ञमान का जो स्वच्छ हृदय से जैसे देखो, उसका जो हृदय है, वह याग में तन्मय रहना चाहिए। देखो न कर्म वचन उसी के आश्रिता में रमण करने चाहिएं। और जब वह स्वाहाः उच्चारण करता है मानो स्वाहाः उसे द्यौ लोक मे पंहुचा देता है, उसे द्यौ में प्रवेश करा देता है, बेटा! मुझे स्मरण आता रहा है एक समय बेटा! शिकामकेतु उद्दालक मुनि के यहाँ उनकी पत्नी रम्भेश्वरी ने यह कहा कि-प्रभु! आप यह वेदमन्त्रों में स्वाहा की ध्वनि क्यों आती है, यह ध्वनित क्यों हो रहा है? तो उस समय शिकामकेतु उद्दालक ने यह कहा था क्या इसके ऊपर हम विचार-विनिमय करेंगे, विचार करने के पश्चात दोनों ने विचार किया, परन्तु विचार में यह आया कि यह जो स्वाहा है यह आत्मा है यह आत्मा कहलाता है। मानो देखो, तब माता के गर्भ में शिशु विद्यमान होता है, तो वह भी आन्तरिक जगत में बेटा! स्वाहाः की ध्वनि से मानो देखो, वह अपने में ध्वनित होता रहा है। इसी प्रकार जब मुनिवरों! देखो, यज्ञमान अपने में ध्वनित होता हुआ स्वाहाः कहता है, तो वह भी ध्वनि स्वाहाः बन करके द्यौ में प्रवेश कर जाती है। यह आत्मा की ध्वनि है, मानो देखो, आत्मा का वह रूप है, जैसे मुनिवरों! देखो, एक मानव के शरीर में आत्मा विद्यमान होता है, और वह आत्मा जब तक मुनिवरों! शरीर में रहता है, शरीर चेतनित बना रहता है, जब तक शरीर में रहता है, जब तक बुद्धिमान बना हुआ है, जब तक शरीर में विद्यमान है, तब तक मानो वह नाना प्रकार का अनुसन्धान कर रहा है। जब तक आत्मा इस शरीर में विद्यमान हैं, तभी तक मुनिवरों! देखो, संसार का विज्ञानवेत्ता बन जाता है। जब तक आत्मा विद्यमान है। जब तक यौगिक क्षेत्र में जा करके सूर्य की किरणों के साथ वह मानो देखो, सूर्य का यात्री बन जाता है, मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा का यात्री बन जाता है,

और सूर्य के साथ में वह परिक्रमा बद्ध हो करके परिवर्तन हो जाता है। तो परन्तु यह आत्मा जब तक शरीर में विद्यमान है। वह पिता कहलाता है। वह पति बन जाता है। मानो देखो, वही आचार्य बन करके ब्रह्मचारी को शिक्षा देता है। और जब तक आत्मा वही ब्रह्मचारी आचार्य के चरणों में विद्यमान हैं, मुनिवरों! देखो, आत्मा यह अमृता कहलाता है। यह आत्मा ही तो अमृता है, जिसको मानव जिसके लिए प्रयास करता रहता है, तो विचार आता है कि अमृता को जाना है, अमृता ब्रह्मं आत्मा मेरे प्यारे! देखो, जो ब्रह्म आत्मा होती है। वही तो अमृत है, उसी को पान करना है, उसके प्रति हमें मानो देखो, इस शरीर का वह आत्मा है। वह बाल्य ब्रह्मचारियों का आत्मा है, वह माता ही तो आत्मा है, जब माता को अग्नि में दाह कर दिया जाता है। कुछ समय के पश्चात माता स्मरण नही आता, तो विचार आता है कि आत्मा जब तक विद्यमान है, वह माता है, वही पितर है, और मुनिवरों! देखो, वही आचार्य के रूप में विद्यमान हमें दृष्टिपात आता है। वही ब्रह्मचारी के रूप में है तो मानो देखो, इस प्रकार जो इसे जानता है, तो यह मुनिवरों! देखो, स्वाहाः कहलाता है, उसका नाम स्वाहाः है, जिसके न रहने से मानो देखो, मृतक है, शून्य है, अन्धकार है, और जिसके रहने से मानो देखो, सर्वत्र चहुं मुखी बना हुआ है, वह कहीं बेटा! वैज्ञानिक बना हुआ है, अन्तरिक्ष की यात्रा कर रहा है।

मेरे पुत्रों! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब महर्षि तत्त्व मुनि महाराज और ब्रह्मचारी श्वेत्ता श्वेतर और मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी रोहिणी केतु यज्ञदत यह चारों मानो देखो, ब्रह्मचारियों ने यज्ञ विज्ञानशाला में अपने में विद्यमान हो करके जब वह यत्र में रमण करने लगे, तो यत्र जब यहाँ से गमन किया अपने विद्यालय से तत्त्व मुनि के यहाँ से तो वह चन्द्रमा में प्रवेश कर गया, चन्द्रमा से उड़ान उड़ता है, तो बुद्ध में चला गया, और बुद्ध से उड़ान उड़ी तो मानो वह मंगल में प्रवेश कर गया, और मंगल से उड़ाने उड़ी तो वह स्वाति नक्षत्र में चला गया। जब वहाँ से उड़ान उड़ता है, तो कृतिका नक्षत्र में प्रवेश हो गया और जब कृतिका नक्षत्र से उड़ान उड़ता है, तो वही रोहिणी केतु मण्डल में प्रवेश हो गया, और जब वहाँ से उड़ान उड़ता है, तो वह मूल नक्षत्र में प्रवेश कर गया और मूल नक्षत्र से उड़ान उड़ता है, तो मानो देखो, वह अरूणधती मण्डल में चला गया अरूणधती मण्डल से उड़ान उड़ता है तो वशिष्ठ में चला गया तो विचार यह जब यह वशिष्ठ मण्डल से मानो देखो, अपने मार्ग को गमन कर रहे थे, तो यह मानं ब्रहे यह वशिष्ठ मण्डल में इन्होनें अपने यान को मानो वहाँ विश्राम कराया, और वहाँ के प्राणियों से वार्त्ता प्रगट की और प्राणी देखो, प्राणी उद्गीत गा रहे थे, स्वाहाः श्वंगतप प्रह्े स्वाहा तो उन्होंने कहा हे प्राणं ब्रहे यह तुम क्या उद्गीत गा रहे हो। उन्होंने कहा हम याग की अपनी वाणी को पवित्र बना रहे हैं क्योंकि वाणी जब भी पवित्र बनेगी, तो स्वाहा शब्दों से ऊँची बनेगी स्वहाः शब्दों से वाणी में तेज और ओज की उत्पति आयेगी। इसीलिए परमात्मा की उस ध्वनि में हम ध्वनित हो रहे हैं, जिस ध्वनि में ध्वनित हो करके हमारा अन्तरात्मा पवित्रता को प्राप्त हो जाता है, यह आत्मा की मानो देखो, यह आत्मा है, यह स्वाहा देखो, यज्ञ में जाओं तो यज्ञ की आत्मा है। यही स्वाहा शरीर में जाओगे। तो यह आत्मा रूप बन करके यह स्वाहाः ही आत्मा कहलाता है। यदि राष्ट्र में चले जाओ तो राष्ट्र में देखो, राष्ट्र का चरित्र ही स्वाहाः कहलाता है, और चरित्र यदि स्वाहा बन करके रहेगा, और यदि स्वाहाः चला जाता है, राष्ट्र से तो राष्ट्र का सार चला जाता है। इसी प्रकार देखो, प्रत्येक आभा में जब तुम दृष्टिपात करोगे तो यह मानो देखो, यज्ञमान का वह शब्द अपने में स्वाहाः है, जो द्यौ लोक में रमण कर रहा है, जो लोक-लोकान्तरों की प्रतिभा बना हुआ है, तो इसीलिए स्वाहाः के ऊपर अपने विचार होने चाहिए। मेरे प्यारे! यज्ञमान को स्वाहाः कहना चाहिए। परन्तु यज्ञमान को मन, कर्म, वचन एकाग्र हो करके यदि वह स्वाहा कहता है, तो उसके प्राणी की रक्षा। मेरे प्यारे! देखो, वह स्वाहाः करता रहता है, वह प्राणी नही उसका चला जाता, प्राण उसका बलवती हो जाता है, प्राण उसके साथ में गमन करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार वेद

के वांगमय में वेद के शब्दों में आता है, तो आज मैं बेटा! वेद के उन रहस्यों में उद्गीतता नही गाना चाहता हूँ। केवल यह क्या हम मुनिवरों! देखो, यज्ञ में स्वाहाः उच्चारण करें। यह स्वाहा की वाणीं ब्रहे यह वाणी ही तो स्वाहाः है, यह वाणी चली जाती है, तो मानो देखो, निर्द्वन्द हो जाता है, निध्वनित हो जाता है तो इसीलिए स्वाहा कह करके हमें हूत करना चाहिए। हमें मुनिवरों! देखो, स्वाहाः के ऊपर विचार-विनिमय मुझे स्मरण आता रहता है, मैं शिकामकेतु उद्दालक की चर्चा कर रहा था, जब रम्भेश्वरी ने यह कहा कि-प्रभु! यह स्वाहाः क्या है? उन्होंने कहा-देवी! यही तो आत्मा है, यही तो मानो देखो, अग्नि की आत्मा है जब अग्नि मानो देवताओं में देवताओं को चरू प्रदान कर देती है। जब देवताओं को साकल्य देती है, जब देवताओं को मानो देखो, यह हवि दे करके और मानो देखो, स्वतः प्रसन्न होती है। और प्रसन्न हो करके स्वतः हवि बन करके ज्ञान की हवि बन करके यह प्रकाश ही प्रकाश में ज्योति बन जाती है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब इस प्रकार ऋषि ने वेद के मन्त्र के वांगमय में इस प्रकार की चर्चाएं की तो उस समय अभ्यं ब्रह्मण ब्रहे देवत्वां वह अभ्यो ब्रहे मानो देखो, उसके चित्र आने लगे रम्भेश्वरी से बोले शिकामकेतु उद्दालक देखो, देवी यन्त्र है, और उन यन्त्रों में मानो देखो, चित्रवाली आ रही है, और वह चित्रावली देखो, उसमें रत्त हो रही है। हे देवी! तुम्हें यह प्रतीत है क्या मानो देखो, स्वाहाः कहने यह यन्त्र बन गया है, और यही स्वाहाः वाणी का एक शब्द ध्वनि बन करके मानो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके यही द्यौ को जाता है, और द्यौ से जब मानो देखो, यन्त्रों का निर्माण करते हैं, तो शब्द के आकार को शब्द में चित्र है, शब्द में मानो देखो, एक आकार और ध्वनियां हैं, मेरे प्यारे! देखो, चित्र और उनके क्रियाकलाप हमें दृष्टिपात आते रहते हैं, तो विचार-विनिमय क्या बेटा! विज्ञान अपने में बड़ा माधुर्य बन करके रहा है, विज्ञान अपने में विज्ञान रूप बन करके रहा है, तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, विशेषता में तो मैं तुम्हें ले जाऊंगा नही, केवल विचार-विनिमय यह मुनिवरों! देखो, स्वाहा याग की आत्मा है, यह यज्ञमान का आत्मा कहलाता है, यह परमाणुवाद को मानो देखो, अपने मैं निगलने वाला है, और यह अग्नि देवताओं का मुख रह करके मानो देखो, यह नाना प्रकार के याग को अपने में प्रकाश में लाता चला जाता है। जैसे अश्वमेध याग है अश्व के नाना स्वरूप माने गएं हैं। अजामेध याग है, तो अजामेध याग के भी भिन्न-भिन्न प्रकार के स्परूप माने गयें है, जैसे वाजपेयी अग्निष्टोम याग है। उसके भी भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं, मेरे प्यारे! देखो, यह ऋषियों की बड़ी एक महान उपलब्धि रही है। जिसके ऊपर हमें विचारना है अन्वेषण करना है जैसे देखो, एक मानव देखो, उद्गीत गा रहा है, वेदमन्त्रों का और प्रारम्भ में वह ओ३म् उच्चारण कर रहा है। अ उ और म मानो यह तीन अक्षर कहलाते हैं। तीनों धाराएं जब वह उनका उद्गीत गाता है, उसके पश्चात वह मन्त्र की मन्त्रणा करता है। वह वेदमन्त्रों का उद्गीत गाता है, और उद्गीत गाता हुआ मानो देखो, वह ओ३म् में पिरोया हुआ है। जैसे मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार के मनके होते हैं, और वह मनके मुनिवरों! देखो, एक सूत्र में पिरोए जाते हैं, तो वह माला बन जाती है। इसी प्रकार यह जो ब्रह्माण्ड है। यह माला के सदृश्य है, इसी प्रकार यह जो वेदमन्त्र है, यह माला के सदृश्य हैं, मानो देखो, ओ३म् रूपी सूत्र में ओ३म् रूपी धागें में यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड का एक-एक वेदमन्त्र वेदों का पिरोया हुआ है, और उसकी माला बन जाती है। इसी प्रकार देखो, वही कही ज्ञान काण्ड रूपी माला है। कहीं कर्म काण्ड रूपी माला है। कही ज्ञान माला है, तो यह मुनिवरों! देखो, यह त्रिवर्धा बन जाती है, यह त्रि विद्या कहलाती है। ज्ञान, कर्म और उपासना इसकी माला बन करके वह ओ३म् रूप सूत्र में पिरोई जाती है। इसी से जो उद्गाता उद्गीत गाता है। यज्ञशाला में उद्गीत गा रहा है, उदगान गा रहा है, वेदमन्त्रों की ध्वनि के सहित वह ओ३म् का उच्चारण पूर्व करता है। क्योंकि जितना भी एक-एक अक्षर है, वेदमन्त्र में वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया जाता है, इसी प्रकार जितना भी संसार का ज्ञान है अथवा विज्ञान है कर्मकाण्ड है, वह सब मानो ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है, मेरे प्यारे! जैसे नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर

हैं, एक मानो जैसे यह पृथ्वी है इस पृथ्वी का जो सूत्र हैं। मुनिवरों! देखो, वह सूत्र सूर्य है, और सूर्यों का जो सूत्र है। वह बृहस्पति है, और बृहस्पति का जो सूत्र है, वह आरुणि मण्डल है, और आरुणि मण्डलों का जो सूत्र है, मेरे प्यारे! वह ध्रुव कहलाता है, और ध्रुव का जो सूत्र है, वह पुष्प नक्षत्र है, और पुष्प नक्षत्रों का जो ध्रुव है। वह स्वाति नक्षत्र है, और वह स्वाति नक्षत्र को एक जो मानो सूत्र है वह मूल नक्षत्र कहलाता है। और मुनिवरों! मूल नक्षत्रों की जो माला मूल नक्षत्र इसमें पिरोऐ जाते हैं, वह श्वेणकेतु मण्डल मानो उसका सूत्र बना हुआ है, और श्वेणकेतु जो मण्डल है उसका जो सूत्र है मानो देखो, वह अचंग वृत्तिका मण्डल कहलाए जाता है, और अचंग वृत्तिका मण्डल का जो सूत्र है, वह गन्धर्व कहलाता है और गन्धर्व मण्डल का जो सूत्र है मेरे प्यारे! देखो, वह इन्द्र कहलाता है और इन्द्र का जो सूत्र है वह प्रजापति कहलाता है, और प्रजापति का जो सूत्र है, मुनिवरों! देखो, वह याग कहलाता है। मेरे प्यारे! सूत्रों में सूत्र बनते चले गएं और जब इनका जो हम सूत्र हम स्वीकार करेंगे, या इनके ऊपर जो अन्वेषण होगा तो बेटा! देखो, यह जो नाना प्रकार का जो सौर मण्डल है, और इन सौरमण्डलों का एक सूत्र बन करके बेटा! एक माला बन गई है। और भिन्न-भिन्न प्रकार की माला तुम्हें दृष्टिपात आयेगी और वही माला मेरे पुत्रों! जब अग्रणीय बनेगी तो वही मुनिवरों! देखो, मानं ब्रह्मे कृतं देवाः वह आकाश गंगा मेरे प्यारे! एक आकाश गंगा जिसकी माला बन जाएगी और सहस्रों क्या मुनिवरों! देखो, अरबों खरबों जब एक सूत्र में पिरोया जाता है। तो उसका सूत्र मुनिवरों! देखो, वह निहारिका बनेगी, और निहारिकाओं को मुनिवरों! पौने दो अरब लगभग अमृते देखो, पौने दो अरब देखो, एक निहारिकाओं की बेटा! एक मानो अवन्तिका बन करके मुनिवरों! देखो, नेति-नेति कह करके ऋषि मौन हो जाता है। तो विचार आता रहता है बेटा! मैं बहुत दुरी चला गया हूँ, गम्भीर क्षेत्रो में चला गया हूँ, विचार-विनिमय क्या यदि एक दूसरा अपने सूत्र को अपने में धारण कर ले तो बेटा! यह संसार विकृत बन जाएगा यह संसार मानो देखो, ब्रहित बन जाएगा इसी प्रकार यह ब्रह्मसूत्र में पिरोया हुआ यह सर्वत्र जगत है, और ब्रह्म सूत्र मेरे प्यारे! देखो, यह आत्मां भूवर्णनं ब्रह्मा यह जो मानव के शरीर का या अथवा वेदमन्त्रों में ओ३म् ध्वनि आती है, और ओ३म् ध्वनि कह करके आगे वेद के मन्त्रों का शब्दों का मानो देखो, सजातीय शब्दों का उदगीत गाया जाता है। तो मुनिवरों! देखो, वह पवित्र सूत्र बन करे मुनिवरों! देखो, उसमें क्या वेद प्रत्येक वेदमन्त्र और वेदमन्त्रों में जो ज्ञान है विज्ञान है कर्म काण्ड है मानवीयत है। वह भी बेटा! सब उसमें पिरोई जाती है। तो बेटा! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा नही प्रगट करूंगा विचार-विनिमय क्या मैं तो वन में चला गया हूँ। यह तो विचारों का वन है, मेरे प्यारे! इसीलिए मैं उच्चारण कर रहा हूँ कि स्वाहाः बेटा! ब्रह्मे यज्ञ की आत्मा है मानो देखो, यज्ञं ब्रह्म स्वाहाः का अर्थ है, स्वाहाः मां ब्रहे कृतं मैं आवरणं ब्रहे मैं यहाँ विद्यमान हूँ, तो यह इसका रूप बन करके मेरे प्यारे! देखो, जो स्वाहाः कहता है, तो अग्नि में अपने विचारों को उसमें रत्त कर देता है अग्नि देवताओं का मुख है, जैसे साकल्य जाता है, वैसे ही स्वाहाः भी उसमें प्रवेश हो गया है, उस अग्नि में स्वाहाः को ले करके बेटा! द्यौ लोक में पंहुचा दिया है द्यौ मण्डल में प्रवेश कर दिया है। वह उसके क्रियाकलाप और उसका मंगलं मानो उसका शब्द और उसका आकार द्यौ में प्रवेश हो जाता है। वह निहित रहता है। जब मानव अपने में उसे धारण कर लेता है, उसी को वह प्राप्त हो जाता है तो आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नही हूँ संक्षिप्त विचार देने चला आता हूँ। वह विचार क्या है क्या मैं परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए हम सागर से पार होने वाले बनें और स्वाहाः कह करके अपने मन कर्म और वचन के द्वारा द्यौ में अपने को पंहुचायें यही बेटा! देखो, आज का हमारा वाक् अब मैं इन वाक्यों को समाप्त कर रहा हूँ। आज के विचारों का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा का जो ब्रह्माण्ड है। परमात्मा का जो जगत है, मानो देखो, उसे हम अनुसन्धान युक्त हो करके उसे जानना चाहिए मेरे प्यारे! प्रत्येक रूप में

महाराजा रघु का याग

अपने को जानना चाहिए अपने को अपने में ही निहित कर देना चाहिए। यही बेटा! आज के विचारों का आश्रय है, वास्तव में मैं देवता ब्रह्मणे स्वाहाः की वार्त्ता तो मैं किसी काल में ही प्रगट करूंगा। अपने विचारों को पूर्ण रूपेण नही कर सका हूँ, समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मना गायन्त्वा ऋषि वाचन्नमाः वायु रथं आ पाहां। ओ३म् अग्नं ब्रीहि तत्त्वा रथं आ पा रेवा।

२ स्वाहा १२ ०४ १९९१

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रां का पठन-पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है, और याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है, और वह प्रायः उसी में वास कर रहा है। तो इसीलिए हमारा वेद का मन्त्र उस परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन कर रहा है, क्योंकि वह स्वतः यज्ञोमयी सर्वत्रता में रमण करने वाले हैं, और वह यज्ञोमयी भवन ब्रहे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी कहलाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, सृष्टि के प्रारम्भ में जब परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया, तो याग को उन्होंने मानो आध्यात्मिक और भौतिकवाद से दोनो में कटिबद्ध कर दिया। क्योंकि याग अपने में भौतिकवाद भी इसमें निहित रहता है। और आध्यात्मिकवादी प्राणी इसका अनुसरण करते रहे हैं। और ये उद्गीत गाते रहते हैं क्या वह ब्रह्मणे व्रतं देवतवा ब्रहे मानो वह यज्ञोमयी स्वरूप परमपिता होने से इस दोनो प्रकार के विज्ञान को उन्होंने एक सूत्र में सूत्रित किया है। क्योंकि याग हमें आध्यात्मिकवाद में और भौतिकवाद में भी प्रवेश करा रहा है, इसीलिए दोनो स्वरूपों को हमें जानना चाहिए क्योंकि सृष्टि के पिता ने इस संसार रूपी यज्ञशाला का जब सृजन किया तो बेटा! वे परमपिता परमात्मा स्वयं ब्रह्मा बने और यज्ञमान स्वतः आत्मा बनी और यह जो पंच महाभूत हैं, कोई इनमें से उद्गीत गाने वाला वायु उद्गीत गाता है, और कोई मानो देखो, इन्हीं में से अध्वर्यु मानो अग्नि और प्रथम ब्रह्वा यह पृथ्वी अध्वर्यु कहलाती है। कोई उनमें से मानो देखो, प्राण वर्धक कर्त्ता और होता बन करके अपना याग प्रारम्भ हो जाता है, तो यह संसार रूपी यज्ञशाला जिसमें आत्मा यज्ञमान है। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा है, और वायु उद्गीत गा रही है, अग्नि और यह देखो, यह आपोमयी होता बन करके हूत करे रहे हैं। तो बेटा! यह परमपिता परमात्मा का कैसा अनूठा जगत है, कैसी इसमें महानता का दर्शन होता रहता है। परन्तु ऋषि-मुनियों ने और वैदिक मन्त्रों ने बेटा! इसको आध्यात्मिकवाद से भी कटिबद्ध किया क्या मुनिवरों! देखो, आध्यात्मिकवादी ब्रह्माण्ड और पिण्ड की परम्परागतों से कल्पना करते रहे हैं। और यह उद्गीत गाते रहे हैं, ब्रह्माण्डे सो पिण्डे, पिण्डे सो ब्रह्माण्डे मानो पिण्ड में जो क्रियाकलाप हो रहा है, वह ब्रह्माण्ड में हैं, और जो ब्रह्माण्ड में हो रहा है वह मेरे पुत्रों! पिण्ड में निहित रहता है। तो एक दूसरे से कटिबद्ध होने वाला, यह प्रायः देखो, यज्ञशाला के रूप में परमात्मा का अनुपम जगत प्रायः हमें दृष्टिपात आता रहता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र क्या कह रहा है वेद का मन्त्र कहता है वर्णनं ब्रह्वा व्रतं देवतवां यज्ञनं ब्रह्मे यज्ञनं आत्मां भू वर्णनं वेद का वाक् कहता है कि आत्मा ही ब्रह्म और आत्मा ही वरुण है परन्तु स्वतः आत्म ब्रह्वे आत्मा की प्रतिभा में मानव सदैव रत्त रहता है। तो उस आत्मा को हम अपने में जानने का प्रयास करें, तो आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सन्दर्भ में तुम्हें विशेष नही ले जा रहा हूँ, आज मैं बेटा! उन्हीं पुनरूक्ति विचारों में ले जाना चाहता हूँ, जिन विचारों में नैतिक वाद की शिक्षा का व्यवधान आता है। मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आता रहा है, यह वाक् मुझे बड़े प्रिय लगते हैं। याग के सम्बन्ध में यों तो याग के ऊपर यदि विवेचना दी जाए, तो समय-समय की आभा में मानव रत्त होता रहता है, और उसका अन्तिम छोर नही प्राप्त होगा, परन्तु यह कि केवल आज मैं तुम्हें नैतिकवाद की शिक्षा और नैतिकवाद में ले जाना चाहता हूँ। जिसकी कल्पना विचित्र अपनी ध्वनित होते हुए, ध्वनि में परिणत की है, क्योंकि एक वाक् पुनरूक्ति में परिणत होता है। तो उसमें रहस्यतम होते हैं और उन्हीं

रहस्यों को हमें उद्गीत गाना चाहिए। आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें याज्ञवल्क्य मुनि के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान हैं, और प्रातःकालीन बेटा! देखो, वह नैतिक शिक्षा देते रहते ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हैं, और ब्रह्मचारियों को याग की महिमा का वर्णन कर रहे थे। उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारियों! न्यौदा मे वेदमन्त्र मानो याग के ऊपर अपनी विवेचना दे रहे हैं, याग का अपने में वृत कर रहे हैं।

आओ, मैं तुम्हें उस विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ, मुनिवरों! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज यज्ञशाला पर विद्यमान हो करके अपना उपदेश अपनी उपदेश मंजरी प्रारम्भ कर रहे हैं। ब्रह्मचारी उसे अपने में श्रवण कर रहे हैं, परन्तु देखो, उनके वर्णसुतं आचार्य ने कहा कि हे ब्रह्मचारियों! तुमने जान लिया कि संसार नैतिकता में रमण करता है। राष्ट्र अपने में जब नैतिकवाद में परिणत हो जाता है, तो राष्ट्र ऊँचा बन जाता है, मानव जब नैतिकवादी बन जाता है। तो उसका जो मन, कर्म, वचन है, जो शरीर है, वह सर्वत्र एक सूत्र में पिरोया जाता है और वह एक उदय होने वाला जैसे एक सूर्य है, ऐसे एक मानव को प्रकाश में ले जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि इस प्रकार वर्णन करने लगे तो उनकी वर्णन शैली बड़ी विचित्र रही है। ब्रह्मणे लोकां ब्रह्मणे वाचसुतप्रह्वा लोकां मानो देखो, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों को जानने वाला बन जाता है। जो मानव इस प्रकार याग के कर्म काण्डों को अंगो और उपांगो से जानता है। तो मेरे प्यारे! अमृतं जब वह उपदेश दे रहे थे याज्ञवल्क्य तो मेरे प्यारे! उनमें से एक ब्रह्मचारी यज्ञदत नाम के उपस्थित हुए, और यज्ञदत ने कहा हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ क्या जब आप प्रातःकालीन उपस्थित होते हैं। तो उस समय देखो, याग हूत करने के पश्चात तू हूत के ही सम्बन्ध में अपने उदगार देते रहते है। हे प्रभु! यह उदगार तो प्रत्येक ऋषि के आश्रम में दिए जाते हैं, आप विशेषकर देते हैं, मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा हाँ तो अमृतं वह ऋषि से बोले कि-प्रभु! हम सब देखो, यह ब्रह्मचारी हैं, और ब्रह्म में विचरण करने की हमारी सदैव प्रवृत्ति बनी रहती है। तो उसको हम बना जब ही सकते हैं, जब हमारा आध्यात्मिकवाद ऊँचा हो और भौतिक विज्ञान उसके अन्तर्गत मानो गमन करने वाला हो तो हे प्रभु! हम न्यौदा में वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते रहे। तो उन्होने कहा कि-प्रभु! हमारी इच्छा यह है कि आप याग के सम्बन्ध में आपका बड़ा अध्ययन है, आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों का समन्वय कर देते हो तो हे प्रभु! मेरी एक इच्छा है। आज जो हम तुमसे प्रश्न करने लगे जिज्ञासा ले करके आए क्या हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हैं। होतागण अध्वर्यु और ब्रहे उद्गीत गाने वाले सब मानो देखो, यज्ञशाला में उपस्थित हैं, हे प्रभु! हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा याग तुम्हें करना है, तो होता गण होने चाहिए, और देखो, अध्वर्यु उद्गाता और यज्ञमान और अमृतां मानो यह सर्वत्रतव होना चाहिए। उद्गाता अपना उद्गीत गा रहा है, अध्वर्यु द्रव्य का स्वामी है, उद्गाता अपनें में वेदमन्त्रों का उद्गीत गा रहा है, और मानव अपने में इनका निरीक्षण कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा इस प्रकार यज्ञशाला नाना प्रकार के कोणों वाली होनी चाहिए। सबसे उत्तम यज्ञशाला है, जो वह चतुष स्तम्भ कहलाती है। द्वितीय जो यज्ञशाला है, वह मानो अपनें में त्रिकोण कहलाती है। और पंचम कोण का भी वर्णन प्रायः आता रहा है, इस प्रकार देखो, यज्ञमान जब याग करने लगे, तो समिधा और यज्ञशाला सुन्दर बननी चाहिएं। मानो यज्ञशाला द्वि कोण, त्रि कोण, चतुष कोण और नवम कोण तक की मानो देखो, उसमें विधान आया है, उसमें यज्ञमान जब याग करता है। तो इस संसार के एक लोक को विजय कर लेता है। वह एक राष्ट्र का जो भाग है, लोकप्रियता उसे अपने में वह धारण कर लेता है। तो इसीलिए देखो, जिसको याग करना चाहिए, वह याग करे बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और ब्रह्मचारी जन अपने में याज्ञिक बन करके याग करने लगे। यागां भवितं ब्रह्मणा यागां रूद्र वास्त मानो देखो, वह याग अपने में याग करते रहे मेरे

महाराजा रघु का याग

पुत्रों! याग बड़े भव्यता में परिणत होता रहा है।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, मैं दूरी नही जाना चाहता हूँ, केवल तुम्हें अपने उदगार देने के लिए आया हूँ, उदगार क्या कहते हैं? मेरे प्यारे! यज्ञदत ने कहा-प्रभु! धन्य है, उन्होंने कहा कि यज्ञशाला में जो साकल्य होता है, अथवा चरू होता है, वह चार प्रकार का होता है, उसमें मधुपन माधुर्यतं पौष्टि वर्धक और सुगन्धित मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार का साकल्य होना चाहिए। जब वह साकल्य उसमें अपने पौष्टिकता है, और उसी में मानो देखो, वृहीत कहलाती है। मानो देखो, पौष्टिकता है, सुगन्धित है, और रोगनाशक है, यह चार प्रकार की औषधियों का अवृत होता रहता है, और उसको अग्नि के मुखारबिन्दु में परिणत करते हैं, तो अग्नि देवताओ का मुख होने से देवता अपने में धारण कर रहे हैं। देवतव को अपने में प्राप्त कर रहे हैं, तो इस प्रकार तुम्हारी यज्ञशाला उसमें याग होना चाहिए। यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले कि हे प्रभु! कहीं मानो यह सुविधा प्राप्त हमें हो नही पाती और हमें याग करना है, तो याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि तुम्हें कोई सुविधा नहीं प्राप्त हो रही है, और याज्ञिक तुम बन गएं हो, और याज्ञिक तुम्हें और बनना है, तो तुम्हारा अमृतं जब देखो, यह सब सुविधा न हो तो अग्नि और समिधा के द्वारा दोनों के द्वारा यज्ञमान याग करें, और कहे कि उसमे क्या कहना है, जब समिधा को ले करके मानो समिधा ही तो ईन्धन है, और वह ईन्धन को ही मुनिवरों! देखो, अग्नि कहते हैं, उन्होंने सबसे प्रथम कहा प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, समानाय, उदानाय स्वाहाः कह करके हूत करना चाहिए। यह आहुति देनी चाहिएं, और स्वाहाः कह करके ही हूत करना चाहिए मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने समिधा के प्रति ऐसा कहा क्या अग्नि प्रचण्ड है, वह समिधा उसका ईन्धन है, जैसे मानव के देखो, आत्मवेत्ता का जो ईन्धन है। वह ज्ञान होता है, विद्यालय में मानो ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहा है। उसका जो मानो देखो, ईन्धन है, वह उसका ज्ञान है, और उसमें क्रियात्मक जीवन की धाराएं विद्यमान रहती हैं, जब मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि अमृतं ब्रह्मा वर्णं सुते इस प्रकार का वर्णन किया तो वह बड़े प्रसन्न युक्त हो गएं, परन्तु पुनः अपने में पुनवृत्ति लोकां वसुतं ब्रह्वे कृणा वेद के आचार्य एक-एक शब्द को मूलकता में स्वीकार करते हैं, यज्ञदत ने कहा हे प्रभु! कहीं ऐसा हो क्या यह अग्नि और समिधा भी प्राप्त न हो, तो याज्ञिक याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि यह सुविधा न प्राप्त हों तो तुम मानो साकल्य के द्वारा और देखो, अग्नि अमृतं अग्नि ब्रहा यह जो अग्नि यह देवताओं का मुख है, तुम अग्नि को स्वीकार करते हुए मानो देखो, याग में परिणत हो जाओ। यागां भवि वर्णो व्रतं मेरे पुत्रों! वह अपने में ही विचारता रहता है, जब यह अपने में देखो, प्रश्न और उत्तरावली के रूप में प्रत्येक प्राणी को जिज्ञासा बनी रहती है। वह जिज्ञासु बन करके सागर से पार होता है, तो मेरे प्यारे! वही जिज्ञासु बन करके ऋषि ने कहा-प्रभु! ब्रह्मणे यज्ञदत ने कहा भगवन! मानो देखो, यदि तुम्हारें द्वारा अग्नि और साकल्य नहीं है, तो तुम मानो देखो, जल की अंजलि ले लो, और जल की अंजलि से तुम मानो कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः, कह करके तुम हूत करो यह तुम्हारा नृत्त होना चाहिए ऋषिपर हे ब्रह्मचरिष्यामि सते व्रत्यं ब्रह्मा आकृतं देवतं ब्रहे वृता यज्ञदत ने कहा-प्रभु! आपको धन्य है। हे भगवन! मैं यह और जानना चाहता हूँ, कहीं मानो यह भी हमें कहीं प्राप्त न हो देखो, जल भी नही हैं, तो हम याग कैसे करें? उसे अंजलि से बारह व्रते उन्होंने कहा यदि तुम्हारे द्वारा जल नही हैं, और तुम्हें याग करना है मानो देखो, तुम पृथ्वी के साकल्यों को लो पृथ्वी की रज को ले करके और तुम प्राणाय, अपानाय, उदानाय, समानाय, व्यानाय इस प्रकार का उद्गीत गा करके तुम हूत करने लगो मेरे प्यारे! देखो, प्राणों को तम्हें प्रसन्न करना है, प्राणों से हमें कुछ प्राप्त करना है। मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया उन्होंने कहा यज्ञदत से ब्रहा हे ब्रह्मचरिष्यामि कही मानो यह जो पृथ्वी है, यह रज रूप में रहती है, यह पिण्ड बनाती है, यह पिण्डों का प्रतिनिधि है। और यह जल मानो देखो, जल ही इसमें मिलन करके नाना प्रकार के पिण्ड बनाता है, मैंने इससे पूर्व काल

में बेटा! तुम्हें पिण्डों की चर्चाएं की और यह ब्रह्माण्ड जितना भी दृष्टिपात आ रहा है। पिण्ड के रूप में वह पिण्डाकार करने वाला ही मानो देखो, यह गुरूतव कहलाता है, यह पृथ्वीतव कहलाता है। यह पृथ्वी अपने को ब्रह्माण्डित रचित करने लगती है। तो मानो देखो, जब इस प्रकार प्रसन्न किया उन्होंने अप्रते अपने में अवृत्तियों में रत्त रहने के लिए तत्पर हुए। तो मेरे प्यारे! वह यज्ञदत ब्रह्मचारी कहते हैं, कहीं प्रभु! रज भी न प्राप्त हो मानो कहीं आपां वर्णनं ब्रहे उन्होंने कहा आपो को ले करके तुम याग करो, उन्होंने कहा आपां भू वर्णनं व्रते मानो यही तो आपा कहलाती है। जिसके द्वारा हम याग करते हैं, हम जब माता के गर्भस्थल में होते हैं, हम जैसे शिशु तो हम एक बिन्दु में होते हैं, जिस बिन्दु में भी शिशु बन करके मानो देखो, उसमें माता के गर्भ में विद्यमान हो जाते हैं। तो माता मानो उसका पालन कर रही है। माता अपने में ओजस बना रही है, और देखो, जल ही उसका आसन बना रहता है, जल ही उसका ओढ़न है, और पांशे भी जल ही मानो हैं, जिसमें वह माता के गर्भ में वास करके अपने को पनपा रहा है। मेरे प्यारे! प्रभु का विज्ञान कितना नितान्तर कितना अनुपम हैं। तो विचार आता रहता है कि यह नाना प्रकार की जो धाराएं हैं, यही तो याग में परिणत कराने वाली हैं। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सन्दर्भ में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, विचार केवल यह कि ऋषि कहता है, क्या प्रथम ब्रह्मे आपां देवाः यह आपो ही तो ज्योति है। आपो ही तो मानो देखो, आपो कहलाता है, इस आपो के गर्भ में सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान की धाराएं ओत-प्रोत रहती हैं। यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले कि कही भगवन! हमें यह जल भी प्राप्त न हो, और हम मानो देखो, रेवो कंगलं हम रज की ही धारा में चले जाएं, और रज हमें प्राप्त नही हो रहा है। उस रूप में तो मानो हम क्या करें, उन्होंने कहा यदि तुम्हारे द्वारा यह अमृतं यह आपो भी नही है। तो मानो देखो, पृथ्वी की रज को लो और पृथ्वी की रज भी नही है। तो उस समय तुम अपने में रजनं ब्रह्वे देखो, पृथ्वी की रज को ले करके और उससे तुम आहुति दो और वह पिण्डों आकार बनाने वाला मानो देखो, पिण्डों के रूप में पिण्ड दृष्टिपात आते रहें है इस प्रकार तुम याज्ञिक बनों यागाम देखो, ब्रह्मणे देखो, यदि यह कोई सुविधा न प्राप्त न हो। तो हम याग कैसे करें? तो यज्ञदत ने कहा यदि मानो देखो, अग्नि भी न हो चरू भी न हो, तो तुम अग्न्याध्यान करके याग करो, अग्न्याधान भी इस प्रकार में न हो तो तुम मानो देखो, जल के परमाणुओं को जल ले करके याग करो और कही जल भी प्राप्त न हो, तो पृथ्वी की रज को लो और कही रज भी प्राप्त न हो, तो आपो को लो मेरे प्यारे! कही आपो भी न हो तो मानो देखो, शून्यवत हो करके तुम मानो देखो, अपने मन, कर्म, वचन को एकाग्र करके तुम वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते रहो और वेदमन्त्रों का उद्गीत गा करके कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः मानो इस प्रकार तुम उद्गीत गाने वाले बनों, क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र मानो ओ३म् रूपी सूत्र से पिरोया हुआ है। उस सूत्र के ऊपर हमें विचार-विनिमय करना बहुत अनिवार्य है, तो मेरे प्यारे! देखो, यह विचार आते ही मानवीयतव मे एक महानता का दर्शन हो रहा है। तो आओ, मेरे प्यारे! विचार आता है वेद का ब्रह्मचारी कहता है, प्रभु! कही मानो देखो, कोई भी सुविधा जल की भी सुविधा मानो देखो, यह आपोमयी है, पृथ्वी के रज हैं, गुरूतव है। यह भी न हो तो मानो हम कैसे याग करें? मानो उस समय तुम मन कर्म और वचन एकाग्र करके और वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते रहो, प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः कह करके तुम हूत करने लगो तुम्हारा कल्याण हो जाएगा। तो मेरे प्यारे! इस प्रकार विचार देता हुआ ऋषि अपने में शान्त हो गया, अपने में विचार-विनिमय करता हुआ अपने में अपनेपन को धारण कर रहा है। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा नही दूंगा विचा-विनिमय केवल यह कि हम अपने में अपने अपनेपन को ही धारण अपने को करते रहें। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ब्रह्मचारी को यह उत्तर दिया तो ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! मैं निरूतर हो गया हूँ, मानो देखो, वह भी एक याग है, तो याग ही एक ब्रह्माण्ड है। यागों में परिणत होने वाला प्रत्येक मानव सुचिन्तक बन

जाता है। जिस काल में देखो, सर्वत्र समाज शुभचिन्तक बन जाता है, वह मानव अपने में अपनेपन को धारण करता हुआ, अमृतमयी को पान कर लेता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया तो वह ब्रह्मचारी अपने में मौन हो गएं, उन्होंने कहा आपं ब्रहे माता के गर्भस्थल में ही निर्माण होता है। वही उत्पति का मूल रहता है, तो इसीलिए यह दोनों प्रियतम अपने में मग्न हो रहे हैं। तो विचार आता रहता है एक दूसरे में पिरोया हुआ जगत एक दूसरे में वृत्तियों में रत्त रहने वाला जगत ही तो मानव को ऊँचा बनाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय क्या हम अपने में याज्ञिक बनें, और याग में ही परिणत हो करके अपने जीवन को उदबुद्ध करने वाले हों, अपने जीवन में एक महानता की प्रियता होनी चाहिए। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेषता में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ। तुम्हें केवल मैंने संक्षिप्त परिचय दिया है, और उस परिचय के ऊपर तुम्हें विचार-विनिमय करना चाहिए, आओ, बेटा! देखो, विचार क्या वेद का ऋषि कहता है मनों से मन्त्रों का उद्गीत गाओं जिससे वायुमण्डल पवित्र हो जाएं, तुम अपने में याज्ञिक बन करके देखो, जल की अंजलि से याग करो जिससे परमाणुवाद दूषित न हो करके पवित्र वेदी पर रत्त हो जाएं। तुम पृथ्वी की रज को ले करे गुरूतव भाव को ले करके तुम याग करो तो मानो देखो, वह जो गुरूतव भाव है। वह तुम्हारा मनोनीत पवित्र बन जाएगा, इसी प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया तो वह अपने में मौन होने लगे जब अपने में मौन हो गएं तो अपने में शान्ति की स्थापना हो गई, तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तो दूंगा नहीं केवल विचार-विनिमय यह कि माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु होते हैं। तो उस समय मानो आपो ही तो हमें धारण कर रहा है, और वह सूर्य की किरण ही तो हमें तपायमान कर रही हैं, हम स्वयं तपायमान बन करके सागर से पार होने का प्रयास करें। आओ, बेटा! देखो, हमारा वाक् क्या कह रहा है यं ब्रह्नो सम्भवा यं रथं ब्रह्ने कृतं देवतवं लोकाः मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार जब मानव के उदगार एक उद्गीत में परिवर्तित होते हैं। तो उस समय उसकी भी मनोनीत धारा एक विचित्र बन सकती है।

तो आओ, मेरे प्यारे! इस सन्दर्भ में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, विचार-विनिमय केवल यह क्या मुनिवरों! देखो, हमारा जीवन याज्ञिक होना चाहिए हमारे जीवन में याग क्योंकि याग के बहुत पर्यायवाची शब्द हैं, सुकामना देना और मानो उसमें मौन रह करके उसको जानने का नाम याग है, वह कुशलता से जाना जाता है, अपने में अपनेपन को ध्यानावस्थित हो करके जाना जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का यह विचार क्या कह रहा है। क्या यज्ञं भवित ब्रह्मणा अपने में याग के ऊपर देखो, विचार-विनिमय देना और विचारार्थ रहना और अपने जीवन को महान महानता में रमण करना और कराना और उसका जीवन माना गया है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, विचार अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः- मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे और वह कल्पना केवल क्या है, क्या याग देखो, भिन्न-भिन्न रूपों से याग किया जाता है। सबसे प्रथम अग्न्याध्यान यज्ञशाला के द्वारा द्वितीय जो व्यवधान है, वह अग्नि और समिधा के द्वारा तीसरा जो व्यवधान है, वह देखो, जलं ब्रहे जल की अंजलि और चतुर्थ जो धारा है। वह अग्नि की धाराओं में क्या वह आपोमयी धारा में रमण कराना, और जब आपो भी ऊर्ध्वा में गमन करने लगती है। आपों ज्योति आपों रूद्रो आपां देवतवं ब्रह्वा वह मानो देखो, आपा में रत्त हो करके और आपा भी अमृतो को प्राप्त हो जाती है। तो बेटा! अपने ज्ञान की संकल्प रज के द्वारा अपनी अन्तरात्मा को ही अन्तरात्मा में दृष्टिपात करें, वही तुम्हारा जीवन है, वही तुम्हारी धारा है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह विचार क्या कह रहा है, कि हम उन धाराओं में रहने के लिए तत्पर हो जाएं। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी प्रगट करा रहे थे, मैं अपने विचारों में

कोई विशेष नहीं दूंगा, क्योंकि मेरा जो अन्तरात्मा है, वह यज्ञमान के साथ रहता है, और मैं यह कहता रहता हूँ, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। तेरा अन्तरात्मा सदैव अन्तरात्मा में सदैव गमन करने वाला हो, इस प्रकार मानं ब्रह्रे मैं अपने पूज्यपाद गुरुदवे से वर्णन कराता रहता हूँ। क्या वह यज्ञमान मेरी दृष्टि में बड़ा सौभाग्यशाली जिसके गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता हो और द्रव्य अपनी आभा में रत्त रहने वाला हो, क्योंकि द्रव्य का यदि सदुपयोग करोगे, वह तुम्हारे द्वार से नही जाएगा, और यदि द्रव्य का दुरूपयोग करोगे तो द्रव्य तुमसे चला जाएगा। तुम मानो देखो, निर द्रव्य बन करके अपने में एक चिन्ता की आहुति का निर्माण करते रहें। तो इस प्रकारं ब्रहे कृतं मानो देखो, मेरी ये कामना रहती है कि तुम्हारा जीवन, सदैव महानता की वेदी पर रमण करता रहे, तो मेरे अमृतां मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी अभी देखो, गागर में सागर की कल्पना की है। और जितने भी सुक्रियाकलाप हैं उन सर्वत्र का नाम एक यज्ञमयी स्वरूप माना गया है। हम याज्ञिक बनें और अपने गृह में द्रव्य का सदुपयोग करें, और अग्नि में हूत करें, क्योंकि अग्नि देवताओं का दूत मेरे पूज्यपाद ने वर्णन कराया। तो मानो देखो, उस दूत को अपने में धारण करते हुए, दूतं ब्रह्मा वह दूत ब्रह्मा है और ब्रह्मा वर्णे मैं अपने को धारण करता रहा हूँ। तो मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन करा रहा हूँ, आधुनिक काल के राष्ट्रवाद की मैं चर्चा नही प्रगट करूंगा। क्योंकि राष्ट्र कुछ है नही, राष्ट्र में विभृत्तियां हैं, परन्तु उस राजा की आभा द्वितीय रूपों में रमण करती रही है।

तो आओ, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन करा रहा हूँ क्या आधुनिक काल में मानो देखो, अमृतं राष्ट्रवाद नही है, परन्तु गतिवान है, राजं ब्रह्रे कृतं देवाः अश्वमेध याग नही है, परन्तु देखो, वह विकृत रूप में दृष्टिपात आता है। इसी प्रकार मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को उद्गीत गा रहा हूँ। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, तेरे जीवन की पवित्र धारा मानवीयता में सदैव निहित रहे मानवीय धारा तेरी महानता में रमण करनी चाहिए। तो आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, विचार केवल यह कि मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आराधना करता रहता हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना करते रहते हैं, गागर को सागर में भरण करते रहते हैं, या सागर को गागर में मानो निहित कराते रहते हैं। तो इसी प्रकार मानो देखो, जब मैं यागों के कर्म काण्ड में जाना चाहता हूँ। तो कर्म काण्ड अपनी आभा में बड़ा विचित्र बन करके रहा है, यह कर्मकाण्ड ही मानव को ऊँचा बनाता है। कर्मकाण्ड ही मानो देखो, ज्ञान और प्रकाश की कुंजी कहलाता है। तो इस प्रकार मेरी देखो, यह मनोनीत भावना रहती है, क्या यज्ञमान का जीवन ऊँचा बना रहे, और ग्रह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, अथवा यह क्रियाकलाप पवित्र बना रहे। तो ऐसी मेरी धारणा रहती है ऐसी मेरी कामना रहती है। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा, क्योंकि मुझे राष्ट्र के ऊपर कोई विचार नही देना है, आधुनिक काल का विचार नही देना हैं। क्योंकि यह तो परम्परागतों से अपनी-अपनी आभा में रमण करता रहा है। उसमें अपनेपन का ध्यानावस्थित न हो करके द्वितीय मूलों में प्रवेश हो जाता है, तो यह आज का वाक् मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद गुरूदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे पूज्य ब्रहे मानो मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने विचार व्यक्त किए, इनके विचारों में एक महानता रही है, इनके विचारों में एक उदगार ऐसे विचित्र बन गएं हैं कि वह प्रायः संसार का कल्याण चाहते हैं, और उनके हृदय में ये पिपासा है, क्या मेरा जीवन महान से महान बन करके सागर से पार हो जाएं, ऐसा मानो देखो, कल्पना करते हुए, यह अपने में अपनेपन के विचार देते रहते हैं। तो आज का हमारा ये विचार क्या कह रहा है, हमारे विचारों में सदैव ये रहा है कि देखो, जहाँ नैतिकता की वार्त्ता आती है, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपनी विवेचना दी है और हम भी प्रायः इसके ऊपर अपने विचार व्यक्त

करते रहते हैं, क्या देखो, हमारे यहाँ यज्ञ होने चाहिएं। नाना प्रकार के याग होने चाहिएं यागों का अभिप्रायः यह है कि जितने भी सुकर्म हैं सर्वत्र का नाम याग माना गया है। इसीलिए मानव में अपने मनों में वेदमन्त्रों का अध्ययन समय-सयम पर साकल्य और अग्नि के मुखारबिन्दु में देना यह भी समय-सयम पर होता रहा है। तो इस प्रकार विचार देना और महानन्द जी ने अपने सुन्दर विचार दिए अब इस विचारों के साथ हमारा यह वाक् समाप्त होने जा रहा है, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या मानव को अपने दार्शनिक रूपों में रत्त रहना चाहिए। परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, अपने में ही अपनेपन को शान्त कर देना है, तो यह आज का वाक् अब सम्पन्न होने जा रहा है। समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। अब वेदों का पठन-पाठन। के-३, लाजपत नगर। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मना प्राची रथं वायाः आभ्यां रथ मनो वाचन्न रथं देवा यम रथाः।

३ महाराज रघु का याग ०८ ०३ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमादी हैं और उसका जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि जो भी मानव उस देव की आराधना करता है अथवा उसके गुणां का गुणवादन करने लगता है और अपने को उस परमपिता परमात्मा की धरोहर स्वीकार करने लगता है, तो संसार के एक-एक कण-कण में वह ब्रह्म ही उसे दृष्टिपात आता रहता है। तो विचार आता है कि हम सदैव उस परमपिता परमात्मा को अपने में और उसका अनुपम यह जो ब्रह्माण्ड हैं चाहे वह जड़ रूप में है, चाहे चैतन्य रूप में हो मानो जड़ रूप में सर्वत्र देवताओं का व्यवधान हो रहा है, और चेतनता में जितना भी ज्ञान है अथवा विज्ञान है ज्ञान और विज्ञान की जो धाराएं हैं वह सब चैतन्य रूप में परिणत रही हैं, क्या वह ज्ञान उत्पति के रूप में हैं चाहे वह मननशील जो मनीषी कहलाते हैं, उनके हृदयों में ओत-प्रोत हो रहा है, यह सर्वत्र एक चेतना का स्रोत माना गया है। और जितना भी यह जड़ जगत है, चाहे वह सूर्य से ऊर्ज्वा मानो प्रकाश आ रहा है, वह द्यौ से प्रकाश ले रहा है। चाहे वह चन्द्रमा कान्ति बन करके कान्ति को अपने गर्भ में धारण कर रहा है, चाहे वह पृथ्वी के गर्भस्थल में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ मानो पनप रहा है, और जितना भी यह वायु गति कर रहा है, चाहे वह प्राण के रूप में है, चाहे वह मनस्तव के रूप में विद्यमान है। परन्तु वह जड़ जगत कहा जाता है। तो विचार आता है, क्या यह जितना भी चैतन्य और जड़ जगत है, इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड में हम उस परमपिता परमात्मा को हम दृष्टिपात करते रहें, और अपने में मानो याज्ञिक बनें रहें याज्ञिक का अभिप्रायः यह है कि हमारा जो मन मस्तिष्क है, और हृदय है, उन दोनो का मानो तीन मनके एक ही सूत्र में पिरोऐ हुए होने चाहिए और जब वह एक ही सूत्र के मनके होते हैं। तो सूत्र में पिरोय हुए होने से वह मानो देखो, यज्ञ में ही परिणत रहते हैं, उसको यागमय माना गया है। जैसे हमारे यहाँ याज्ञवल्क्य और भी नाना आचार्यों जनों ने अपना मन्तव्य दिया है, उन्होंने याग के ऊपर अपना बड़ा महत्व दिया है, मैं बेटा! याग के ऊपर अपना कुछ विचार देना नही चाहता हूँ। परन्तु हमारे ऋषि-मुनियों ने याग के ऊपर अपनी लेखनियाँ बद्ध की हैं, अथवा जितना भी उन्होंने नाना प्रकार की याग की प्रतिभा में याग को माना है, और अन्तिम चरण यह रहा है कि यह जितना भी जड़ और चैतन्य जगत है, यह सब याग रूप कहलाता है बेटा! देखो, उन्होंने अन्तिम चरण सीमा तक अपने वाक्यों को पंहुचाया है। परन्तु जब हम यह विचार हम करने लगते हैं कि वे परमपिता परमात्मा का जो अनुपम जगत यज्ञशाला के रूप में प्रायः दृष्टिपात आती है, चाहे वह राजा अपने राष्ट्र में याग कर रहा हो, चाहे वह राजा अपनी प्रजा को अनुशासन में चलाने वाला हो चाहे वह आचार्य अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियों को एक भौतिक और आध्यात्मिक विद्या में परिणत कर रहा हो, चाहे माता अपने गर्भस्थल में मेरे पुत्रों! देखो, उसे शिक्षार्थी बना रही हो तो वह सर्वत्र यज्ञशाला के रूप में सर्वत्र जगत दृष्टिपात आता रहा है। तो हमारे ऋषि-मुनियों ने चाहे वह एक मन्त्रार्थ के द्वारा याज्ञिक मानो देवता को प्रसन्न करने वाला हो चाहे वह देवपारायण प्रत्येक देवता का प्रत्येक मन्त्र मानो देखो, सत्य आभा में पिरोया हुआ हो, वह सर्वत्र एक यज्ञ रूप माना गया है।

तो विचार आता है हमारे यहाँ ऋषि-मुनि एक ही मन्त्र के द्वारा मानो देखो, हूत करते रहे हैं, और नाना

महाराजा रघु का याग

मन्त्रों के द्वारा जैसे वेद का याग है, वेद में पारायणता होती रही है परन्तु देखो, वह भी एक याग माना गया है, बहुत से याज्ञिक इस प्रकार के रहे हैं, जिन्होंने बेटा! एक वेदमन्त्र के आधार पर मृत्यु को मृत्यु से विजय हो गएं हैं, और बहुत से विद्वान याज्ञिक इस प्रकार के रहे हैं बेटा! जिन्होंने एक-एक वेदमन्त्र को ले करके और सर्वत्र वेद के पारायण के द्वारा याग किया है। उन्होंने सब देवताओं को प्रसन्न किया है। परन्तु उन सब देवताओं का प्रसंग मानव के हृदय से रहता है, एक देवता का प्रसंग ही किसी इन्द्रिय से होता है, मस्तिष्क से भी होता है। परन्तु देखो, इस यज्ञ के सम्बन्ध में मैं कोई विशेष चर्चा तुम्हें उच्चारण करूंगा। हमारे ऋषि-मुनियों ने इन याग के ऊपर अपना बड़ा महत्व और याज्ञिक स्वरूप का उन्होंने वर्णन किया है।

वशिष्ठ उपाधि

आओ, बेटा! देखो, हमारे यहाँ जो राजा हैं राजा भी प्रायः देखो, याज्ञिक रहे हैं और राजाओं ने अपने राष्ट्र में नाना प्रकार के यागों का चयन किया है, जैसे अश्वमेध याग रहे हैं अग्निष्टोम याग, जैसे अजामेध यागों का वर्णन भी मानो देखो, इस सूत्र में पिरोया गया है, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, देखो, यहाँ बेटा! महात्मा महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज अपने आश्रम में विद्यमान हैं, क्योंकि हमारे यहाँ देखो, एक वशिष्ठ नाम की उपाधि मानी गई हैं। क्योंकि देखो, अरूणधती जो भी उनकी पत्नी है, वह भी अरूणधती के रूप में परिणत रही है, और देखो, हमारे यहाँ वशिष्ठ नाम एक उपाधि रूप माना गया है। हमारे यहाँ जो भी राजाओं के देखो, रघुवंश में देखो, जितने राजा हुए हैं, राजा सगर हुए हैं, और हरिश्चन्द्र हुए हैं, और भी नाना जैसे भागीरथ इत्यादि राजा हुए और भी नाना राजा जो हुए हैं। इनमें सर्वत्रता में एक वशिष्ठ नाम का पुरोहित रहा है। पुरोहित का अभिप्रायः यह है कि यह उपाधि है जो भी इस रघु वंश में हमारे यहाँ एक चलन रहा है कि मनु वंश से मानो कि वह परम्परा वशिष्ठ से प्रारम्भ होती है, और वशिष्ठ उस ऋषि को कहा जाता है, जो ब्रह्मवेत्ता है। जो शान्ति प्रिय है। मानो जो मान अपमान से रहित होता है। जैसे परमपिता परमात्मा मान अपमान क्योंकि वह अकाय है, अकाय होने मानो उसको मान अपमान का ज्ञान ही नही हैं, वह ज्ञान है, क्योंकि मान अपमान वहाँ है ही नही। इसी प्रकार देखो, वह जो ब्रह्मवेत्ता होते हैं, उनको मान अपमान नही होता, वह मान अपमान से रहित जब तब नही होता, जब तक मानो देखो, ऋषि-मुनि ब्रह्मवेत्ता की उपाधि भी नही प्रदान करते हैं।

वेद

तो इसीलिए महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज देखो, मान अपमान से रहित होने से एक समय मुनिवरों! देखो, महाराज रघु भ्रमण करते हुए उनके आश्रम में पंहुचे। आश्रम में बेटा! देखो, वह रात्रि छा गई थी भ्रमण करते हुए क्योंकि अपनी प्रजा का वह निरीक्षण किया करते थे, क्या मेरे राष्ट्र में कोई भी मानव, इस प्रकार का गृहस्थ और वानप्रस्थ और सन्यास का तो प्रसंग ही नही आता, परन्तु देखो, ब्रह्मचारी क्या अपने-अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं, अथवा नही क्योंकि वेद में नाना मन्त्र इस प्रकार के आऐं हैं, क्योंकि वेद एक धर्म नही है, वेद प्रकाश है, जैसे सूर्य है सूर्य अपने में प्रकाशमान है, ऐसे वेद की जो पवित्र विद्या है, यह मानो देखो, यह धर्म नही कहा जाता इसको कर्तव्य कहते हैं और यह प्रकाश हैं अपने में और प्रकाश कहते हैं, ज्ञान को और यह जो ज्ञान है, मानो देखो, यह संसार की किसी की धरोहर नही है, यह सर्वत्रता में विद्यमान है। यह ज्ञान मानो देखो, पशु में भी होता है, मानव में भी होता है, यह मानव समाज ऐसा है क्या यह अपनी पद्धतियों को निर्धारित कर सकता है। राष्ट्र का निर्माण कर लेता है, तो इसीलिए देखो, इसमें विचित्रता मानी गई हैं, यह अपने में पूर्ण होने से अपने क्रियाकलापों में पूर्ण होने से इसका महत्व विशेष माना गया है।

राजा रघु द्वारा प्रजा निरीक्षण

महाराजा रघु का याग

तो विचार आता रहता है, क्या राजा रघु मानो देखो, अपने राष्ट्र का निरीक्षण करते रहे, और यह कि मेरे राष्ट्र में, ब्रह्मचारी अपने ब्रह्मचर्य का पालन भी करते है, अथवा नहीं और इसी प्रकार के गृह आश्रम में रहने वाला गृहस्थ अपने में गृहस्थ का पालन भी कर रहा है, अथवा उनके गृह में याग भी होता है या नहीं दर्शनों का अध्ययन भी होता है अथवा नही इस प्रकार देखो, वह राजा अपने राष्ट्र का निरीक्षण किया करता है करने के पश्चात मेरे प्यारे! देखो, वह अपने आचार्यों से समीप विद्यमान कि विद्यालयों में मानो देखो, ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहा है तो किस प्रकार कर रहा है? कैसी विद्या का अध्ययन कर रहा है, आचार्य अपने आचार्य कितना कुशल है, कितना महान है और वह कितना तपस्वी हैं ये राजा मानो देखो, सर्वत्रता का निरीक्षण करना, मानो उनका कर्तव्य कहा जाता है।

तो मानो देखो, राजा रघु, अपने राष्ट्र में निरीक्षण करते हुए रात्रि छा गई और रात्रि छा जाने के पश्चात वह रात्रि के समय भयंकर वन में महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के यहाँ उनके आश्रम में उनका वास हुआ, और वास होने से देखो, ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, और उन्होंने कहा आईए राजन्! उन्हें देखो, उनका एक उचित स्थान विद्यमान था। अपने उचित स्थान पर जब मानो विद्यमान हो गये, तो वशिष्ठ मुनि महाराज मानो देखो, अपने में विचार-विनिमय कर रहे थे उन्होनें पुरोडाश तम् एक ब्रीहि कृतं वेदमन्त्र का उद्गीत गाया और उन्होंने कहा कि हे राजन्! वेदमन्त्र में यह आता है, कि राजा को अपने यहाँ कोई पुरोडाश बनाना चाहिए क्योंकि पुरोडाश का अभिप्रायः यह है कि अपने राष्ट्र को कुशलता में, और मानो देखो, उसमें हवि बना करके हव्य पदार्थों का देखो, उसे याग करना चाहिए। ऐसा देखो, वेदमन्त्र कह रहा है राजन! मेरे प्यारे! देखो, रात्रि समय कुछ विचार हुआ निन्द्रा की गोद में चले गएं प्रातःकालीन महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज और माता अरूणधती अपने ब्रह्मचारियों के मध्य में मानो अपनी शारीरिक क्रियाओ से निवृत्त हो करके प्रातःकालीन उन्होंने ब्रह्मयाग का व्यपधान किया ब्रह्मयाग में ब्रह्मचारियों को ब्रह्म की शिक्षा देना और मानो नैतिकता में ब्रह्म में परिणत कराना, यह उनका दोनो का कर्तव्य था। तो वह मानो देखो, ब्रह्मविद्या मानो ब्रह्म ज्ञान दे करके उसके पश्चात देव पूजा में परिणत हुए और देव पूजा में नाना प्रकार का साकल्य और दुग्ध और घृत के द्वारा वह प्रातःकालीन मानो ब्रह्मचारियों के मध्य में मानो याग करते हैं माता अरूणधती याग के पश्चात यह उपदेश देती रही क्या हे ब्रह्मचारियों! यह जो याग है यह आध्यात्मिक और भौतिकवाद से दोनो से कटिबद्ध रहता है। मानो देखो, याग अपने में पूर्णता को लिए हुए रहता है, और उस याग में मानो देखो, आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान दोनो ही निहित रहते हैं, क्योंकि जितना भी यह संसार है, जब इस संसार से कोई याग की प्रथा अथवा याग चला जाता है, तो संसार का क्रियाकलाप नग्न हो जाता है, और नग्न होने का अभिप्रायः यह कि अज्ञान आ जाता है, और अज्ञान के आ जाने से मानो देखो, वह अपने में ही देखो, मृत्यु को प्राप्त होता रहता है।

ज्ञान से संस्कारों की दग्धता

यह माता अरूणधती का एक उपदेश प्रारम्भ रहता तो माता अरूणधती मानो देखो, अपने ब्रह्मचारियों के मध्य में प्रातःकालीन वशिष्ठ मुनि महाराज भी विद्यमान हैं, और भी मानो आचार्यजन विद्यमान रहते परन्तु देखो, माता अरूणधती का नित्यप्रति यह उपदेश ब्रह्मचारियों के मध्य में होता रहा, हे ब्रह्मचारियों! यह जो तुम्हारा यह जो शरीर रूपी यज्ञशाला है, यह बाह्य जगत जो यज्ञशाला है, इससे दोनो का इससे समन्वय होना चाहिए। दोनो का मिलान होना चाहिए, क्योंकि तुम्हें गार्हपथ्य अग्नि को ले करके गमन करना है, और गृहस्थी को गृहपथ्य नाम की अग्नि को ले करके गमन करना है, और वानप्रस्थी को आह्वनीय नाम की अग्नि को ले करके गमन करना है, और गमन का अभिप्रायः यह कि ब्रह्मणां ब्रह्मा कृतं देवतवां ब्रह्मे मानो इस प्रकार की तुम अग्नि का व्यवधान करो। जिससे तुम्हारे

महाराजा रघु का याग

जीवन में अग्नि प्रदीप्त हो करके अग्नि जानां नामां भूतं ब्रह्मे कृतं यह ज्ञान रूपी जो अग्नि है, तुम्हारे अन्तर्हृदयों में जागरूक होनी चाहिए। माता अरूणधती ने कहा यह जब जागरूक होगी, जब तुम याग करोगे और याग मानो देखो, भौतिक याग को ले करके आध्यात्मिक याग से जब उसका मिलान होगा तो तुम्हारे दोनो प्रकार के यागों का मानो व्यवधान हो जाएगा। जैसे ज्ञानी है, और कर्मकाण्डी है, मानो देखो, कर्मकाण्ड और ज्ञान के अनुसार जब कर्म नही आता है, और कर्म के अनुसार देखो, कर्म काण्ड की प्रतिभा रहती है, दोनो पक्ष मानो देखो, श्रेष्ठ बन जाते हैं, वह विशाल अग्नि प्रदीप्त हो करके तुम्हारे अन्तःकरण में जो नाना प्रकार के संस्कार विद्यमान होते हैं। वह संस्कारों को जो धीमी-धीमी अग्नि ज्ञान रूपी अग्नि बन करके आह्वनीय अग्नि बन करके और वह गार्हपथ्य अग्नि बन करके, तुम्हारी धीमी-धीमी जो अन्तःकरण में जो संस्कार हैं, वह संस्कार मानो देखो, तुम्हारे वह हृदय रूपी यज्ञशाला मे वह दग्ध होने प्रारम्भ हो जाएंगे। मेरे पुत्रों! देखो, यह वाक् महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज की देवी अरूणधती ने इस वाक् को उच्चारण कर रही थी, और यह उद्गीत गा रही थी कि हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें गार्हपथ्य नाम की अग्नि से प्रारम्भ होना है, और दक्षिणाय अग्नि को ले करके ही मानो देखो, वह अवाकृति देखो, गृहपथ्य नाम की अग्नि में जा करके तुम्हें शान्त हो जाना है, और गृहपथ्य नाम की अग्नि को ले करके तुम्हें आह्वनीय अग्नि के ऊपर तुम्हें व्यवधान करना है। जिससे उसी में तुम्हारा विश्राम होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, ज्ञानी जन जब इस प्रकार का उसको ज्ञान हो जाता है, इस प्रकार के याग में वह कटिबद्ध हो जाता है, तो मानो देखो, उसका याग ही आसन है, और याग ही उसका बिछौना है और याग ही मानो देखो, उसका ओढन और पांशे बने हुए हैं।

मुनिवरों! देखो, याग में ही परिणत हो जाता है मेरे प्यारे! देखो, उसका एक-एक जो श्वास हैं, वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ होता है, उसका एक-एक देखो, श्वास मानो देखो, नेत्रों की ज्योति भी याग में पिरोई हुई रहती है, तो बेटा! यह याज्ञिक की माला बन करके उस याग को धारण करके मुनिवरों! देखो, याग में परिणत हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारियों को कहा गया हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें मानो देखो, मृत्यु से पार होना है, और मृत्यु से पार वही होता है, जिसका आसन और औढ़न मानो देखो, याग बन जाता है, वह यह स्वीकार करता है, कि मेरा जो आसन है वह भी देवता हैं, मेरे निचरले भाग में विद्यमान हैं और मानो देखो, ऊर्ध्वा भाग में बृहस्पति मेरा संरक्षण कर रहे हैं, और मेरे जो पांश हैं वह मानो देखो, वह दिशाओं के रूप में विद्यमान हैं मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रका का व्यवधान करके विचार विनिमय करते हुए ऋषि अपने में विचार-विनिमय क्या ऋषि देवी ब्रह्मचारियों को यह उद्गीत गा रही थी।

कर्तव्यवाद

हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें मृत्युंजय बनना है, और तुम मानो देखो, ब्रह्मयाग करते हुए देवयाग में परिणत हो जाओ मानो देखो, यह तुम्हारा देव याग है, और देवयाग ऐसा एक याग है देखो, राजा भी उसी देवता की कोटि में रहता है, ऋषि भी उसी कोटि में रहता है, एक साधारण प्राणी उसी कोटि में रहता है, मानो देखो, वह कर्तव्यवाद की आभा में निहित हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणा ब्रह्मण्ण व्रतं धर्म कहते हैं, धारण करने को और कर्तव्यवाद कहते हैं मानो देखो, अपनी शरीरिक और मौलिक आत्मा की प्रतिक्रिया को उसको जानने का नाम ही मानो कर्तव्यवाद है, जैसे सूर्य अपने में प्रकाश दे रहा है, वह मानो देखो, अपने कर्तव्य में इतना पारायण है कि वह अन्धकार को निगलता चला जाता है, और वह अन्धकार को निगलता चला जाता है, वही तो सूर्य है, चन्द्रमा मानो इतना चन्द्रवत कहलाता है। क्या वह भी रात्रि को अन्धकार को अपने में सम्भोग करने लगता है, और सम्भोग करता हुआ रात्रि को अपने में धारण करता हुआ मानो रात्रि को प्रकाश में परिवर्तित कर देता है। जो मानो देखो, इस प्रकार का ज्ञान इस प्रकार का प्रकाश जब आत्मा का योगेश्वर को हो जाता है, साधक को हो जाता है।

महाराजा रघु का याग

तो मेरे प्यारे! देखो, वही रात्रि को भी प्रकाश में परिवर्तित करता है, दिवस भी उसके लिए प्रकाश में हैं, मानो क्योंकि ज्ञान का अभाव नही होना चाहिए। वेदमन्त्र कहता है कि जानां जन्म ब्रह्मे वेदमन्त्र का ज्ञान के लिए जानने का नाम और जिस वस्तु को तुम जानोगे, उसका ज्ञान होना, उसके अनुसार क्रियाकलापों मे परिणत होने का नाम ही मानो देखो, तुम्हारा नृत्त कहलाया जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब इस प्रकार जब ऋषि देवी ने अपने ब्रह्मचारियों के मध्य में और वशिष्ठ मुनि की आज्ञा से उन्होंने इस प्रकार का उपदेश दिया तो राजा रघु इन याज्ञिक विचारों को अपने में श्रवण कर रहा था। वह बोले कि हे ब्रह्मचारियों! अमृतां ब्रह्मणे यजांसि ब्रहे राजा देखो, अजामेध जो याग करता है, वह राजा करता है, वह अजय नही होता मानो देखो, राजा वह याज्ञिक होता है। जो अपनी प्रत्येक इन्द्रियों को कर्तव्य में परिवर्तित कर देता है, प्रत्येक इन्द्रियाँ कर्तव्य का आवरण करने लगता है। वह राजा अश्वमेध याग का और अजामेध याग का अधिकार होता है, और जो देवताओं की पूजा करता है, और एक देवता का व्यवधान करता हुआ मानो चाहता है। राजा क्या मैं अपने राष्ट्र देखो, याज्ञिक मैं वृष्टि याग करना चाहता हूँ, तो वह मानो मन्त्रों के द्वारा इन्द्रियों को एकाग्र करता हुआ जब वह प्रकृति के क्षेत्र में जाता है, और वह अश्वमेध याग कराता है, तो वृष्टि का व्यवधान बन जाता है।

तो विचार आता है, राजा वही है, राजा मृत्यु से पार होता है। तो मेरे प्यारे! पुत्रेष्टि याग अथवा सन्तानां भूतं ब्रह्मे याग करती है, और याग करके उसका जो संकल्प शक्ति है, वही अपने में ग्रहण करने लगती है, तो यज्ञशाला है, इसी प्रकार यज्ञं भूतं ब्रह्मा राजा भी अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाने के लिए मानो देखो, याग में परिणत होना चाहिए। मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहा है, क्या राजा रघु इन विचारों को श्रवण कर रहे थें, और विचारों का श्रवण करके माता अरूणधती यह उद्गीत गा रही थी हे ब्रह्मचारी! यह जो राजा इस प्रकार का याग करता है। तो राष्ट्र पवित्र बनता है, समाज में मानो पवित्रता का मानो एक स्रोत बहने लगता है, तो इसी प्रकार याग को तुम अपने जीवन में अपने से दूरी नही करना। तो मेरे प्यारे! देखो, राजा इन वाक्यों को अपने में श्रवण कर रहे थे, मेरे पुत्रों! देखो, उनका उपदेश मंजरी प्रारम्भ हुई, और प्रारम्भ होने के साथ ही यह देखो, तुम्हारा जीवन यज्ञशाला है, और यज्ञशाला में तुम्हारी जो पांच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, और पांच कर्मेन्दिंयां है, वह होता बने हुए हैं। वह होता हैं, और देखो, दस प्राण भी होता हैं, और इसी प्रकार मन, बुद्धि, चित, अहंकार मानो देखो, वह तलहटियों में रहने वाली कर्म की आभा कहलाती है, और उनके द्वारा ही मानो चौबीस होता बन करके आत्मा के समीप जाना चाहते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, जब यह माता अरूणधती ने इसके साथ अपने वाक्यों को समाप्त कर दिया और समाप्त करने के पश्चात राजा बेटा! देखो, राजा और माता अरूणधती और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज और महर्षि श्वेतकेतु मेरे प्यारे! देखो, अपने में विचार-विनिमय करने लगे। जब यह विचारां भूतं ब्रह्मणा लोकां वाचप्रह्वा वाच प्रह्वे मेरे पुत्रों! जब इस प्रकार की आभा में परिणत हो गये, परिणत हो जाने के पश्चात राजा ने नत मस्तिष्क हो करके, कहा-प्रभु! मैं यह संकल्प करने लगा हूँ कि मैं अपने राष्ट्र सर्वश याग करना चाहता हूँ, मानो जितना भी मेरे कोष में द्रव्य है, वह जितना भी द्रव्य है, मैं सर्वत्र का याग करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, उस समय महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले कि हे राजन! तुम याग को सर्वत्र याग तो करना चाहते हो, परन्तु यदि जो राजा का द्रव्य होता है, वह प्रजा का द्रव्य होता है, यदि प्रजा के नायक ने यह प्रश्न कर दिया कि इस द्रव्य का तुम्हें क्या अधिकार है। जिसको तुम याग में परिणत कर रहे हो। मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा राजा ने कहा कि द्रव्य भी राष्ट्र का है, द्रव्य भी प्रजा का है, और याग भी प्रजा का है, और याग और प्रजा दोनो मिल करके हम सब परमात्मा की धरोहर हैं। यह राजा का जब उत्तर मिला तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज सब मौन हो गये। उन्होंने कहा राजन! तुम्हें धन्य है, तो मेरे प्यारे! देखो, द्रव्य किसका है, यह विचार आता है कि द्रव्य तो प्रभु! की धरोहर है और मानव भी प्रभु की धरोहर है।

परन्तु एक दूसरें के पूरक बन करके हम परमात्मा के निमित जाना चाहते हैं, तो वही आज हमारे लिए एक महानता का गुणगान का एक स्वरूप बन जाता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करना नही चाहता हूँ, विचार-विनिमय केवल यह कि जब राजा ने इस प्रकार के वाक्यों का उद्गीत गाया तो मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण है कि वह सब सभा अपने में ब्रह्मचर्य सहित अपने में मौन हो गई, और राजा ने इस वाक् को स्वीकार किया कि अमृतं यागां भूतं मैं याग करूंगा सर्वत्र याग करूंगा मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा क्या हे ऋषिवर! तुम्हारे राष्ट्र में इतने ऋषि हैं, बुद्धिमान तपस्वी हैं, उनकी एक सभा होनी चाहिए और सभा में विद्यमान हो करके मानो विचार-विनिमय हो और जितनी देवियां हैं, बुद्धिमता जो बुद्धिजीवी हैं, उनकी सभा में उपस्थिति होनी चाहिए। विचार-विनिमय हो करके मानो देखो, याग होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, राजा ने कहा बहुत प्रियतम, तो इस प्रकार मेरे पुत्रों! देखो, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देवतव की धारणा में अपने को ले जाएं। हम स्वयं अपने को धारयामि बनायें मेरे पुत्रों! जिससे हमारे जीवन में एक महानता का दर्शन हो, तो आज का विचार-विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए परमात्मा की महती को जानते हुए इस संसार सागर से हम पार होने का हम प्रयास करें।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज के विचारों का अभिप्रायः हमारा क्या आज मैं कोई विशेष विचार देना नही चाहता हूँ, कल मुझे समय मिलेगा तो मैं देखो, वशिष्ठ मुनि के आश्रम में जो सभा राष्ट्रीय सभा हुई मैं उसी चर्चाए तो कल कर सकूंगा, आज का विचार तो केवल हमारा यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते रहें। संसार सागर से पार होने का प्रयास करें आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः यह क्या हम परमपिता परमात्मा की महती और आध्यात्मिक और भोतिकवाद दोनो याज्ञिक बन करके मेरे पुत्रों! हम संसार में कल्याण के मार्ग को प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि जब परमात्मा को हम एक-एक कण-कण में दृष्टिपात करेंगे, तो हमारा जीवन मानो देखो, उससे कटिबद्ध रहता है, परमात्मा सूत्र है, और हम सर्वत्र मानो देखो, उसके मनके हैं, विचार भी एक मनका है, मन भी एक मनका है, जो आत्मा से पिरोऐ हुए जो जगत्यां पिरां ब्रह्मा मानो देखो, यह सर्वत्र एक दूसरें में पिरोया हुआ जगत दृष्टिपात आता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा अभिप्रायः क्या हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए, और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं। मेरे पुत्रों! प्रातःकालीन प्रायः देखो, ब्रह्मचारियों को नैतिक शिक्षा होनी चाहिए, जो विद्यालयों में प्रदान की जाती है, जिसमें आचार्य विवेकी पुरूष विद्यमान हो करके अपने विचारों मे विचारणीय और दर्शनों को और विचारों को ले करके वह विचारवान बनाते हैं, ब्रह्मचरिष्यामि की चर्चाएं करते हैं। सर्वत्र याग की चर्चाएं मैं कल कर सकूंगा। आज का अभिप्रायः हमारा यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, और देखो, जितना भी यह जड़ जगत और चैतन्य जगत है, उस सर्वत्र जगत में मानो देखो, परमपिता परमात्मा निहित रहते हैं। परमात्मा के ऊपर हमारा विश्वसनीय विचार और विश्वास होना चाहिए। जिससे हमारा जीवन मानो देखो, उसको सूत्र स्वीकार करके हम अपने को मनका स्वीकार करके मानो देखो, हम माला के वृत बन जाएं तो यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या, क्या राजा अपने राष्ट्र का निरीक्षण करना, कर्तव्य का पालन करना, क्योंकि कर्तव्य ही मानो देखो, मानव को सजातीय बनाता है। कर्तव्य ही राष्ट्र को प्रकाशमान बनाता है। कर्तव्य ही विद्यालयों को ऊँचा बनाता है। कर्तव्य ही मानो देखो, राष्ट्र की सम्पदा को मानो देखो, ऊँचा बनाता है। तो यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम

महाराजा रघु का याग

परमपिता परमात्मा को अपने में याज्ञिक स्वीकार करें कल मैं मानो देखो, राजा रघु के याग की चर्चाएं कल करूंगा क्योंकि उनके यहाँ सभा में विद्वानों का समूह एकत्रित हुआ और उन्होंने किस-किस प्रकार का अपना विचार दिया है, यह कल मैं चर्चाएं प्रगट करूंगा आज का विचार समाप्त अब वेदो का पठन-पाठन।

४ संसार एक यज्ञशाला ०९ ०३ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ वह पाठय क्रम परम्परागतों से ही, विचित्रतव माना गया है जिसके ऊपर हमारे यहाँ ऋषि-मुनि और महापुरूष अपनी साधना में परिणत रहे हैं और एक-एक वेदमन्त्र को ले करके उन्होंने अनुष्ठान के ऊपर अपना जीवन और अपनी प्रतिभा को उसमें प्रतिष्ठित किया, जिससे मानव का जीवन तपोमय हो जाएं क्योंकि परमात्मा का अनन्तमयी जो ज्ञान है, उसमें वृद्धपन नही आता, वह सदैव नवीन बना रहता है। तो इसीलिए वेदों का जितना भी ज्ञान है, वह सदैव नवीन रहता है, उसमें वृद्धपन नही आता, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, और सृष्टि के अन्त परिणाम तक मानो वह ज्ञान रूपी सूर्य एक ही आभा में एक ही साधना में परिणत रहा है तो इसीलिए हमारा वेद का मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा उसका वर्णन करता रहता है क्योंकि वह सदैव नवीन रहता है, उसमें नवीनतम भी रहता है क्योंकि आत्मा का जो ज्ञान है आत्मा की जो प्रतिक्रियाएं हैं, वे मानवीय जीवन में क्या किसी भी प्राणी के प्राणतव में सदैव एक रस बनी रहती है तो मुनिवरों! देखो, हम सदैव इसीलिए परमपिता परमात्मा और उसकी महिमा का सदैव गुणगान गाते रहते हैं, ऋषि-मुनि जब भी अपनी-अपनी स्थलियों पर विद्यमान रहे हैं, उसी काल में उन्होंने एक ही वाक् को अपना विचारणीय विषय बनाया है, क्या मानव मृत्यु से पार कैसे होता है। क्योंकि मृत्युंजय बनने के लिए प्रत्येक मानव की उत्कट इच्छा बनी रहती है और सदैव यही चाहता है कि मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए परन्तु विचार-विनिमय यह करना है कि वेद का मन्त्र यह कहता है कि हे मानव! जिस मृत्यु को तू पुकार रहा है, हमारे वैदिक साहित्य में, वेद की प्रतिभा अथवा उसकी भाषा में मृत्यु कोई शब्द नही होता है, क्योंकि मृत्यु अज्ञान है, इसीलिए वेद नाम प्रकाश का है तो इसीलिए इसकी प्रतिभा में मानो मृत्यु का शब्द नही आता। क्योंकि वेद जीवन है, ज्ञान ही जीवन है, तो हमे जीवन को प्राप्त करने के लिए सदैव प्रयत्न करना चाहिए और जीवन को सदैव बनाए रहना चाहिए वह एक रस बना रहे जैसे सूर्य प्रातःकाल में उदय होता है और वह प्रकाश को ले करके आता है, वह ऊर्ज्वा ले करके आता है, चाहे उस ऊर्ज्वा में मानव तपायमान हो जाएं चाहे पृथ्वी तपायमान हो जाएं, चाहे और भी लोक-लोकान्तर उसमें तपायमान होते रहते हैं, परन्तु नाना वनस्पतियां उसी में प्रकाश को प्राप्त करके अपने में ओजस बन जाती हैं। जो प्राण वर्धकतव को प्राप्त कर लेती हैं, परन्तु विषैले प्राणियों पर भी वही ऊर्ज्वा अपना क्रियाकलाप कर रही है, और वही मानवतव में भी उसी प्रकार का क्रियाकलाप हो रहा है।

आत्मा का लोक

तो विचार आता रहता है कि हम उस परमपिता परमात्मा का जो ज्ञान और विज्ञान है, वह मृत्यु से रहित है, वह मृत्यु मानो देखो, उसके वृत्तियों में नही आती और प्रत्येक मानव मृत्यु को इसीलिए पुकारता रहता है, क्योंकि उसका अध्ययन नही हैं, वह अपने आत्म चिन्तन नही कर रहा है। जो आत्मा हमारे शरीर में वास कर रहा है अरे, भोले प्राणी उसका ही प्रतीत नही वह कितना विशाल है, कितना मानो देखो, महान है, उसी के ऊपर हम विचार नही कर रहे हैं, तो इसीलिए हमें अज्ञान ही अज्ञान व्यापता रहता है। हम आत्म चिन्तन करें और आत्मा के लोक में प्रवेश करने का प्रयास करें, क्योंकि लोक तो सर्व श्रेष्ठ एक आत्मा का लोक ही माना गया है। और आत्मा का लोक क्या है बेटा! मैंने कई कालों में वर्णन किया है, आत्मा का लोक मेरे प्यारे! वह पंच महाभूत माना गया है। इसका जितना भी ज्ञान विज्ञान तरंगेवाद हैं, वह सब आत्मा से प्रेरणा ले करके मुनिवरों! देखो, प्रेरित होते रहते

हैं या उसके अवृत्तियों में रत्त रहने वाले हैं। तो इसीलिए आत्मां भूतं ब्रह्मा वर्णा सुते आत्मा के लोक में जाने का प्रयास करो। क्योंकि यह जो तुम्हारा लोक है, यह आत्मा में जाने का उपग्रह माना गया है।

तो आओ, मेरे प्यारे! इस सम्बन्ध में कोई चर्चा तुम्हें विशेष नहीं केवल यह कि हमारे यहाँ जो वेदों का पठन-पाठन होता है उस पठन-पाठन की पद्धति में, भिन्न-भिन्न प्रकार के वेदों का उद्गीत गाया जाता है, और वह जो वेदों का उद्गीत है। वह कहीं जटा पाठ में कहीं घन पाठ, कही माला पाठ, कहीं विसर्ग पाठ, कही उदात्त और अनुदात्त में वेदों के स्वरों का स्वर व्यंजन होता रहता है। तो विचार आता रहता है कि प्रत्येक मानव जब इन नाना प्रकार के स्वरों को जानने लगता है, तो उसकी स्वर ध्वनि पवित्र हो जाती है और वह मानो देखो, यदि उसको आन्तरिक जगत में ले जाता तो बाह्य जगत में जो ध्वनियां अपने में ध्वनित हो रही हैं, वह उन्हें ग्रहण करने लगता है और अपने में नाना प्रकार का अनुष्ठान करके मृत्युंजय बनने का प्रयास करता है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! देखो, आज का विचार क्या मृत्यु प्रत्येक मानव के हृदय में यह आकांक्षा लगी रहती है, क्या मैं मृत्यु को न प्राप्त हो जाऊं मेरे प्यारे! मृत्युंजम ब्रह्मा जो जान लेता है, वह जो जानं ब्रह्मा कृतं देवाः जो आत्मा के रहस्यों को जानता है। पंच महाभूतों के रहस्यों को जानता है, वह ज्ञानी है, और वह ज्ञान को उसके अनुसार मानो वह क्रियाकलाप करता है। तो मानो देखो, वह महाव्याहृतियां में रत्त हो करके मुनिवरों! देखो, पार होने का प्रयास करता है, वह दोनों से उपराम हो जाता है। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है, हे मं ब्रह्मा वर्णां ब्रह्वे देवत्वां हिरण्यं रथा वह जो परमपिता परमात्मा है, वह हिरण्यं ब्रहे मानो देखो, वह सर्व जगत उसमें ओत-प्रोत रहता है। उसी में निहित रहता है तो उसको हमें जानने का प्रयास करना चाहिए आओ, मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा वेदमन्त्र यह कहता है क्या मानव को उद्गीत गाना चाहिए। वहाँ वेद का मन्त्र यह कहता है सम्भूति ब्रह्मणा लोकां वाचसुतं वह मानं ब्रह्मे वे परमपिता परमात्मा वाचस्वसत कहलाता है। तो इसीलिए हमें उस अपने वाक्यों से, वाचों से हम ग्रहण नही कर सकते वह स्वयं देखो, अपने में अनुभव ही कर सकते हैं।

तो विचार आता रहता है कि हमें वेदां भूतं ब्रह्मा हमें अपने ज्ञान और विज्ञान की ऊर्ध्वा में उड़ान उड़नी चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा वाक् क्या कह रहा है, मानं ब्रह्वे देखो, आज मैं तुम्हे उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ कल मैंने अपने विचारों को शान्त किया था और वह शान्त क्या है देखो, राजा रघु के राष्ट्र में और देखो, राजा रघु के हृदय में जो प्रेरणा का स्रोत जागरूक हुआ, प्रायः उसकी चर्चा चल रही थी कि राजा उनके हृदय में मानो देखो, नाना प्रकार की प्रेरणा आती रहती है। प्रत्येक मानव के हृदय में वही प्रेरणा का स्रोत बना रहा है। जो उसके अन्तःकरण में संस्कार है, और वह संस्कार मानव को संस्कारित प्राणी प्राप्त हुआ, तो वह संस्कार उदबुद्ध हो जाते हैं, और उन संस्कारों से उदबुद्ध होने से वही संस्कार अपने में धारण करने लगता है।

तो विचार आता रहता है महाराजा रघु जब माता अरूणधती की चर्चाओं को श्रवण कर रहे थे, तो उन्होंने एक संकल्प किया और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज से कहा क्या महाराज मैं अमृतं ब्रह्मे मानो देखो, मैं अमृता देखो, मैं एक याग को मैं सर्वांग याग करना चाहता हूँ, जिसमें मेरे कोष में जो द्रव्य है, उसे वर्णानं ब्रह्वे वह सर्वत्र का याग करना चाहता हूँ। तो महात्मा वशिष्ठ ने कहा कि इसमें ब्रह्मवेत्ताओं का और ऋषि-मुनियों की एक सभा होनी चाहिए। क्योंकि वह जो विवेकी पुरूष होते हैं, इसमें ऊर्ध्वा का मार्ग उदगीत रूपों में गान गायेंगे, और उसके अनसार तुम्हें क्रियाकलापों को करना है। तो मेरे प्यारे! देखो, राजा रघु ने सर्वत्र मानो देखो, उनके राष्ट्र में जितने प्रतिष्ठित देखो, महापुरूष थे अथवा बुद्धिमान और वेदज्ञ थे, उन्होंने सबको निमन्त्रित किया और निमन्त्रित करके बेटा! देखो, उन्होंने हिमालय में रहने वाले मानो देखो, महाराजा शिव को भी निमन्त्रित किया, और मुनिवरों! देखो,

महाराजा रघु का याग

वह सभा हुई, उस सभा में नाना ऋषिवर विद्यमान थे, जैसे बेटा! महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि श्वेतकेतु, और देखो, महर्षि भारद्वाज, महर्षि कालेत्वर ऋषि, और पणपेतु ब्रह्मचारिणी शबरी अश्वेतकेतु ऋषि महाराज मेरे प्यारे! जिनमें और भी महर्षि वशिष्ठ, विश्वमित्र, और भी नाना ऋषिवर विद्यमान थे, जैसे महर्षि लोमश और महर्षि विभाण्डक और मुनिवरों! कागभुषुण्ड इत्यादि नाना ऋषि-मुनियों को देखो, उन्होंने निमन्त्रित किया, और निमन्त्रित करने के पश्चात बेटा! वह सभा एकत्रित हो गई। जब वह सभा एकत्रित हो गई, तो मुनिवरों! देखो, महाराजा वशिष्ठ ने कहा कि इस सभा में कोई मानो देखो, महान सभापति की आवश्यकता है, उसमें निर्वाचन होना चाहिए जो अपना निर्णय दे सकें, कि देखो, क्या विचार हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, उसमें अरूणधती का नामोकरण आया अरूणधती ने कहा कि मैं इस सभा में उपस्थित हूँ, परन्तु मैं इसका संरक्षण नही कर सकती। मंगलं ब्रह्मे वर्णं ब्रहे मेरे प्यारे! देखो, महाराजा शिव से यह प्रार्थना की गई कि महाराज! आईए तो महाराजा शिव ने कहा कि नहीं यह ब्रह्मवेत्ताओं का समाज है। इसमें ब्रह्म चिन्तन होना है, और देखो, महात्मा कुबेर इत्यादि सब वह सभा में विद्यमान थे। मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, महात्मा विभाण्डक मुनि महाराज ने कहा चलो, आज तो देखो, सभा में उपस्थित होंगे तो मुनिवरों! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य और महर्षि भारद्वाज दोनों में अपने में विज्ञान आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान दोनो पारायण थें मेरे पुत्रों! देखो, सभा में एकत्रित हो गये, सभा में नाना ब्रह्मवेत्ता विद्यमान हैं, तो वे महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज यह प्रार्थना की कि आईए, महाराज! आप सभा पतितव पर आप सुशोभित कीजिए। तो मुनिवरों! देखो, महाराजा वशिष्ठ मुनि महाराज ने उस सभा में सम्बोधित करते हुए कहा कि धन्यं ब्रह्मा उन्होंने कहा कि हे ब्रह्मवेत्ताओं! यदि किसी को कोई उद्गीत गाना है, या किसी प्रकार का भी द्वेषारोपण, किसी ब्रह्मवेत्ता के हृदय में हो, तो उसका भी उद्गीत गाओ, मानो देखो, मैं एक सभापतितव को जब ही अपने में संरक्षण ब्रह्मा अपने में ग्रहण करूंगा, जबकि सर्वत्र की सहमति होगी।

तो मेरे पुत्रों! देखो, उसमें महर्षि जालवी ऋषि ने एक वाक् कहा कि महाराज! आप सभापति क्यों बन रहे हैं? उन्होंने कहा कि मैं सभापति इसीलिए बन रहा हूँ क्या देखो, एक संरक्षण की आवश्यकता होती है, और वह मानो बुद्धिमानों की बुद्धि को प्रखर करता हुआ उसका अपना मन्तव्य दे। ऐसा मेरा अनुकृति विचार है, तो जालवी ऋषि ने कहा कि महाराज! आप इतने ऊर्ध्वा में ब्रह्मवेत्ता हैं, तो मानो देखो, दूसरों की बुद्धियां का माप दण्ड तुम्हारे समीप है। तो मुनिवरों! उन्होंने कहा कि नही माप दण्ड नही है, वह तो जितना भी मेरे विचार में आयेगा उसी के अनुसार मैं अपने क्रियाकलापों को अवश्य कर पाऊंगा। अपने विचारों को व्यक्त करूंगा, परन्तु जितना भी मानो देखो, मेरा ज्ञान सीमित है, या असीमित है इसके ऊपर कोई विचार-विनिमय नही। परन्तु देखो, विचार-विनिमय यह क्या जितना भी मानो देखो, मेरे से बन पाएगा उतना उत्तर दे सकूंगा।

मेरे प्यारे! देखो, जालवी ऋषि ने कहा-प्रभु! तो आप भी यह क्यों उच्चारण कर रहे हैं, सभापति क्यों बन रहे हैं? उन्होंने कहा क्या सभापति इसीलिए क्या यहाँ याग का निर्णय होना है, उन्होंने कहा यहाँ महर्षि मानो देखो, यहाँ महर्षि विभाण्डक हैं, श्रृंगी हैं जो मानो देखो, इस याग के प्रकरण को जानते हैं जिन्होंने बड़ा अध्ययन किया है। आप तो यह मानते हैं कि आप ब्रह्मवेत्ता हैं परन्तु देखो, ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मं ब्रह्मे वृतं देखो, मानव का जीवन सीमित रहता है, और तुम्हारा जीवन मृत्यु से पार हो गया है, इसीलिए हम आपको ब्रह्मवेत्ता कह सकते हैं। परन्तु जहाँ तक कर्मकाण्ड का प्रसंग है, वहाँ वायु मुनि महाराज विद्यमान हैं, यह कर्मकाण्ड में बड़े पारायण हैं, और महर्षि श्रृंगी हैं, जिनके जीवन में सदैव मानो देखो, एक कर्मकाण्ड का व्रत उनके हृदयों में सदैव पनपता रहता है, और वह अपने आसन पर विद्यमान हैं तो क्या हे भगवन! आकम् ब्रह्मे उन्होंने कहा कि मैं कर्म काण्ड के लिए भी राजपुरोहित हूँ, और मैं पुरोहित के नाते ही इस राष्ट्र में मैं रहता हूँ, उसका मैं पुरोहित हूँ, मानो देखो, ब्रह्म के

ऊपर मेरा कोई विचार-विनिमय नही। परन्तु राजा के राष्ट्र में मानो देखो, इसीलिए कि मैं इसका सभापति बनना चाहता हूँ, अमृतं ब्रह्मे वर्णासुतं देवत्वं ब्रहे मानो क्योंकि यह राष्ट्र पुरोहित का कर्तव्य कहलाता है। आप मेरे अतिथि हो, और अतिथि पने का यही कर्तव्य है कि मानो देखो, राज उसको सभापति बनायें जो उसके राष्ट्र में व्रत रहने वाले हों। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के इन वाक्यों को पान करके, जालवी अपने स्थान पर विद्यमान हो गऐ। मेरे पुत्रों! देखो, वह सभापतितव का निर्वाचन हुआ, सर्वत्र ने मानो देखो, ब्रह्मवेत्ताओं ने मानो कुछ ब्रह्मचारियों ने मानो उनका समर्थन किया, और वह अपने आसन पर विद्यमान हो गयें, आसन पर विद्यमान हो करके, ब्रह्मवताओं ने कहा कि इस सभा का क्या प्रसंग है? तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणे राजा रघु ने कहा-प्रभु! मेरी इच्छा ऐसी जागरूक हुई है, क्या मैं एक सर्वांग याग करना चाहता हूँ। जो मानो देखो, सर्वत्र प्राणियों के हितवर्धक हो। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। वह मेरे प्यारे! देखो, महात्मा जालवी जी उपस्थित हुए और जालवी ने राजा से प्रश्न किया कि हे राजन्! तुम मानो देखो, राजा तो राष्ट्र का अध्वर्यु होता है, और आप राष्ट्र के अध्वर्यु होने के नाते तुम्हारे हृदय में याग की प्रेरणा कैसे जागरूक हुई है? उन्होंने कहा कि-प्रभु! राष्ट्र का कर्तव्य है, क्या राजा के राष्ट्र के विचारों की सुगन्धि होनी चाहिए, वेदमन्त्रों की धारा पर देखो, यज्ञशाला का मानो जो सुगन्धिव्रत है, अग्नि की धाराओं पर मानो देखो, शब्द और चित्र और मानो देखो, उनके शब्द की जो ध्वनि वह द्यौ में प्रवेश कर जाएं। ऐसा मानो देखो, यह हमारा विचार है। हे ब्रह्मणे वर्णानं ब्रह्वा मुनिवरों! देखो, इस प्रकार जब जालवी ने जालवी के प्रश्नों का उत्तर राजा ने दिया तो राजा से कहा जालवी ने हे प्रभु! देखो, याग तो वह राजा वह अनुष्ठानी करता है, जिसकी इन्द्रियाँ उसके वश में हो गई हो। उन्होंने कहा-प्रभु! मेरी इन्द्रियाँ तो इतनी वश में नही हैं, परन्तु जितना भी मैं जानता हूँ, मानो इन्द्रियों के ऊपर संयम करने का सदैव प्रयास करता रहता हूँ।

मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा जालवी इस वाक्यं ब्रहे वह अपने स्थान पर मानो विद्यमान हो गये। विद्यमान हो करके देखो, राजा ने कहा हे प्रभु! मैं तुमसे कोई विशेष प्रश्न नही ले कर चला हूँ, केवल मैं यह जानने के लिए कि मुझे याग करना चाहिए। सर्वांग याग, या नही करना चाहिए, मेरे प्यारे इसका मैं स्पष्टीकरण चाहता हूँ तो महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने सबसे प्रथम महर्षि जालवी से यह प्रश्न किया हे जालवी! तुम अपने विचारों को दों। महात्मा जालवी देखो, उपस्थित हुए और जालवी ने कहा हे प्रभु! मेरे विचारे में तो यह कि राजा को याग करना चाहिए, क्योंकि राजा याज्ञिक होगा, तो देखो, ये प्रजा भी याज्ञिक होगी। राजा मानो देखो, इन्द्रियों पर संयम करने वाला, राजा ही याग कर सकता है, और देखो, उस पर अधिकार होता है, कि गायत्री छन्दों में जो रमण करने वाला हो। मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा बहुत प्रियतम मुनिवरों! ब्रह्मणे ब्रहा ब्रहे उन्होंने कहा कि हम राजा से प्रश्न नही करेंगे। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज इसके पुरोहित हैं, तो भगवन! देखो, हमारा विचार तो यही कि याग होना चाहिए, और याग में सुगन्ध होनी चाहिए, परन्तु राजा और प्रजा एक सूत्र में हों और जितने पृथ्वी पर राजा देखो, उनका एक सूत्र होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् उनका प्रसंगवत मानो देखो, सबके हृदय में समाहित हो गया। इतने में महात्मा विश्वामित्र एकत्रित थे, और महात्मा विश्वामित्र से कहा हे विश्वामित्र! तुम भी मानो देखो, अपने जीवन में राजा भी रहे हो, राजर्षि भी रहे हो, अब तुम ब्रह्मवेत्ता की उपाधि को प्राप्त करने के लिए तत्पर हो, और तुम ब्रह्मवेत्ता बन भी गएं हो। तो आप अपना मन्तव्य प्रगट कीजिए।

राष्ट्र का आत्मा

तो महर्षि के वाक्यों को पान करते हुए, महर्षि विश्वामित्र ने कहा क्या मानो देखो, इसीलिए राजा को याग करना चाहिए, कि राजा का याग से आत्मबल मानो देखो, बलिष्ठ होता है, और इस राजा का राष्ट्र मानो आत्मा बलवती होता है तो राष्ट्र भी बलवती होता है, जिस राजा के राष्ट्र में मानो देखो, आत्मां भूतं मेरे प्यारे! देखो,

महाराजा रघु का याग

महात्मा जालवी ने कहा ऋषिवर! क्या उच्चारण करने लगे हो राष्ट्र का आत्मा क्या है? उन्होंने कहा कि राष्ट्र का आत्मा राजा है, उन्होंने कहा यह आध्यात्मिकवाद है, या भौतिकवाद है? उन्होंने कहा देखो, यह भौतिकवाद और आध्यात्मिकवाद दोनो का मिश्रण है। उन्होंने कहा कि यह राष्ट्रवाद की चर्चाएं हैं राजा का जो राष्ट्र होता है, राजा के राष्ट्र आत्मा होता है, वह जो अमृतं चरित्र होता है जिस राजा के राष्ट्र में ब्रह्मचारी होते हैं और ब्रह्मनिष्ठ मानो देखो, देखो, महापुरूष होते हैं, जिस राजा के राष्ट्र में देखो, मर्णं ब्रहे वही मानो देखो, राष्ट्र की आत्मा है, और राष्ट्र की आत्मा क्या है राष्ट्रं ब्रह्मे देखो, विद्या ही देखो, राष्ट्र की आत्मा है, उन्होंने कहा जिस राजा के राष्ट्र में मानो देखो, बुद्धिमान ब्रह्मचारी होते हैं, विवेकी पुरूष होते हैं, ब्रह्मचारिणी मानो पवित्रता को लिए हुए होती हैं, और अपने में बुद्धिमता होती हैं, वही मानो देखो, राष्ट्र का प्राण कहा जाता है। बाह्य जगत का बाह्य जगत का यह जो राष्ट्र मुझे दृष्टिपात आ रहा है, इसका जो आत्मा है, वह विद्यालय है, इसका जो आत्मा है मानो देखो, उसका चरित्र है। अब मुनिवरों! देखो, जालवी ने अमृतं ब्रह्मा और देखो, विश्वामित्र ने जब यह वाक् श्रवण किया तो विश्वामित्र मौन हो गये। हे जालवी! अमृतं ब्रह्मा देखो, मेरा तो क्या है? मुझे अपना मन्तव्य दीजिए जालवी ने कहा उच्चारण कीजिए उन्होंने कहा देखो, राष्ट्र में जो यह राष्ट्र रूपी यज्ञशाला है, इस यज्ञशाला का जो अध्वर्यु है, क्योंकि मानो देखो, वह नाना प्रकार के चरू का स्वामी होता है, और चरू का स्वामी होने से ही मानो देखो, वह राष्ट्रं ब्रह्मे वही मानो देखो, राष्ट्र का प्राण होता है। उन्होंने कहा जालवी ने कहा ऋषिवर! क्या उच्चारण कर रहे हो? क्या देखो, यह जो द्रव्य है, यह राष्ट्र का प्राण नही होता है, राष्ट्र होता है, गति राष्ट्र का प्राण होता है, विज्ञान राष्ट्र का जो प्राण है, विज्ञान का दुरूपयोग नही होना चाहिए। जिस राजा के राष्ट्र में मानो देखो, विज्ञान पनपता रहता है, वैज्ञानिक पुरूष होते हैं, और विज्ञान का जहाँ दुरूपयोग नही होता है, वह विज्ञान ही मानो देखो, राष्ट्र का प्राण कहा जाता है। वही राष्ट्र का द्रव्य कहा जाता है, मानो देखो, इस प्रकार द्रव्य का स्वामी तो ये पृथ्वी मानी गई है। द्रव्य का स्वामी तो राजा के राष्ट्र में कृषक समाज होता है, और यह जो अमृतं देखो, राष्ट्रं ब्रह्मे राष्ट्र अध्वर्यु के रूप में मानो देखो, नही माना गया है परन्तु देखो, मेरा विचार तो यही कहता है, कि राष्ट्र का जो प्राण है, राष्ट्र की जो प्रतिभा है, वह मानो देखो, अमृतम् ऊर्ध्वा में राष्ट्र में विज्ञान की गति होनी चाहिए। जब राजा के राष्ट्र में पृथ्वी मण्डल से ले करके और अरूणधती मण्डल तक, और ध्रुव मण्डल तक मानो देखो, एक प्रकार का तारतम्य लग जाएगा, और इतना निकटवाद आ जाएगा, मानो देखो, एक चन्द्र एक मंगल मण्डल का प्राणी है, वह पृथ्वी के प्राणियों से मिलन हो जाएं, और मानो देखो, मंगल का वैज्ञानिक जब शुक्र में चला जाता है, शुक्र में परिणत हो जाएं तो उसका नाम प्राण माना गया है। यह राष्ट्र का प्राण है जो तुम्हारा यातायात ऊर्ध्वा में गति हो जाएं मेरे पुत्रों! देखो, जालवी ऋषि महाराज ने देखो, विश्वामित्र के वाक्यों को शान्त कर दिया।

ब्रह्म हत्या

मेरे पुत्रों! उनसे यह प्रश्न किया गया कि महाराज! कि अमृतं ब्रह्मे उदगं ब्रह्वे वर्णनं उन्होंने कहा कि देखो, राजा इस राष्ट्र का उद्गाता है, उदगीत गाने वाला है। उन्होंने कहा नही उद्गीत हो ब्राह्मण गाता है, उद्गीत तो ब्राह्मण ही गाता है, ब्रह्मणं ब्रह्मे जो अपनी ब्रह्म हत्या नही होने देता है। समाज में मानो देखो, वह ब्राह्मण ही उद्गीत गाता है, और वही उद्गाता कहा जाता है जिसका आत्मा मानो देखो, ब्रह्मणं ब्रह्मे देखो, ब्रह्म हत्या नही होने देता वह ब्राह्मण है, ब्रह्म हत्या किसे कहते हैं, वेद के ऋषि ने उत्तर देते हुए कहा क्या देखो, ब्रह्मणं ब्रह्मे भूतं मानो देखो, जो आत्मा की प्रेरणा को दमन करता है। आत्मा की प्रेरणा को जो मृतक कर लेता है, वह देखो, ब्रह्म हत्यारा है वह ब्रह्मणं ब्रह्मे वह ब्राह्मण मानो देखो, वह उद्गाता के सुयोग्य नही कहलाता और जो मानो देखो, वह अपनी आत्मा के अनूकुल क्रियाकलाप करता है। उद्गीत गाता है, वही मानो देखो, ब्रह्म हत्या से मानो देखो, उपराम हो जाता है।

महाराजा रघु का याग

आत्मा की प्रेरणा

तो विचार आता है बेटा! मैं ब्रह्म हत्या की चर्चा नही कर रहा हूँ, परन्तु केवल यह कि ब्रह्म हत्या जिस राजा के राष्ट्र में होती हो या राजा करता हो उस राजा का राष्ट्र देखो, अग्नि का काण्ड बन करके रहेगा और देखो, जिस राजा के राष्ट्र में ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ पनपती रहती हैं, और नाना प्रकार की रूढ़ियाँ है, वो आत्मा आत्म हत्या करती रहती है ब्रह्म हत्या करती रहती हैं तो राजा का राष्ट्र निष्क्रिय हो जाता है।

बेटा! आज इस सम्बन्ध में, कोई विशेष चर्चा नहीं। देखो, महात्मा विश्वामित्र ने कहा-प्रभु! मुझे अपने वाक्या उच्चारण करने दीजिए, जालवी ने कहा हे प्रभु! उद्गीत गाईए मेरे विचार में तो यह है कि देखो, यह याग होना चाहिए, देखो, अमृतं देखो, अश्वमेध याग करो या सर्वांग याग करो, राजा अपनी राष्ट्र की प्रजा को मानो देखो, उनकी भावनाओं का याग होना चाहिए, उनके साकल्य और उनका दुरूपयोग नही होना चाहिए, ऐसा मेरा मन्तव्य है कि राजा के राष्ट्र में यागां भूतं ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने सर्वांग याग का संकल्प किया है। वह संकल्प पूर्णता को प्राप्त होना चाहिए, आत्मा की प्रेरणा है, आत्मा की प्रेरणा के अनुसार मानव को क्रियाकलाप करना चाहिए। बेटा! देखो, महात्मा विश्वामित्र, अपने आसन पर विद्यमान हो गये, विद्यमान हो जाने के पश्चात उन्होंने महर्षि विभाण्डक मुनि से कहा कि महाराज! आप बड़े तपस्वी हैं, और तपस्या ही इनका निर्णय दे सकती हैं, उन्होंने कहा कि मेरे विचार में तो विभाण्डक जी बोले कि मेरे विचार में तो राजा के राष्ट्र में याग होना चाहिए, सर्वांग याग होना चाहिए, द्रव्य तो द्रव्य याग का है, और याग द्रव्य का है। एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं, क्योंकि याग में इतना साकल्य प्रदान किया जाता है, देवता उससे प्रसन्न होते हैं, और जितना देवतव आ जाता है, उतना ही मानव में महानता होती है, और जितनी महानता होती उतना राष्ट्र ऊर्ध्वा को प्राप्त होने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् उच्चारण करके ऋषि अपने आसन पर विद्यमान हो गयें। मेरे प्यारे! इतने में महर्षि भारद्वाज से प्रश्नं ब्रहे मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा कि मेरे विचारे में तो यह आता है कि राजा के राष्ट्र में मानो देखो, सदैव यागों का व्यवधान होना चाहिए, और याग का अभिप्रायः यह है कि राजा के राष्ट्र में दुरिता नही होनी चाहिए और जब दुरिता नही होगी तो मानो देखो, यह समाज पवित्र बनेगा, महानता की ज्योति जागरूक हो जाएगी। इसी प्रकार उन्होंने वर्णन करते हुए कहा क्या राजा के राष्ट्र में विज्ञान होना चाहिए, और विज्ञान मानो उड़ान में उड़ने वाला हो और वही मानो देखो, ध्रुव है, और वही ध्रुव है, तो वही सूर्य मण्डल है और वही सूर्य है, तो वही मानो देखो, ध्रुव कहलाता है। सब मण्डलों का तारतम्य होना चाहिए, राजा वह पवित्र होता है, जो राजा मानो देखो, मृत्यु लोक में रमण करने वाला हो विष्णु ही उसका उद्गीत गाता है। राजा का नाम विष्णु हैं। जैसे यज्ञ को हम विष्णु देते हैं, राजा का नाम विष्णु हैं। और वह विष्णु मानो अपने यत्रों में विद्यमान हो करके अपने राष्ट्र में भू मण्डल में भ्रमण करता हुआ मानो देखो, वह लोक-लोकान्तरों की उड़ान उड़ने वाला हो ऐसा ही राजा देखो, विष्णु बन करके और वह विष्णु बनता है राष्ट्र देखो, याज्ञिक होने से जब याग उसका ऊर्ध्वा में गमन करता है। तो वह लोक-लोकान्तरों की उड़ाने उड़ने लगता है मेरे पुत्रों! इतना वाक् उच्चारण करके महर्षि विभाण्डक और भारद्वाज दोनो अपने परस्पर कुछ विचार-विनिमय करके अपने आसन पर विद्यमान हो गये। मेरे प्यारे! देखो, नाना प्रकार का विचार यह हुआ किया कि याग होना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, सर्वांग याग की भूमिका बनने लगी और भूमिका बन करके ऋषि-मुनियों ने एक स्वर में यह कहा कि हम वशिष्ठ मुनि महाराज के विचारों को जानना चाहते हैं, सर्वत्र ऋषियों का तो एक ही मत है, क्या याग होना चाहिए उद्गीत गाना चाहिए। मानो देखो, उदगम् ब्रह्मण ब्रहे व्रतं क्योंकि राष्ट्र उसी से पवित्र बनता है, तो मानो देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने यह कहा कि क्या देखो, यह उच्चारण कर रहा हूँ, वेद कहता है सु वर्णनं सु व्रतं योगां भूतं वर्णसुतं यज्ञा ब्रहे वृत्ति उन्होंने एक वाक् कहा वशिष्ठ जी ने कि राजा के

महाराजा रघु का याग

राष्ट्र में क्या परमात्मा के राष्ट्र में तो जितना भी क्रियाकलाप हो रहा है, चाहे वह परमाणुओं का आदान-प्रदान हो रहा है, चाहे वह परमाणु सूत्र रूप में विद्यमान हैं। परन्तु चाहे वह सुगन्ध रूप में वह सर्वत्र एक याग हो रहा है, वह अपने में याग करते हैं तो जैसे एक-एक परमाणुओं को निगलता हुआ, त्यागता हुआ, सुगन्ध देता हुआ, अपने में प्राण वर्धक देता हुआ, याग कर रहा है। इसी प्रकार राजा को भी अपने राष्ट्र में मानो देखो, याग का अधिकार है, याग होना ही चाहिए और याग सदैव होना चाहिए यह राष्ट्र एक यज्ञशाला है, और यहाँ मानो देखो, प्रजा भी यहाँ आहुति दे रही है।

मानो देखो, माता का गर्भाशय एक प्रकार की यज्ञशाला है, उसमें मानो सर्वत्र देवता अपनी आहुति देते हैं। जब मानो देखो, शिशु पनपता है, तो मुनिवरों! देखो, प्रत्येक देवता आहुति दे रहा है, चन्द्रमा अपनी कान्ति दे करके मानो अमृत की आहुति दे रहा है। सूर्य प्रकाश की आहुति दे रहा है, अग्नि मानो उष्णता की आहुति दे रही है, और आपोमयी ज्योति मानो शीतलता की आहुतियाँ प्रदान कर रहा है, पृथ्वी गुरूतव का मानो देखो, अप्रतं उसमें अभाव न हो जाएं। मेरे प्यारे! देखो, दिशाएं मानो देखो, श्रोत्रों का निर्माण कर रही हैं, यह तो संसार सर्वत्र एक प्रकार की यज्ञशाला है मेरे प्यारे! देखो, यह भी माता का गर्भाशय शिशु के प्रवेश हो जाने के पश्चात मानो देखो, सर्वत्र देवता याग करते हैं और उसका एक परिणाम बन करके आता है कि मानो शरी रूपी यज्ञशाला का निर्माण हो जाएं इसी प्रकार परमपिता परमात्मा ने जब इस संसार का सृजन किया, तो मानो सर्वत्र देवताओं का यह समूह बना करके यह एक प्रकार की यज्ञशाला का निर्माण हुआ, तो मानो यहाँ याग प्रत्येक क्षण में हो रहा है, आज कोई नवीन वाक् नही है कि राजा संकल्प कर रहा है, यहाँ तो प्रत्येक मानव याग कर रहा है। नेत्र मानो देखो, सुदृष्टि का याग कर रहा है, श्रोत्र अपने में सुश्रवण का याग कर रहा है, वाणी सत्य उच्चारण करने का याग कर रहा है, घ्राण सत्य सुगन्ध का याग कर रहे हैं, मानो देखो, प्रत्येक इन्द्रियं त्वचा प्रेमां ब्रह्मा वर्णनं एक दूसरे का एक दूसरे का सुघृत बनाती रहती है। तो महात्मा वशिष्ठ ने कहा क्या इनको ही जानने का नाम ही ब्रह्मवेत्ता बनना है, इसीलिए याग होना चाहिए।

सर्वाङ्ग याग

मेरे पुत्रों! देखो, सर्वत्र ऋषि-मुनि बड़े प्रसन्न हुए उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि-मुनियों का जो अपना-अपना मन्तव्य रहा है, वह बड़ा विचित्र रहा है, और बड़ी विचित्रता में देखो, यज्ञशाला के निर्माण के लिए, ऋषि वह अपनी-अपनी क्रियाओं का वर्णन करने लगे। उन्होंने कहा महाराज! याग सर्वांग याग किसे कहा जाता है? उन्होंने कहा सर्वांग याग किसे कहते हैं? जो राजा की प्रत्येक भावना मानो उसमें परिणत हो जाएं, प्रत्येक इन्द्रियाँ उसमें संलग्न हो जाएं और उसका एक साकल्य बनाएं तो आध्यात्मिक रूप बनता है। और राजा के राष्ट्र में जितना द्रव्य है, द्रव्य मानो देखो, भौतिक रूप में यह पंच महाभूतों का मानो देखो, साकल्य है ये साकल्य नही बन पाता है, परन्तु देखो, यह कदापि नष्ट नही होता, इसको हम सर्वांग नही कह सकते सर्वांग उसे कहते है, द्रव्य जितना भी है, राजा के द्वारा अपना पन है, उस अपनेपन का साकल्य बनाएं जाएं, और राजा की प्रत्येक इन्द्रियाँ मानो देखो, उस द्रव्य उस याग में परिणत हो जाएं, संलग्न हो जाएं।

मेरे पुत्रों! उसे सर्वांग याग कहा जाता है याग का अभिप्रायः यह है कि जितना मेरे द्वारा द्रव्य है उस द्रव्य का मैं सर्वांग याग कर रहा हूँ मानो देखो, सर्वांग याग तो होता ही नहीं क्योंकि द्रव्य देते रहते हैं सूर्य अपनी किरणों के द्वारा ऊर्ज्वा देता है, वह उसका द्रव्य है क्योंकि वह मानो देखो, उससे स्वर्ण की धातुओं का जन्म होता है, जल को शक्तिशाली बनाया जाता है, रत्न और परमाणुओं का निर्माण होता हुआ, मानो देखो, स्वर्ण के परमाणु, एक दूसरें में रत्त रहते हैं, तो द्रव्य सर्वांग याग कैसे करोगे? मानो प्रायः यह भी उसके द्वारा जितना उसके द्वारा

अपनापन जितने अपनेपन के स्वाभिमान है सुव्रतं है मानो देखो, उसका वह याग कर रहा है। अरे, मानो तेरा जो सु अभिमान है मानो देखो, वह तेरी इन्द्रियां का नृत्त है, तेरी इन्द्रियाँ मानो देखो, कर्म, वचन या मन, मस्तिष्क और मानो देखो, उसमें एक सूत्र में रहनी चाहिए। जब तू याग में परिणत होता है मानो तेरा याग, जब मन मस्तिष्क देखो, मन, कर्म, वचन एकाग्र होंगे और द्रव्य के त्यागने की प्रवृत्ति रहेगी, और देवताओं को तू प्रसन्न करता रहेगा, तो तेरा यहाँ तक जो विचार जहाँ तक तेरा चित्र जहाँ तक तेरी प्रतिभा जाएगी वहाँ तक तुझे पवित्र बनाती चली जाएगी।

तो मेरे पुत्रों! देखो, यह वाक् ऋषि ने वशिष्ठ ने वर्णन किया और महात्मा वशिष्ठ ने कहा कि यागां ब्रह्मे वर्णनं यह तो याग तो स्वतः हो रहा है, मानो देखो, जैसे सूर्य अपनी किरणों के द्वारा ऊर्ध्वा में याग कर रहे हैं, चन्द्रमा अपनी अमृतमयी धारा को कान्ति दे करके याग हो रहा है, रात्रि परमाणुओं को संघर्ष में मानो संघर्ष होता हुआ याग हो रहा है, इसी प्रकार प्रत्येक क्षण में देखो, याग का चलन चल रहा है। यह परमात्मा का याग हो रहा है, और मानव का याग जब होता है, जब यह अपनी इन्द्रियों का साकल्य बना लेता है अरे, इन्द्रियों का साकल्य बनाने के लिए देखो, रूप है, रस है, गन्ध और देखो, शब्द अमृति गुरुतव्यं ब्रह्मे इसको ले करके जब उनका साकल्य बनाता है, और वह मानो देखो, रात्रि समय वह अभ्यास करता है, और अभ्यस्त हो करके और इनका साकल्य बना करके जब आत्मं भूतं ब्रह्मे जब हृदय रूपी यज्ञशाला को बना करके और इन्द्रियों के साकल्य की जब आहुति देता है, तो वह याग मानो देखो, सर्वांग याग कहा जाता है।

मेरे पुत्रों! देखो, मुझे वह वाक् स्मरण आते रहते हैं, आज मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है, जैसे आज मैं मानो देखो, वशिष्ठ मुनि महाराज के उस मानो सभा में विद्यमान हूँ। आज पुनः से वह संस्कार जागरूक हो गएं हैं, जहाँ ऋषि-मुनियों का अध्ययन और ऋषि-मुनियों की प्रतिभा इतनी ऊर्ध्वा में रही है। मेरे पुत्रों! देखो, राजा रघु और मानो देखो, उनकी देवी ने यह कहा-प्रभु! हम जो याग करना चाहते हैं, वह सर्वांग याग अमतं ब्रह्मे देखो, हमारा सर्वांग जो हमारा मन, कर्म, वचन है, वह राष्ट्र के लिए है, हमारा जो कर्म वचन है, वह परमात्मा के लिए है, हमारा मन, कर्म, वचन है, वह सर्वत्र मानो याग के लिए है और याग उसे कहते हैं। जो अमृतं तीनों गुण उन्होंने तीनों गुणो का मनका बना करके और ब्रह्म को कैसे प्राप्त होते हैं। ऐसे ब्रह्मनिष्ठता में परिणत होना चाहते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने अमृतं देखो, यह वाक् मन्तव्य दे करके यह निर्णय कर दिया, क्या प्रभु यागां भूतं ब्रह्मे यागा ब्रहे याग होना चाहिए तो बेटा! देखो, इतने में अमृतं शिल्पकारों को आज्ञा दी गई क्या यज्ञशाला का निर्माण किया जाएं। मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आता रहा है, उन्होंने देखो, यज्ञशाला का निर्माण किया और यज्ञशाला का जब निर्माण हो गया, तो मुनिवरों! देखो, वहाँ निर्वाचनं ब्रहे देखो, यज्ञशाला प्रारम्भ होने से पूर्व निर्वाचन की पद्धतियाँ मानी जाती हैं। क्योंकि निर्वाचन की प्रणाली उस काल में विशिष्ठ इसीलिए मानी गई हैं, क्या उसमें बुद्धिमान और याज्ञिक चिन्तन करने वालें पुरूष महः मानो देखो, विशिष्ठ माने जाते हैं, और उसका मानो देखो, परीक्षाफल आता उनकी विचाराधाराओं से लिया जाता, उसके पश्चात उसका निर्वाचन होता। इसका अभिप्रायः यह होता है, अमृतं ब्रह्मे मानो देखो, यह अमृत को पान करने वाला है, जो तपस्वी हो वह याग का अधिकार उसे होता है। मानो देखो, एक मानव देखो, ब्रह्मणं ब्रहे एक याग का पुरोहित या आचार्य बन रहा है। यदि आचार्य का मन मस्तिष्क उस याग में नही है, तो याग सफल नही होगा। यदि यज्ञमान का मन, कर्म, वचन उसमें नही है, तो याग उसका भी सफलता को प्राप्त नही होगा। मानो देखो, यागां भूतं पुरोहित इतना तपा हुआ हो, जिससे उसके मनों में या की धारा उसे स्पर्श करती हों, मानो देखो, उसका निर्वाचन होता रहा है। राजा देखो, वह पुरोहित यज्ञमान उसका निर्वावन करता रहा है। मैं आज बेटा! देखो, इस सम्बन्ध में कर्म काण्डों में तुम्हें ले गया

हूँ, कर्मकाण्ड की पद्धति बड़ी विचित्र मानी गई है। प्रत्येक भावना मानो देवताओं से सम्बन्धित होनी चाहिए। चाहे वह ब्राह्मणं ब्रहे चाहे वह वेद का उद्गाता हो वेद का उद्गीत गाने वाला हो उद्गीत ऐसा हो जिससे उसका मन वचन और देखो, आत्मा से उसका समन्वय होना चाहिए। आत्मा जिस कार्य से प्रसन्न होता हो मेरे पुत्रों! देखो, इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नही, केवल यह की मानव की जो कर्मकाण्ड की पद्धति हैं वह इतनी विचित्र होनी चाहिएं कर्म काण्ड की धाराएं तो मैं कल ही प्रगट करूंगा। आज तो केवल इतना संकेत है क्या यज्ञशाला में विद्यमान होने वाला ब्राह्मण सुचरित्र हो ब्रह्म का उद्गीत गाने वाला हो, इस उद्गीत का समन्वय केवल देखो, वाणी से हो और वाणी का समन्वय देखो, प्राण से हो और प्राण का समन्वय देखो, चन्द्रमा से हो और चन्द्रमा का समन्वय, सूर्य से हो और सूर्य का समन्वय, मानो देखो, अग्नि से प्रदीप्त होता हुआ मुनिवरों! देखो, द्यौ में वह प्रवेश होने वाला शब्द है। मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार उद्गीत गाता रहता है, उद्गीत गाता है उद्गीतां ब्रह्मा देखो, उसे उद्गाता कहते हैं। अमृतं ब्रह्मा लोकं ब्रह्वा वह अमृत को पान करने वाला देखो, याज्ञिक पुरूष मुझे स्मरण आता रहा है, जब मानो देखो, त्रेता के काल में पूर्व काल में जब यागों का चलन हमारे यहाँ वशिष्ठ प्रत्येक गृह में रहा है। तो तपस्वी जन भयंकर वनों से आ करके ब्रह्मचरिष्यामि जो ब्रह्म को अपने में धारण करने वाले हों, वह याज्ञिक बन करके और वह सुगन्ध जब प्रविष्ट होते हैं। तो मानो उससे सर्वत्र गृह पवित्रता की आभा में परिणत होता रहा है। मेरे प्यारे! इसीलिए मैंनें पुनः कहा है क्या वेदों का गान गाने वाला उद्गीत गाने वाला गान गाने वाला हो, और वह देखो, जटा पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त और अनुदात्त में वेदों का गान गाने वाला हो, तो मानो देखो, उससे सर्वत्रता में पवित्रता का एक वातावरण हो जाता है। उसका अपना जीवन पवित्रता की धारा में तत्पर हो जाता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट नही करने आया हूँ, आज का विचार-विनिमय यह क्या हम बेटा! देखो, अपने में पवित्र बनने के लिए सदैव तत्पर रहें, और विचार-विनिमय करते रहें कल बेटा! देखो, मुझे समय मिलेगा मैं यज्ञशाला में जो मानो कर्मकाण्ड की पद्धति है, उसके ऊपर अपना कोई विचार दे सकूंगा। मानो देखो, उसके ऊपर हमारा विचार-विनिमय प्रायः होता रहा है। आज का विचार केवल हमारा इतना क्या राजा रघु के यहाँ किस प्रकार का याग हुआ, और राजा रघु के यहाँ मानो देखो, किस प्रकार की है, यह वाक् कल उच्चारण कर सकेंगे। आज का विचार-विनिमय केवल हमारा यह क्या मुनिवरों! देखो, ऋषि-मुनियों की देखो, विचारधाराएं और तपस्वीयों का विचार लेना बहुत अनिवार्य है। क्योंकि तपस्वीयों के द्वारा ही याग होते हैं, और जितना तपस्वी मानो देखो, ब्रह्मचरिष्यामि जितना भी याग में सम्मिलत होने वाला मानो देखो, याग में एक महानता की ज्योति जागरूक हो जाती है आओ, बेटा! मैं इस प्रकरण को पूर्व काल में भी मैंने कई समय वर्णित किया है। आज का विचार-विनिमय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और वेद की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं बेटा! देखो, उद्गीत गाते रहें वेदों का गान गाने मानो वह वाला वास्तव में गान गाता है। वह मन मस्तिष्क के द्वारा मन, कर्म, वचन के द्वारा गान गाता है कल बेटा! मानो कौन इसका मूर्ध्वा है, कौन इसका पुरोहित है, किसे अधिकार है यह चर्चाएं कल कर सकेंगे। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा राजा पुरोहित जनों से जो प्रश्न करता है। वह किस प्रकार के हैं। ऐसा वाक् बेटा! कल उच्चारण करेंगे समय मिलेगा शेष चर्चांए कल प्रगट करेंगे अब वेदों का पठन-पाठन होगा। ओ३म् देवाः वायु गतं मनां आ पा रथं विश्वा गतं गा या यं मया रथं भविते मनाः यं सर्वा यं रेवाः मनु वन्धना आत्मा रथं आ पा यं सर्वे श्वंजना यं भविते देवाः यौ गतं दधि रथं आ पां

५ महाराज रघु का याग १० ०३ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जो रहे थे ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान का प्रायः वर्णन होता रहता है। क्योंकि परमपिता परमात्मा का ज्ञान, अनन्तमयी माना गया है, अथवा उसका विज्ञान एक महानता में रमण करता रहा है। क्योंकि हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में भी प्रत्येक मानव, प्रत्येक तपस्या करने वाला ध्यानावस्थित हो करके उसकी महिमा को जानता रहता है क्योंकि इन्द्रियों का विषय नही है कुछ ऐसे प्राणी होते हैं जो जानना चाहते हैं। कुछ ऐसे प्राणी होते जो जानना चाहते हैं कुछ इस प्रकार के प्राणी है जो उसके ऊपर निर्णायक, अपने विचारों को स्थिर करना चाहते हैं, मानो उस परमपिता परमात्मा में स्थिर हो जाऊं मेरे पुत्रों! देखो, परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध जो सर्वत्र है मानो यह भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार क्यों रहते हैं यह एक प्रकार का विषय है प्रत्येक मानव उसमें विचारता रहता है परन्तु आज हमारे यहाँ एक वेदमन्त्र आया है, और वह वेदमन्त्र यह कहता है, अग्नं ब्रह्मा वर्णो स्वस्तं दीक्षाम रूद्र वरस्सुतं ब्रह्वा वेद का मन्त्र यह कहता है कि प्रत्येक मानव इस आकांक्षा में मानो वह लगा रहता है जैसे उसके अन्तःकरण में, संस्कारों का उद्बोधन होता रहता है। उसी प्रकार उसका बाह्य और आन्तरिक जगत दोनो मानो देखो, परस्पर विरोधी बन जाते हैं, और जिस समय ब्रह्वे वह यह चाहता है कि मैं परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में स्थिर हो जाऊं तो मानो देखो, वह वेदमन्त्र को ले करके गान गाता है और गान गाता हुआ वे परमपिता परमात्मा की सृष्टि को दृष्टिपात करके वह अपने में निश्चल हो जाता है और वह कहता है कि परमतिपा परमात्मा को हम सर्वागं मानो देखो, एक मानो उसकी रचना में रमण कर रहा हूँ। एक मानव के हृदय में यह आकांक्षा लगी रहती है, कि परमात्मा है अथवा नही हैं। तो उसी विचारों में लगा रहता है कि परमात्मा है अथवा नही, तो मानो देखो, उसके ज्ञान की सूक्ष्मता मानी जाती है। एक मानव इस वाक् में लगा हुआ है कि आत्मा और परमात्मा मानो एक सूत्र में एक सूत्रीकरण में स्वीकार करूं अथवा नहीं। तो मानो देखो, जो इस प्रकार के विचारक पुरूष होते हैं वह अपने में मानो ब्रह्म को दृष्टिपात करते हैं ब्रह्म को अपने में और उसको विचारते-विचारते मुनिवरों! देखो, मौन हो जाते हैं, क्योंकि अन्त में बेटा! वह वाणी का विषय नहीं रहता, क्योंकि नेत्रों का इन्द्रियों का कोई विषय इस परमात्मा का नही रहता तो परमात्मा के सम्बन्ध में बेटा! वह अपने में निर्णायक नही हो पाता। तो वह अन्त में अपने में मौन हो जाता है अपने में मानो देखो, उस ब्रह्म को दृष्टिपात करता वह अपने में निश्चल हो जाता है और वह विचार-विनिमय करता है कि मैं वास्तव में मैं अपने में मानो ब्रह्म को दृष्टिपात करूं, और मैं उसी में रत्त हो जाऊं। मैं उसी में ब्रह्मचरियामि बन जाऊं। तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, उसकी विचारधारा में, अमृति आवृत हो जाता है वह अमृतमयी बनता है, क्योंकि संस्कारों का जगत है, और इन्द्रियां से कोई मानव, उस ब्रह्म को निश्चय करना चाहता है वह उसको जानना चाहता है तो वह हो नही पाता। क्योंकि यह इन्द्रियों का विषय नही हैं, इन्द्रियों में ज्ञान और विज्ञान हैं, इन्द्रियों में परमाणुवाद है, इन्द्रियों में प्रभु के गान गाने की सत्ता है, परन्तु देखो, वह अपने में अपनेपन को दृष्टिपात करके मौन हो जाता है। और मौन हो करके मानो देखो, वह उसका निर्णायक नही बन पाता, ऋषि-मुनियों ने जालवी ने तो यहाँ तक कहा है कि वह मौन हो जाता है, और मौन हो करके मानो देखो, इन्द्रियों के सब विषयों का साकल्य बन जाता है और साकल्य में मानो जब वह परिणत हो जाता है तो अन्त में वह मौन हो जाता है।

महाराजा रघु का याग

तो विचार आता रहता है बेटा! इस सम्बन्ध में कोई अपना विचार देना नही चाहता हूँ केवल यह कि वेदमन्त्र हमें यह उद्गीत गा रहा है कि हे मानव! तू मानो देखो, इन्द्रियों को संयम में बनाता हुआ साकल्य बनाता हुआ, तू परमात्मा की सृष्टि के निहारता रह और निहारते-निहारते अन्त में बेटा! वह मौन हो जाता है। जैसे मानव के चक्षु हैं, वह सबसे प्रथम मानो देखो, स्थूल रूप को दृष्टिपात करते हैं, वह सूक्ष्मता में परिणत हो जाते हैं, मानो कहीं ध्वनि में चले जाते हैं, कहीं तरंगों में परिणत हो जाते हैं, अन्त में देखो, नेत्रों का विषय शान्त हो जाता है। मेरे प्यारे! वह चित्त के मण्डल में भी प्रकाश का ही दृष्टिपात करते हैं, और शब्द मानो देखो, वह अग्नि की धाराओ पर वह शब्द जाता है प्रकाश जाता है उसको भी अपने में धारयामि बना लेते हैं।

तो विचार आता रहता है कि परमात्मा का जो चिन्तन है, वह प्रायः होना चाहिए। परन्तु अपना चिन्तन होना आत्म चिन्तन होना बहुत अनिवार्य है, आत्म चिन्तन में प्रवेश करता हुआ अपने अन्त में इन्द्रियों का विषय शान्त हो जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! इस सम्बन्ध में कोई विचार-विनिमय नही केवल आज का विचार हमारा यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती को दीक्षान्त में परिवर्तित करते चले जाएं। एक मानव देखो, अपने आचार्य के समीप जाता है, आचार्य उसे दीक्षांत बनाता है, और दीक्षांत करते हुए दीक्षा जब लेता है जब वह बुद्धिमता हो जाता है। बुद्धिमान वह हो जाता है तो आचार्य उसे दीक्षा देता है वह उसे दीक्षांत दे करके अन्त में मौन हो जाता है मेरे प्यारे! मुझे बहुत पुरातन काल हुआ जब बेटा! मैं प्रायः अध्यापन का कार्य करता रहता था महाराजा अश्वपति के यहाँ जब नाना देखो, अमृतं विद्यालां भूतं ब्रह्मा जब आचार्य के कुल में अध्ययन किया जाता था तो आचार्य नैकिवाद और चरित्रवाद सब प्रकार का उवदेश दे कर उसे नैतिकता में परिणत करके उसको दीक्षान्त बना देते थे। हमारे यहाँ आचार्य कहते हैं कि दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात उसके पालना में परिणत हो जाओ। तो मुनिवरों! देखो, वह दीक्षांत में पविर्तित परिणत हो जाते हैं तो हमें दीक्षा लेनी चाहिए और दीक्षा उसे कहते हैं, जब बुद्धिमान मानो देखो, वेदों का अध्ययन करता हुआ, और विचार-विनिमय करता हुआ वह ज्ञान, कर्म, उपासना में परिणत होता हुआ, जब ज्ञान प्रयत्न और उपासना में जो निहित हो जाता है, उसे दीक्षा प्राप्त हो जाती है।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता है जैसे ब्रह्मचारी सत्यकाम देखो, जैसे गऊओं के पीछे चले गएं आचार्य ने उन्हें वर्णन कराया तो देखो, महात्मा गौतम ने बारह वर्ष के पश्चात जब वह मानो देखो, बारह-बारह वर्ष के दो अनुष्ठान किये, ब्रह्मचारी ने और गऊए चार सौ से एक सहस्र हो गई। जब वह आचार्य के कुल में आ पंहुचे, उसके पश्चात उन्होंने दीक्षान्त उपदेश दिया और दीक्षा दे करके बेटा! उसे मानो अपनी अवृत्तियों में से मुक्त किया और यह कहा कि जाओं। तुम आत्मवेत्ता बनो मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही केवल यह क्या हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, बड़ी विचित्र-विचित्र आख्यिकाएं हमें वैदिकता में हमें प्राप्त होती रहती हैं हम उनके अनूकुल अपने जीवन को और राष्ट्र को उद्गीत रूप में परिणत कर देते हैं तो राजा के राष्ट्र की जो शिक्षा प्रणाली है वह तपस्वियों का क्षेत्र बन जाता है क्योंकि ब्रह्मचारी भी तपस्वी है, आचार्य भी तपश्चर कहलाता है। तो मानो देखो, वह आचार्य तपस्या में परिणत हो करके अपने में दीक्षांता को प्राप्त करता हुआ, अपने में महानता का उपदेश महानता की प्रतिभा में रमण करने लगता है।

आओ, बेटा! इस सम्बन्ध में, मैं विशेष चर्चा नहीं देखो, बहुत विशाल एक विचार है, परन्तु आओ, मैं तुम्हें देखो, वह महाराजा मैं अमृतं देखो, मैं रघु वंश की चर्चा कर रहा था, महाराजा रघु के याग की चर्चा कर रहा था, जहाँ बेटा! देखो, वह प्राणं ब्रह्माः वर्णं ब्रहे देखो, यज्ञशाला का निर्माण हो गया था। यज्ञशाला का निर्माण होने के पश्चात ब्रह्मचारी अपने-अपने आसनों पर विद्यमान हैं, मानो देखो, वहाँ याग के प्रारम्भ में जब आचार्यों जनों ने,

उन्होंने देखो, निर्वाचन किया तो उन्होने रात्रि के समय निर्वाचन से पूर्व, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज, माता अरून्धती, महर्षि विभाण्डक आदि ऋषियों को एकत्रित करके विश्वामित्र, उन्होंने यह कहा कि हे प्रभु! मैं देखो, कल मैं निर्वाचन करूंगा, तो यज्ञ में निर्वाचन कैसे होना चाहिए? महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज बोले वह ब्रह्मवेत्ता थे, उन्होंने कहा कि तुम्हें निर्वाचन करना है एक तो ब्रह्मा निर्वाचन होना है, उसके पश्चात मानो देखो, ब्रह्मणो ब्रहे उद्गाता और उसके पश्चात अध्वर्यु और देखो, यज्ञमान, अपने आसन पर विद्यमान हो जाता है और पुरोहित जन मानो देखो, उसकी संरक्षणता में विद्यमान हैं, मानो देखो, इस प्रकार, उन्होंने उद्गीत गाया, तो रघु की देवी ने यह प्रश्न किया श्वदेवी ने क्या हे प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ मेरे हृदय में यह आकांक्षा लगी है, जानने की वशिष्ठ मुनि बोले कि तुम उद्गीत गाओ, जो तुम्हें उच्चारण करना है, उन्होंने कहा-प्रभु! सबसे प्रथम आप ब्रह्मा का निर्वाचन क्यों करते हैं? उन्होंने कहा कि ब्रह्मा का निर्वाचन इसलिए किया क्योंकि ऋषि-मुनियों ने याग की एक पद्धति को, सृष्टि के प्रारम्भ में मानो उसका प्रादुर्भाव हुआ, और ऋषि-मुनियों ने मानव के कर्म काण्ड के लिए मानो देखो, पूर्व कल्प के आधार पर ही, जैसा परम्परा चली आ रही है, सृष्टि के आदि में सृष्टि के मानो अंगो और उपांगो के द्वारा ही, इनकी प्रतिभा का जन्म होता रहा है। तो मानो देखो, ब्रह्मा क्योंकि ब्रह्मा उसे कहते हैं जो संरक्षण करने वाला है, जो उसमें अवृत कहलाता है, मानो देखो, जैसे परमपिता परमात्मा ब्रह्मा है, और वह मानो देखो, इस संसार रूपी यज्ञशाला का जो निर्माण किया था, तो निर्माण करने से स्वयं परमपिता परमात्मा ब्रह्मा बने थे, और परमात्मा ब्रह्मा बने और आत्मा यज्ञमान बना क्योंकि जितना भी ये संसार रचा जाता है वह आत्मा के लिए रचा जाता है। आत्मा यज्ञमान है, और यह जो पंच महाभूत हैं जिसमें सबसे प्रथम मानो देखो, अग्नि है, तरलतव मानो देखो, जल है और पृथ्वी है और वायु है, अन्तरिक्ष, यह मानो देखो, यह मानो देखो, पंचाम भूतं कहलाती है। तो यह पंच महाभूतों की प्रतिभा के द्वारा ही यह मानो देखो, यह होता बन करके, इस संसार रूपी यज्ञशाला का संचालन कर रहे हैं।

तो परमपिता परमात्मा मानो देखो, ब्रह्मा हैं, आत्मा यज्ञमान है, यज्ञमान जो मानो देखो, उसे यज्ञशाला में मूर्ध्वा कहते हैं, जिसके लिए यह यज्ञ रचा जाता है, जिसके लिए यह संसार का निर्वाचन होता है, अथवा निर्माण करने वाला निर्माण करता है, तो यह अपने में पंच महाभूतों का लोक कहा जाता है। यह संसार भी लोक है। जहाँ प्राणी आत्मा वास करता है, उसी का नाम लोक है, चाहे वह लोक मानो देखो, पृथ्वी मण्डल हो, चाहे वह सूर्य मण्डल हो, चाहे वह चन्द्र मण्डल हो, मानो देखो, उस सर्वत्रता का नाम लोक कहा जाता है। लोक कहते हैं, जहाँ वास किया जाता है, तो मेरे प्यारे! देखो, लोकां भूतं ब्रह्वे वर्णा तो यह अमृत कहालाया जाता है। तो इसीलिए देखो, यज्ञशाला का जब निर्माण होता है, तो यज्ञशाला में कौन विद्यमान हैं? यह आत्मा यज्ञमान बन करके मानो देखो, हूत करता है, और हूत करके मुनिवरों! देखो, पंच महाभूत उसके सहायक बन जाते हैं, और सहायक बन करके वही आत्मा का लोक बन जाता है। तो बेटा! देखो, इस संसार में अमृतं ब्रह्मे यह परमात्मा को ब्रह्मा कहा जाता है। माता के गर्भस्थल में माता के शरीर के जब निर्माण किया तो यह भी एक यज्ञशाला है, और वह यज्ञशाला इसीलिए क्योंकि वहाँ आत्मा विद्यमान हैं, आत्मा का माता का शरीर ही लोक कहा जाता है, और वह निर्माण करने वाला निर्माणवेत्ता है। वह पंचमहाभूतों से निर्माण करता है, और वह अपनी आभा में निर्माणित हो जाते हैं, तो शिशु के आते ही देवता उसके द्वारा मानो देखो, उसकी एक रचना हो जाती है। नाना प्रकार की बुद्धियों का निर्माण नाना प्रकार के वनस्तव का निर्माण नाना प्रकार की कृतिका का निर्माण हो जाता है। चित्त के मण्डल का भी निर्माण हो जाता है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, चित्त के मण्डल का आत्मा के साथ जो संस्कार शेष भाग रह जाता है, उससे चित्त का

मगडल बनता है, और उसी चित्त के मगडल के बनने से मानो प्रत्येक इन्द्रियों का व्यवधान मानो रचना के रूप में आता है। यदि आत्मा के साथ में कोई संस्कार नही रहेगा, तो इस शरीर के अंगो का उपांगो का कोई संस्कार नही बनता है, और उसके अन्तःकरण में जो संस्कार आन्तरिक जगत में जो संस्कार विद्यमान होते हैं, तो इसीलिए देखो, आत्मा शिशु के रूप में रहता है। आत्मा शिशु के रूप में रह करके उसी के द्वारा मनं ब्रह्मा वर्णं ब्रहे कृतं देवाः मानो देखो, वही तो अपने रूप में परिणत हो करके मन, बुद्धि, चित्त अहंकार की प्रतिभाओं का जन्म होता है। तो यह आत्मा का मानो देखो, गृह कहा जाता है, निर्माण करने वाला वह प्रभु हैं, वह देव है, और वे परमपिता परमात्मा की प्रतिभा में रत्त रहने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, जब देवी ने यह वाक् श्रवण किया तो वशिष्ठ मुनि महाराज ने धन्य है, प्रभु! आप ने ब्रह्मणं ब्रह्वे व्रतं आप ने ब्रह्म की चर्चाएं मुझे प्रगट की हैं, इसीलिए ब्रह्मा मानो देखो, निर्वाचन होना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा-प्रभु! उद्गाता का निर्वाचन क्यों होता है? उन्होंने कहा उद्गाता उसे कहते हैं, जो उद्गीत गाता है, जो मानो देखो, उद्गीत गाने वाला हो जो स्वरों से गान गाता है, स्वरों से गान गाता हुआ मानो देखो, आत्मा के क्षेत्र में वायुमगडल को बनाने वाला देखो, उद्गाता कहलाता है। क्योंकि वह जब स्वाहाः उच्चारण करता है, और अग्नि की धाराओं पर देखो, जो भी स्वाहाः उच्चारण किया जाता है, वह अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ में प्रवेश हो जाता है। क्योंकि वायुमगडल चाहिए साधक के लिए इसीलिए वह साधना में परिणत होता हुआ वायुमगडल को बनाता है। तो उन्होंने वायुमगडल ब्रह्मा इसीलिए याग की रचना होती हैं, क्योंकि वायुमगडल की जब शुद्धता में रचना हो जाती हैं, तो साधक अपनी साधना करने लगता है, साधना में परिणत हो जाता है। मन, कर्म, वचन को अपने में धारण करता हुआ मानो प्राण की प्रतिभा में अकृत हो जाता है।

तो विचार आता रहता है मानो देखो, इसीलिए उद्गाता उद्गीत करने वाला उद्गाता जब उद्गीत गाता है, और उद्गीतात का मुनिवरों! देखो, अघ्वर्यं ब्रह्मा अवृतं देवतवां ब्रहे मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा जब यह भी उन्होंने स्वीकार कर लिया। उन्होंने कहा नहीं देवी वाणी का सम्बन्ध चन्द्रमा से होता है, चन्द्रमा से रसों को लिया जाता है। वाणी का समन्वय सूर्य से होता है, उससे तेज लिया जाता है, और वाणी का समन्वय देखो, अग्नि से होता है, उससे उष्णता ली जाती है, और इसी वाणी का समन्वय जल से होता है, यहाँ उसमें रसों का अवधीर्ण हो जाता है। मानो इस वाणी का समन्वय अन्तरिक्ष से होता है, अन्तरिक्ष में मानो यह शब्द जाता है, और शब्द जब अन्तरिक्ष में प्रवेश करता है, तो वायु मगडल पवित्रता की तरंगो में तरंगति हो जाता है। वह द्यौ तक चली जाती है। मेरे प्यारे! देखो, यह वाक्य उच्चारण करते वशिष्ठ मुनि महाराज अपने में मौनता को धारण करने लगे। देवी ने कहा-प्रभु! यह भी मैंने स्वीकार कर लिया है, परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ, कि भगवन! उद्गाता अध्वर्युं ब्रह्मण व्रतं देवाः आपने उद्गाता की विवेचना तो की है।

अध्वर्यु

परन्तु हमारे यहाँ अमृतं ब्रह्मे मानो देखो, यह अध्वर्यु कौन है, उन्होंने कहा अध्वर्यु वह होता है, जो द्रव्य का स्वामी हैं, अथवा अध्वर्यु का कुबेर भी कहा जाता है, राजा भी अध्वर्यु को कहा जाता है, जो द्रव्य का स्वामी होता है, और स्वामी देखो, द्रव्यों से होता है, द्रव्य क्या होने चाहिए? मेरे प्यारे! देखो, द्रव्यां भूतं सबसे प्रथम जो द्रव्य है, वह मानव के द्वारा जो हिंसा से रहित हो हिंसा से रहित होने वाला जो याग है। वह अध्वर्यु को प्राप्त हो जाता है, मेरे प्यारे! अन्न इत्यादि पृथ्वी माता के गर्भ से वह नाना प्रकार के साकल्यों को ले करके उसका साकल्य बना करके देखो, विचारों में उसे परिणत कर देता है, वह मुनिवरों! देखो, वही अमृत बन करके देखो, अन्तरिक्ष में परिणत हो जाता है। अग्नि की धाराओं में सुगन्ध परिणत होती हुई मुनिवरों! देखो, देवतव को प्राप्त कर देती है,

वायुमण्डल को पवित्र बना देती है, महानता में ओत-प्रोत करा देती है। इसीलिए वह जो साकल्य है मानो देखो, उसका स्थूल रूप है, अपने-अपने पंच महाभूतों में वह अपने में रत्त होने वाला साकल्य है। जो मुनिवरों! देखो, मानव के शब्दों के द्वारा चित्र के द्वारा सुगन्ध के द्वारा मानो देखो, अग्नि की धाराओं पर परिणत हो करके वह द्यौ को प्राप्त हो जाता है। द्यौ से उसका समन्वय रहता है। तो हे देवी! देखो, यही देवतव को प्राप्त होने वाला है। तो आगे देखो, इस प्रकार जब ऋषि ने अपना वर्णन किया, तो उन्होंने कहा-प्रभु! यह स्वीकार कर लिया है। परन्तु राजा अध्वर्यु को कैसे कहते हैं? उन्होंने कहा अध्वर्यु उसे कहते हैं, जो संरक्षक होता है, हिंसा से रहित होता है, राजा भी देखो, वही पवित्र होता है, जो हिंसा से रहित होता है। राजा के राष्ट्र में यदि हिंसा होती है राजा के राष्ट्र में देखो, वह राजा हिंसक कहलाता है जिस राजा के राष्ट्र में वाणी के ऊपर सन्तुलन नही होता और वह राजा हिंसक होता है, जहाँ आत्मा की मानो देखो, मनो भावना को जहाँ नष्ट करने की राजा के राष्ट्र में प्रवृत्ति बन जाती है, वह राजा हिंसक कहलाता है, जिस राजा के राष्ट्र और मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता राजा नही होता वह राजा हिंसक कहलाता है। क्योंकि राजा का जो राष्ट्र है वह बुद्धिमानों से ब्रह्मवेत्ताओं से पवित्र बनता है, और कामधेनु गऊ होनी चाहिएं। क्योंकि गऊओ का दुग्ध उनका जो पदार्थ है उसको आहार करना चाहिए, क्योकि देवताओं ने उसको मथा है। सूर्य से मानो देखो, गो दुग्ध का सम्बन्ध रहता है, उसका सम्बन्ध बुद्धि से रहता है, और बुद्धि का जब निर्माण हो जाता है, तो वह मानव अपने में विवेकी बन करके देखो, राजा के राष्ट्र को उदीप्त बनाता है। इसीलिए राजा को हिंसक नही होना चाहिए। राजा वह इसीलिए उसको अध्वर्यु कहते हैं, क्योकि राजा के जो राष्ट्र हैं, एक प्रकार की यज्ञवेदी है, और यज्ञवेदी पर सर्वत्र प्रकार का क्रियाकलाप होता रहा है, मानो देखो, वह उसका रक्षक है, और रक्षक होने के नाते हिंसा रहित अहिंसा में परिणत होना चाहिए हिंसा से रहित राजा जब होता है, विवेक में परिणत होता है, ब्रह्मज्ञानी उसका आचार्य संरक्षण करने वाला वह राजा देखो, अध्वर्यु कहलाता है। उसके द्वारा जो द्रव्य है, उसके द्वारा जो ममता है, वह सब प्रभु की जब स्वीकार करता है। देवता की स्वीकार करता है, और देवता जो प्रजा में ओत-प्रोत होने वाला है, तो वह प्रजा का द्रव्य बन गया है, इदन्नम् यह मेरा नही ऐसा जब राजा स्वीकार करता हुआ, मानो देखो, पालना के श्रेष्ठता को अहिंसक बन करके चलता है, तो उसे अध्वर्यु कहते हैं।

इसीलिए याग जो होता है वह अहिंसा से रहित होता है जो मानो यह कहता है क्या मैं अमृतं ब्रह्मे एक समय मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक सयम यह प्रगट कराया क्या महाभारत के काल में मानो देखो, यागों में हिंसा का प्रारम्भ हुआ था हिंसा का प्रारम्भ इसीलिए हुआ कि क्योंकि बुद्धिमानों का और राजाओं का अभाव होने से राजा के द्वारा राष्ट्र स्वार्थी बन गया, और स्वार्थी हो करके विवेकी पुरूष नही रह्व बुद्धिमान न रहने से मानो देखो, राष्ट्र अभाव बन गया, ज्ञान का जब ज्ञान का अभाव हो जाता है, तो नाना प्रकार की रूढ़ियों का प्रादुर्भाव होता है और नाना प्रकार की रूढियां जब बनती हैं। तो हिंसा का वातावरण बन जाता है, एक दूसरा मानव मानव को नष्ट करने के लिए तत्पर हो जाता है, तो इसीलिए मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पुत्र के प्रश्नों का उत्तर भी दिया था। परन्तु इसीलिए राजा को अहिंसक होना चाहिए, राजा देखो, अहिंसक वह होता है, जो राजा देखो, ब्रह्मवेत्ता होता है, और ब्रह्मवेत्ता हो करके वह समय-समय पर अश्वमेध याग करने वाला अश्वमेध यागी वह राजा है। क्या राजा के राष्ट्र में बुद्धिमानों की सभा एकत्रित होनी चाहिएं। राजा उनके मध्य में विद्यमान होना चाहिए, और उसको ब्रह्मयाग जैसे राज जनक के यहाँ मानो सदैव ब्रह्मयाग होता रहता था। उनके एक-एक ब्रह्मयाग कही ऊर्ध्वा में होता था मानो कही मानो देखो, वह गऊओं के सींगो पर स्वर्ण मथ देते थे। कोई ले जाओ जो ब्रह्मवेत्ता हो जो मानो ब्रह्मवेत्ता हो उससे प्रश्न करता रहता था देखो, आचार्य जन उससे प्रश्न करते हैं, विवेकी करते हैं, उनका यथोचित उत्तर दिया जाता था। राष्ट्र में वातावरण पवित्र बन जाता है, तो वह राष्ट्र मानो देखो, हिंसा से रहित होने वाले को

हमारे यहाँ अध्वर्यु कहा जाता है, इस प्रकार देखो, अध्वर्यु होना चाहिए प्रमाणं ब्रह्म जब ऋषिवर ने इस प्रकार का उच्चारण करके जब मौन होने लगे तो उसकी देवी ने कहा-प्रभु! आप ने यह तो यथार्थ कहा है। परन्तु एक वाक्यं ब्रहे आपने ब्रह्मा, उद्गाता, अध्वर्यु और मानो देखो, यज्ञमान का एक प्रसंग रह गया है। क्या हे प्रभु! यज्ञमान किसे कहते हैं।

उन्होंने कहा यज्ञमान आत्मिक दृष्टि से मानो देखो, दार्शनिक और और आत्मा के प्रति देखो, जो ज्ञान के गम्भीर कुंज में प्रवेश करता है, अथवा ज्ञान के गम्भीर क्षेत्र में जाता है, तो उस आत्मा को यज्ञमान कहा जाता है जो आध्यात्मिकवाद में परिणत होता है परन्तु भौतिक याग में हमारे यहाँ देखो, यज्ञमान उनकी जो देवी है, वह याग करते है, याग के कर्मकाण्ड में भिन्न-भिन्न प्रकार की देखो, महानता में परिणत होता रहा है। मैं यदि देखो, यज्ञमान को अपने यहाँ कोई पुत्रयाग करना है, तो देवी उसके मानो दक्षिण भाग में विद्यमान होती है अमृतं ब्रह्मा वर्णाब्रहे देवतवा प्रवाह लोकाम वचचत प्रहाः मानो देखो, जो उसके दो भू भाग होते हैं, एक सूर्यांग होता है, एक चन्द्रांग होता है, मानो देखो, सूर्यांग भाग में विद्यमान हो करके यदि पुत्रयाग करना हो तो चन्द्रभाग में विद्यमान होना चाहिए। इस प्रकार देखो, अमृतं देखो, जो निष्पक्ष और राष्ट्र कल्याण समाज कल्याण के लिए आत्मा के कल्याण के लिए याग करना है तो मानो देखो, उसको सूर्यांग में विद्यमान हो करके मानो देखो, गमन करना चाहिए इस प्रकार देखो, वेद में अनन्य मन्त्र इस प्रकार के आते हैं। जहाँ यागों के भिन्न-भिन्न प्रकार के चलन माने गयें हैं, हमारे यहाँ यागों में भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतिभाओं का जन्म होता रहा है, यागां भूतं ब्रह्मणा व्रातम ब्र ब्रह्म सुस्सतं मानो देखो, याग में परिणत होने वाले कहीं कहीं मानो देखो, भौतिक याग की चर्चाएं हैं बेटा! कहीं सूर्यांग में कही चन्द्रयांग में हैं इसीलिए क्योंकि जो लोक कल्याण के यज्ञ होते हैं, आत्म कल्याण के होते हैं, ब्रह्मज्ञान में ले जाने वाले हैं। वहाँ मानो देखो, सर्वत्र उसका आदर करना चाहिए। उसको एक महानता का स्थान देना चाहिए, और जहाँ मानो देखो, एक ऐसी महानता, परन्तु निकृष्ट प्रकार की महानता है, उसको तमोगुणी महानता होने से उसको चन्द्र स्थान देना चाहिए। तो इस प्रकार मानो देखो, स्थानों का भिन्न-भिन्न स्वरूप बन जाता है। यह वैदिक साहित्य की हमारी पद्धति मानी जाती है। केवल विचर-विनिमय यह क्या देखो, इस प्रकार वशिष्ठ मुनि महाराज ने अपना मन्तव्य दिया। तो देवी अपने में मौन हो गई और देवी ने कहा-प्रभु! चरू कैसा होना चाहिए उन्होंने कहा जैसा उसका याग हो वैसा ही उसका चरू होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने चरू की विवेचना करते हुए कहा क्या सर्वत्र प्रकृति का जो द्रव्य अवृत रूप माना गया है, जिस प्रकार नाना प्रकार की वनस्पतियां हैं, और उसके स्वरूप में मानो देखो, वह जो गो घृत है, वह वनस्पतियों का समूह रस कहलाता है। उसके द्वारा देखो, यज्ञमान आहुत कर रहा है, और देवी द्रव्य की स्वामी बनती है, उसका हूत किया जाता है, तो इस प्रकार देखो, यागों के कर्मकाण्ड में भिन्न-भिन्न प्रकार के अवधान और भिन्न-भिन्न प्रकार के अवान्तर भेद माने जाते हैं। अश्वमेध याग करना है तो मानो देखो, उसमें सर्वत्रता का आदर हो, एक दूसरे की प्रतिष्ठा को विचारना है, मानो देखो, यदि अजामेध याग करना है, उसमें अजा का विचार करना है। आत्मा को ऊँचा बनाना है, इन्द्रियां पर विजय होना है, और यदि देखो, वह याग करना चाहता है अश्वमेध अश्व राजा है। प्रजा देखो, मेध है। प्रजा और मेध में दोनो में महानता की प्रतिष्ठता की आवश्यकता रहती है, उस प्रतिष्ठा को अपने में लाना और मानो देखो, याग करना अश्वमेध याग कहलाता है, जिससे मानो देखो, प्रजा उस कर्म में मानो देखो, विहिन न हो जाएं कर्म करना ही मानो देखो, मानव का कर्तव्य है।

तो आओ, बेटा! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ कहीं मानो देखो, अग्नि तपा करके बनाया जाता है, कुछ मानो देखो, अग्नि से बाह्य जगत में सूर्य की किरणों से तपाया जाता है। उनके चरूओं का निर्माण होता

रहता है। वह साकल्य बना करके यज्ञमान जब याग करता है, तो यज्ञमान मूर्ध्वा कहलाता है। मूर्ध्वा बन करके सबका सम्बन्ध मानव के हृदय में परिणत हो जाता है। मन कर्म, वचन जब एकाग्र होते हैं, तो मानो देखो, यह मन वेद की प्रतिभा परिणत होता हुआ, मानो उसके लिए मानो न वह न्यून है, और न उसके लिए महान है, एक रस रहता है। जो याग करता है, तो मुनिवरों! देखो, उसका वायुमण्डल महानता में परिणत हो जाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ। जब देवी नह यह वाक् श्रवण किया तो देवी अपने में मौन हो गई और देवी मौन हो करके कहती है कि महाराज! प्रथम आहुति कौन-सी है, उन्होंने कहा प्रथम आहुति अमृतां भूतं अमृत कहलाई जाती है। वह अमृत क्या है? जो प्राण को प्राप्त होता है, द्वितीय आहुति वह आहुति है, जो अति अमृत कहलाता है। जो आत्मा के संरक्षण में रहने वाले प्राण सखा हैं, उसको दी जाती है, और तीसरी आहुति लोक कल्याण के लिए राष्ट्र को समाज को ऊँचा बना देने के लिए दी जाती है। इस प्रकार जब उन्होंने आहुतियों का वर्णन किया और आगे उसके भेदन और भी माने जाते हैं यज्ञमान एक आहुति ऐसी देता है, जिसका चित्र बन करके द्यौ में प्रवेश करता है। एक हूत ऐसी होती है, जिसका मानो अग्नि में प्रदीप्त होती है, अग्नि मानो देखो, अमृतं वह द्यौ के ऊर्ध्वा भाग में रमण कराती है, तो आज बेटा! कर्म काण्ड में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ।

विचार-विनिमय केवल यह कि हमारे यहाँ क्या चन्द्र और सूर्य दोनो भागों का विचार-विनिमय करते हुए यज्ञमान अपने में याग करता है, और कहता है देवी आओ, तुम सूर्य भाग में विद्यमान हो जाओ क्योंकि यज्ञ हमारा देवतव है, वही देवता तेरे शरीर में प्रवेश कर रहे हैं। वही मेरे में प्रवेश कर रहे हैं। परन्तु जिन देवताओं को हम जागरूक करना चाहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, उसकी विज्ञानता को वैदिकता में देखो, हमें प्रायः प्राप्त होता रहता है, आज का विचार-विनिमय क्या है, मेरे पुत्रों! देखो, राजलक्ष्मी ने ऋषि के वाक्यों को स्वीकार किया और स्वीकार करके बेटा! देखो, स्वीकार ब्रह्मे भयंकर वन में रात्रि समय देखो, उनकी सभा हुई सभा होने के पशचात प्रातःकालीन हुआ और प्रातः काल जैसे ही सूर्य का उदय हुआ, उदय होते ही मुनिवरों! देखो, उस आहुति में परिणत हो गएं और वह हूत करने लगे मेरे प्यारे! देखो, हूत करके प्रथम मन्त्रों का जब उद्गीत गाने लगे, अमृतां प्राणां ब्रह्मे वर्णो अमृतां प्राणां ब्रह्मे वर्णां ब्रहे तत्त्वाम भूतं ब्रह्मा वस्सुतं इस प्रकार वेद के मन्त्र का उद्गाता ने उद्गीत गाया तो प्रथम आहुति मुनिवरों! देखो, अग्नि में प्रदीप्त की गई क्योंकि अग्नि देवताओं का मुख है और वह देवताओं का मुख होने सब देवताओं को प्रथम आहुति प्राप्त हो जानी चाहिए क्योंकि वह अग्नि इतनी तीव्र होनी चाहिए जिससे वह आहुति मानो देवतव को प्राप्त हो जाएं उसे पश्चात द्वितीय आहुति देता है यागां देवम प्रजां भूतं ब्रहे कृतं देवाः प्राणा मानो देखो, द्वितीय आहुति यज्ञमान देता है कि मैं प्राणां ब्रहे क्या देखो, मैं अपने प्राण को ऊँचा बनाना चाहता हूँ और प्राण मेरा प्राण प्रजा के लिए होना चाहिए मेरा प्राण मानो देखो, देवताओं के लिए होना चाहिए यज्ञमान हूत करता है और हूत करता हुआ मुनिवरों! देखो, वह साधना में परिणत हो जाता है इसी प्रकार उद्गाता अपने में उद्गीत गाता है और विशुद्ध रूप से प्रथम आहुति का अवधान सूर्य को देता है द्वितीय चन्द्रमा में प्रवेश कर जाती है और तृतीय मानो वह देवतव को प्राप्त हो करके वह द्यौ में प्रवेश कर जाती है।

तो आओ, मेरे प्यारे! विशेश चर्चा न प्रगट करता हुआ केवल यह क्या यागों का बड़ा विशाल एक कर्म काण्ड माना गया है मैं कर्म काण्डों के सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नही देना चाहता हूँ इतना ही कि हम अपने में उस परमपिता परमात्मा के संसार रूपी याग के ऊपर विचार विनिमय करना है, क्योंकि कोई भी महान से महान पुरूष हो परन्तु वह रहता इसी लोक मे हैं, पंच महाभूतों के लोक में रहता है, और पंच महाभूतां में तरंगे होती हैं, जितनी तरंगे पवित्र होती है, उतना ही माना देखो, वायुमण्डल पवित्रता की आभा में प्रवेश कर जाता है, और वही

पवित्रता मुनिवरों! देखो, महानता में परिणत हो जाती है, जैसे माता के गर्भस्थल में हम जैसे जब शिशु होते हैं, तो माता का विचार जितना पवित्र होता है, उतना ही मानो देखो, शिशु को एक साकल्य प्राप्त होता है, और जब वह चरू जब प्राप्त होता है, तो बालक का निर्माण बुद्धि का निर्माण देखो, महान से महान बन जाता है। इसीलिए माता ब्रह्मे वर्णास्हे तो इस प्रकार हूत होना चाहिए। वह देवताओं के लिए जाते है।

तो विचार आता है कि मृत्युंजय बनने के लिए द्वितीय याग है, जैसा मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें वर्णन करते हुए कहा था देवताओं के याग में परिणत होना है, क्योंकि देवता पंच महाभूतों का लोक है, और आत्मा उसमें वास करता है क्योंकि जितना देवतव पवित्र होता है, उतना आत्मा मानो देखो, उसमें वास करता हुआ मन प्रसन्न रहता है। देवता प्रसन्न हैं, तो पंच महाभूत भी प्रसन्न है, देवता प्रसन्न है, तो मन भी प्रसन्न है, और मन प्रसन्न हैं तो बुद्धि प्रखर है, और यदि बुद्धि यदि प्रखर हो जाती है, तो मानो देखो, उसकी साधना पवित्र बन जाती है और जब साधना पवित्र होती है, तो चित्त के मण्डल में देखो, वह सूक्तियां नष्ट होनी प्रारम्भ होती हैं। आत्म का जो यह शरीर रूपी लोक है, जिसमें आत्मा वास करता है बेटा! देखो, वह अपनी महानता की प्रतिभा में परिणत हो जाता है। तुम्हें आत्मा के क्षेत्र में प्रवेश करना है, और आत्मा के क्षेत्र में वह प्रवेश होता है, जिसका वायु मण्डल अंग संग पवित्र बन जाता है। यदि अंग संग पवित्र बन गएं, जैसे माता यदि पवित्र है, पितर भी पवित्र है, तो देखो, बाल्य का अंग संग है, वह पवित्र बन गया है, और पवित्र बनने से देखो, बाल्य उच्च बनते हैं। माता-पिता देखो, यदि कलह में वास करने वाले हैं, गृह में कलह करने वाले हैं, अनायास देखो, कर्तव्य का पालन नही करते हैं, इसीलिए बाल्यों का वायु मण्डल देखो, पवित्र नही होता। इसीलिए बाल्य मानो देखो, अपने कर्तव्य से विहिन हो जाते हैं, क्योंकि जब वायु मण्डल नही मिलेगा, समाज नही मिलेगा, तो मानो देखो, वह वही क्रियाकलाप करेंगे। जो उनका स्वार्थ होगा और चित्त में उन्हीं संस्कारों का जन्म होगा, और वही आवागमन के मूल में आत्मा बारम्बार आती रहेगी। यह संस्कारों को उभरने का एक मुख्य उद्देश्य शक्ति क्षेत्र कहलाता है।

तो विचार आता रहता है बेटा! इस सम्बन्ध में मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, केवल यह कि हमारे यहाँ पवित्रता की आवश्यकता है, यागाम भूतं ब्रह्मे वेद का ऋषि कहता है कि हे मानव! तू याज्ञिक बन, हे मानव! तू मन, कर्म, वचन को ले करके हृदय रूपी यज्ञशाला में मानो देखो, तू संस्कारों को की वस्तुओं को ला करके और तू मानो देखो, प्राण रूपी अग्नि को चैतन्य कर उससे तपायमान बन और प्राणायाम कर। क्योंकि प्राण से मन स्थिर होता है, और प्राण से स्थिर हो करके प्राणायाम करता हुआ साधक देखो, साधना में परिणत होता हुआ मानो देखो, ध्यान समाधि में परिणत हो जाता है। तो इस प्रकार मानो देखो, तुम्हारा जीवन एक स्वयं व्यस्थिता का होना चाहिए। तो विचार आता है बेटा! देखो, ब्रह्मा अपनी यज्ञशाला में अपने यज्ञमान को इस प्रकार का उपदेश देता है, आख्यिकाएं देता है, प्राण की प्रतिभा में प्रवेश करता हुआ, वह प्रथम यज्ञमान को कहता है, ब्रह्मा तू प्रथम अपनी आहुति प्राण को दे उसके पश्चात अपान को दो, उसके पश्चात व्यान को दो, और समान को दे करके उदान में प्रवेश कर जाओ और उदानं भूतं ब्रह्मा वही मन बुद्धि का क्षेत्र है, और उस क्षेत्र में प्रवेश करके जो तुम्हारे जन्म जन्मांतरों के संस्कार हैं, उनको वायु मण्डल से उद्बुद्ध करने वाले बनों। जिससे तुम्हारे आवागमन की प्रतिभा न आये, तो मेरे पुत्रों! आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें देने नही आया हूँ, केवल यह कि महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने यह कहा था कि अपने में वर्णं ब्रहे याग प्रारम्भ हो गया। तो यह ब्रह्मा अपने यज्ञमान को उपदेश दे करके याग प्रारम्भ करता है, और याग के देखो, प्रत्येक वेदमन्त्र में वह अपनी प्रतिभा को देता है। देवता के द्वारा मानो जिस देवता का वह पूजन कर रहा है। उसी देवता की वह आहुति देता है, द्वितीय देवता का वही मन्त्र है,

और वही देखो, उसको प्राप्त होता रहता है। तो आज बेटा! देखो, मैं विचार देने विशेष नहीं आया हूँ, निर्वाचन की चर्चाएं चल रही थी, निर्वाचन इसीलिए होता है कि मानव कितना तपस्वी है वह उस देवता के सम्बन्ध में जानता है, अथवा नही यदि नही जानता है, यदि नही जानता है, एक पुरोहित बन रहा है, अथवा एक आचार्य बनाया जाता है। उस आचार्य को यदि मानसिक प्रवृत्ति की कलह रहती है, तो यज्ञ में देखो, अव्यधान हो जाता है। उसमें विघ्नता का प्रवेश होता है, इसीलिए तरंगो को यन्त्रों के द्वारा दृष्टिपात करना चाहिए। एक बुद्धिमान योगी और देखो, विवेकी होना चाहिए। जिससे देखो, वह अमृतं ब्रह्मा देखो, उसकी तरंगों को जानता रहे और तरंगों को जानता हुआ इसी चर्चाए तो बेटा! मैंने तुम्हें कई काल में दी हैं। जब देखो, महात्मा काग भुषण्ड जी याग करते थे, जब याग करते थे, तो मानो देखो, कही से ऋषि आते वह आहुति देते तो उनकी प्रत्येक आहुति में देने वाले की तरंगे वायु मण्डल में प्रवेश करती, वही अन्तःकरण को स्पर्श करती तो वही अपने याग को समाप्त कर देती हैं।

तो विचार आता है बेटा! याग के सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करना नही चाहता हूँ, आज का विचार-विनिमय यह कि हमे याज्ञिक बनना चाहिए और अपने मन कर्म वचन को एकाग्र करते हुए मानो देखो, उसको करके अपनी आत्मा के लोक को ऊँचा बनाना है, आत्मा के समीप यदि याग जैसे क्रियाकलाप किए जाते हैं। वहाँ आत्मा क्योंकि चाहे वह धारणा में जाएं चाहे समाधि में प्रवेश कर जाएं मानो चाहे वह चित्त के मण्डल में गमन कर जाएं, चाहे वह वायु लोक में रहे वह सब आत्मा का आत्मा के लिए कर रहा है। तो बेटा! आज का विचार-विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए बेटा! देखो, अपने यज्ञमान को अपने में उच्चता की प्रतिभा में परिणत होते रहें, और राजन्नम ब्रह्मा बेटा! देखो, राजा रघु के याग की मैं चर्चा कर रहा था। कल मुझे समय मिलेगा तो मैं देखो, राजा रघु के याग की चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, क्योंकि बुद्धिमानों का समूह तपस्वियों का समूह उदय होता है। तो मानो देखो, एक दूसरे की प्रतिभा का जन्म होने लगता है वह अग्नि ममब्रहे व्रतं समिधाम भूतं ब्रह्मे अपने में देखो, विचार का विषय बन करके बेटा! शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, देखो, बाह्य लोक और आत्म के लोक के लोक को ऊँचा बनाने में सदैव तत्पर रहें तो यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन।

६ महाराज रघु का याग ११ ०३ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, कि आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, नाना प्रकार के मनकों को एक सूत्र में पिरोया जाता है, क्योंकि एक-एक वेद का मन्त्र ही मनके के सदृश्य माना गया है और वह किसी सूत्र में पिरोया हुआ है इसीलिए जितना भी वह समूह है, परमात्मा का जितना भी यह ब्रह्माण्ड है यह मनके और धागे का दोनो का समन्वय माना गया है, जिस भी आँगन में तुम दृष्टिपात करोगे, वही तुम्हें मनके दृष्टिपात आने लगेंगे, और वह मनके किसी न किसी सूत्र में पिरोऐ हुए रहते हैं, मानो जैसे एक दिवस है, उस दिवस में भी चार प्रकार की विभक्त क्रियाएं होती हैं, परन्तु उसकी विभक्त क्रिया में, जैसे प्रातःकाल है मध्य काल है सांय काल है रात्रि का काल है तो मानो यह चार विभागों में विभक्त हो रहा है, इसी प्रकार जितना भी यह मानो दिवस है एक अहोरात्र है और वह मानो एक रात्रि और दिवस का अहोरात्र है, वह भी मानो किसी का मनका कहलाता है। और वह मनका एक मानो सप्ताह का मनका कहलाया जाता है, सात दिवसों में मानो देखो, सात दिवसों में ब्रडसृम् यह सूत्र बन करके सूत्रित हो रहा है और वह मानो देखो, जो एक सप्तम है वह एक माह के एक पक्ष के रूप में विद्यमान रहता है, और वह भी मुनिवरों! देखो, किसी मनके और सूत्र में पिरोया हुआ है मानो देखो, वह भी एक माह में पिरोया हुआ है और उस माह में भी दो प्रकार के पक्ष, दो प्रकार के मनके हैं, एक कृष्ण पक्ष एक शुक्ल पक्ष कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, ये दोनो प्रकार के पक्ष हैं एक को हमारे यहाँ उत्तरायण कहते है, एक को दक्षिणायन कहते हैं तो दक्षिणायन में मानो देखो, अन्धकार का एक प्रतीक माना गया है और देखो, जो उत्तरायण है वह प्रकाश का द्यौतक है तो विचार आता रहता है बेटा! दोनो मनके एक मानो कृष्ण में है और एक मानो देखो, शुक्ल में परिणत हो रहा है। तो हमारे ऋषि-मुनियों ने एक वाक् बड़ा महत्वपूर्ण कहा है, क्या जो भी मानव अपने शरीर को ही पंच महाभूतां के लोक को, जो भी मानो देखो, साधक होते हैं, या विचारक होते हैं, मानो जो साधना में परिणत होते हैं आत्मा के समीप जाने वाले, वे यह विचारते हैं कि हमारा जीवन जब यहाँ से जाएं, इस संसार में तो हमारा जीवन शुक्ल पक्ष में परिणत हो जाएं, और हम मानो शुक्ल पक्ष में चले जाएं और मानो देखो, कृष्ण पक्ष में न रहें तो यहाँ आचार्यों की भिन्न-भिन्न प्रकार की मान्याताएं हैं, उनके भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार हैं, उन्होंने कहा है कि जो उत्तरायण में अपने शरीर को त्यागता है, वह मानो देखो, वह प्रकाश का द्यौतक है, और जो दक्षिणायन में त्यागता है, वह अन्धकार का द्यौतक माना गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, मैं महाभारत काल में, तो तुम्हें इतनी विशेषता नही दूंगा, परन्तु देखो, जब अमृतं देखो, जब मृत्यु शैय्यां पर बाणो की शैय्यां पर जब भीष्म जी विद्यमान हो गएं तो उन्होंने यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी आत्मा शरीर का जब विच्छेद करूंगा जब मानो मेरा जीवन उत्तरायण में चला जाएगा। मेरे जीवन की प्रतिभा उत्तरायण में समाप्त होनी चाहिए।

उत्तरायण

तो मेरे प्यारे! उत्तराण का अभिप्रायः क्या है उत्तरायण कहते हैं जहाँ मुनिवरों! देखो, प्रकाश होता है मानो देखो, जो प्रकाश में रत्त होने वाला है, मुनिवरों! देखो, वह अपने में पुरातन काल में निर्णय देते हुए कहा था महारानी द्रौपदी जब मुनिवरों! देखो, पितामह भीष्म मृत्यु शैय्यां पर विद्यमान थे तो वह उस समय भोज्य देती, आप महापिता को जब भोज्य देती तो मानो देखो, गायत्री छन्दों का पठन-पाठन कराती, और पठन-पाठन करती, जब अन्नाद का वह भोज्य बना करके, मानो देखो, पितामह भीष्म को प्रदान करती, तो उसकी बुद्धि पवित्र अन्न से,

प्रवित्र हो गई और वह रजोगुण मानो देखो, उसका क्षय होने लगा, क्षय होने से मुनिवरों! देखो, उनका जीवन ज्ञान में परिणत हो गया। उत्तरायण कहते हैं बेटा! देखो, ज्ञान को हमारे यहाँ सूर्यांग कहते हैं, प्रकाश को सूर्यांगं ब्रह्मा लोकां प्रवाह व्रतं तपसुता तो मानो देखो, जब वह ज्ञान में परिणत हो गएं, उन्हें ज्ञान हो गया तो उत्तरायण में अपने शरीर का मुनिवरों! देखो, इस पंच महाभूतां के लोक को उन्होंने त्यागना बहुत प्रियता में पंच महाभूतों का ज्ञान का होना ही जिस गृह में मुनिवरों! देखो, हम वास करते हैं, वह गृह मुनिवरों! देखो, जब तक हमारा पवित्र न हो, तब तक मुनिवरों! देखो, हमारा रहना उसमें व्यर्थ कहलाता है। तो इसीलिए हमारा जो उत्तरायण हमारा जो हृदय बन जाता है, ज्ञान का पक्ष बन जाता है, ज्ञानी बन जाता है, तो उसमें देखो, कर्मकाण्ड में परिणत होता हुआ, वह अपने प्रभु से याचना करता हुआ, पंच महाभूतां के लोक को त्याग करके जब जाता है, तो मुनिवरों! देखो, वह उत्तरायण में चला जाता है। वह ऋषि-मुनियों की कोटि में चला जाता है, तो विचार आता है, मुनिवरों! देखो, वही माह है मानो देखो, कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष हमारे यहाँ कृष्ण पक्ष अन्धकार को कहा गया है। मानो जिसमें नाना प्रकार की तमोगुणी उतेजनाओं का जन्म होता रहता है, अन्धकार है मानो देखो, जितने पक्षी गण है, वह भी एक सूत्र में पिरोऐ हुए हैं, परन्तु कुछ मानो देखो, कृष्ण पक्ष में पिरोऐ हुए हैं। कुछ उत्तरायण में मानो देखो, शुक्ल पक्ष में पिरोऐ हुए है। मेरे प्यारे! देखो, जितने निकृष्ट प्राणी होते हैं, निकृष्ट कोटि के कर्म काण्डी होते है, वह मुनिवरों! देखो, कृष्ण पक्ष को अपना प्रिय बना लेते हैं, और जो मानो ऊर्ध्वा में कोटि में रमण करने वाले होते हैं, वह अपना जो पक्ष बनाते है। वह शुक्ल पक्ष बनाते हैं, और वह अपने जीवन को ज्ञान और विज्ञान के प्रकाश में ले जा करके अपने शरीर को अप्रतियों में परिणत करके पंच महाभूत लोकों को जानते रहते हैं।

शुक्ल पक्ष में जीवन

तो यह दोनो प्रकार के जो प्राणी हैं, मानो देखो, जो निम्न कोटि हैं, उनका जो लोक हैं, वह कृष्ण पक्ष है, और जो ऊर्ध्वा में कोटि के प्राणी हैं, कर्मकाण्डी हैं, तो ऊर्ध्वा में गमन करने वाले उनका शुक्ल पक्ष माना गया है। तो विचारक पुरूष कहते हैं यह दोनो का मिलान होता है तो मिलान हो करके वह भी मुनिवरों! देखो, एक माह बन करके मनका बन जाता है और वह मनका ही मुनिवरों! देखो, एक वर्ष की कोटि में क्या यह मनका ब्रह्मण देखो, एक माह में छह माह तो ऐसे होते हैं, जो मुनिवरों! देखो, शुक्ल पक्ष के कहलाते हैं और छह माह ऐसे होते हैं जो कृष्ण पक्ष कहलाते हैं परन्तु जब उन दोनों का मिलान होता है, उनका एक वर्ष बन जाता है। वह वर्ष भी मुनिवरों! देखो, मनका कहलाता है। वह सप्तमं ब्रह्मे लोकां वह मेरे प्यारे! देखो, वह मनका बन करके एक वर्ष का मनका बन करके वह शरद शतं बन जाता है। वह मानो देखो, सौ वर्षों का मुनिवरों! देखो, एक माला बन करके मानो देखो, धारण करता है, वह साधारण कोटि का प्राणी कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो, साधारण कोटि का जो प्राणी है, वह यह प्रार्थना करता है कि मैं शरद बन जाऊं। शरद शतं मेरे प्यारे! जो ऊर्ध्वा में कोटि के प्राणी होते हैं, वह कहते हैं कि क्या प्रभु मेरी तो कोई आयु ही नही है, मानो देखो, मैं कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष मानो देखो, एक-एक माह को एक-एक वर्ष को एक-एक शरदं में परिणत करता हुआ वह अपने जीवन में मानो देखो, कल्प के आगे मैं भी रहूँ, और कल्प समाप्त हो जाएं उसके पश्चात भी मेरी स्मरण शक्ति बनी रहे, और मैं मानो देखो, शरीरों को पंच महा शरीरों को धारण करता रहूँ। परन्तु मेरे सुविचार बने रहें सु धारण बनी रहें, तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, अपने में प्रार्थी बना रहता है।

तो विचार-विनिमय क्या मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ, केवल यह कि आज का हमारा वेदमन्त्र यह कहता है कि हे मानव! तू शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष को विचारक बन करके मानो देखो, तुम्हें अपनी ऊर्ध्वा कोटि को चुनं ब्रहे उसको चुनौती देने का प्रयास कर, जिससे तेरा जीवन एक महानता में परिणत हो जाएं। तो मेरे

महाराजा रघु का याग

प्यारे! देखो, हमारे यहाँ पूर्व काल में मैं महाभारत की गाथा वर्णन कर रहा था, इसीलिए मानव का अन्न पवित्र होना चाहिए, जो मानव देखो, शुक्ल पक्ष में जाना चाहता है। उस मानव के जीवन में एक मानो देखो, अन्नाद की प्रतिभा होनी चाहिए, वायु का सेवन करना चाहिए, और अन्तरिक्ष में परमाणु बह रहा है। उसका सेवन करना चाहिए, मानो देखो, उसका सेवन करता हुआ साधना में परिणत होता रहे। साधक बन करके मेरे प्यारे! देखो, उसका शुक्ल पक्ष सिद्धता को प्राप्त करा देता हैं। वह अपने मानो पंच महाभौतिकता को कोटि में परिणत कर देता है, ऊर्ध्वा में गमन कराता रहता है। विचार आता रहता है, बेटा! जो यह स्वीकार करते हैं कि मैं जितना आहार करता हूँ वह भी मेरा है मानो जो मैं दूसरों का भक्षण कर जाता हूँ वह भी मेरा है जब इस प्रकार के देखो, प्राणियों के हृदयों को कष्ट देने वाला प्राणी होता वह निम्न प्रकार का प्राणी होता है, मानो देखो, वह यह विचारता है कि जो मैं आहार कर रहा हूँ जो यह मेरा शरीर है, मैं इसी के पालन पोषण में लगा रहूँ, और इसी के पालन पोषण में मानो देखो, मेरी दैत्य प्रवृत्ति बनी रहे। तो इस प्रकार के जो प्राणी होते है। वह दैत्य प्रवृत्ति वाले कहलाते हैं। तो इसीलिए दोनो पक्ष हमारे लिए विचित्र माने गयें हैं।

नेत्रों में आत्मा की छाया

तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण है जब एक समय भीष्म ने अपनी मृतक शैय्यां, बाणों का शैय्या पर विद्यमान थे, वह ब्रह्म का उपदेश दे रहे हैं, और यह उच्चारण कर रहे थे कि मानो देखो, मैं अपने में ब्रह्म में लीन होना चाहता हूँ। यह संसार सर्वत्र मानो देखो, ब्रह्म में लीन कहलाता है, और यह ब्रह्मणं ब्रह्मा देखो, ब्रह्म इसका संचालन करने वाला है, और ब्रह्म ही इसका नियमन करने वाला है, मानो देखो, जैसे मानव के नेत्र हैं, नेत्र गोलकने हैं। गोलकनों के पीछे मानो एक पटल है, पटल के पिछले भाग में एक मानो यन्त्र लगा हुआ है, उस यन्त्र के पिछले भाग में कही से छाया आ रही है, वह आत्मा की छाया हैं। मानो देखो, वह उसका आत्मा उसका नियमन कर रहा है, तो इसीलिए हमें आत्मा को जानना चाहिए, और आत्मा को जानने वाला ही मुनिवरों! देखो, अपने में महान कहलाता है, ऊर्ध्वा में गमन करने वाला होता है, जब यह भीष्म जी इस प्रकार का उपदेश दे रहे थे। तो एक समय महारानी द्रौपदी ने यह कहा हे प्रभु! आज तो आप ब्रह्म की वार्त्ता प्रगट कर रहे हैं, परन्तु जिस समय भरी अवृत देखो, राज सभा में मेरे वस्त्रों का हनन हो रहा था, उस समय आप देखो, अपने में शान्त क्यों थे, तो उस समय कहा कि हे देवी! यह जो राष्ट्र का अन्न होता है, राष्ट्र में जो मानो देखो, कटिबद्ध होता है, वह राष्ट्र का अन्न दूषित अन्न था, मेरे शरीर में जो अन्न बह रहा था, वह अशुद्ध अन्न का रक्त बना हुआ मेरे मे गमन कर रहा था। परन्तु मेरी बुद्धि इस प्रकार की संकुचित बन गई, क्या मैं कृष्ण पक्ष में चला गया। हे दवी! यह कृष्ण पक्ष है, परन्तु मेरे शरीर का यह जो सर्वत्र रक्त है, उस पृथ्वी पर आ गया है, और तुम्हारा मुझे भावनाओ का जो अन्न तरंगों का जो अन्न प्राप्त हुआ है, उस अन्न से मानो देखो, मेरी नाना शुद्ध पवित्र तरंगों का जन्म हो गया है, और वह शुद्ध पवित्र तरंगों का जन्म हो करके जब शुद्ध पवित्र तरंगे बन जाती हैं, और हृदय उसका ग्राही बन जाता है, तो मानो देखो, वह उसमें तरंगे आनी प्रारम्भ हो जाती हैं, और वह ब्रह्म में पिरोई हुई मुझे दृष्टिपात आती हैं। इसीलिए आज मैं देवी मैं ब्रह्म की चर्चा कर रहा हूँ, तो मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या वेद का मन्त्र कह रहा था अन्नं ब्रह्मा वर्णो देवतं देव सुतां वाचन्नमं ब्रह्मे कृता मेरे प्यारे! देखो, इस अन्न का अन्न ही हमारा जीवन माना गया है। अन्न ही हमारा शुक्ल पक्ष है, अन्न ही हमारा देखो, कृष्ण पक्ष कहलाता है, तो यह अन्न भी मुनिवरों! देखो, उसी सूत्र में पिरोया हुआ है, अन्नं ब्रह्मा देखो, अन्न वाणी से पिरोया हुआ है, और वाणी मन से पिरायी हुई है, और मन मुनिवरों! देखो, आत्मा के सूत्र में सूत्रित रहने वाला है। तो विचार आता है बेटा! सर्वत्र प्रकृति का जो मण्डल है यह मन की आभा में ही गमन करने वाला है तो विचार आता रहता है बेटा! देखो हम इस मनस्तं ब्रह्मा वाणी रसों

वृंधं अत्रि कहते हैं। इस वाणी को ही तो अत्रि कहते है, और यह अति आहार कर जाती है, परन्तु जब यह अमृता में प्राणतव को प्राप्त होती है, तो यह प्राण ही भक्षण करने वाला है, प्राण ही मानो देखो, उसे आहार कर जाता है। संसार को निगल जाता है, वही प्राण मेरे प्यारे! देखो, अपने में धारण करता है, और वही मनस्तव की धारा कहलाती है। उससे प्राणतव की आभा में रत्त हो करके मानव गति का संचार होता है, और संचार होने के पश्चात मेरे प्यारे! उसमें उदबुद्धता आ जाती है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करना नहीं चाहता हूँ इसीलिए आज तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ बेटा! देखो, मैं राजा रघु के याग की चर्चा कर रहा था। राजा रघु के याग की चर्चाएं मुझे देखो, बहुत समय से स्मरण आती रहती है, वह कई समय से यह हम अपने में अनुभव कर रहे हैं, जैसे मैं राजा रघु की यज्ञशाला में विद्यमान हूँ, और यज्ञशाला में देखो, बुद्धिमानो का समूह हैं, और वहाँ मानो देखो, याग की चर्चाएं हो रही है, नाना दार्शनिक आ करके मुनिवरों! देखो, उसमें नाना वृत्तियों का व्यवधान कर रहे हैं। तो ऐसा मुझे बेटा! अनुभव होता रहता है, विचार आता रहता है कि मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है, जैसे आज हम अयोध्या में उस राजा रघु की यज्ञशाला में विद्यमान हैं। जहाँ मुनिवरों! देखो, जहाँ यज्ञशाला में याग होता हुआ, नाना ब्रह्मणतव नाना ब्रह्मवेत्ता अपने में ब्रह्म का बखान कर रहे हैं। नाना होताजन मानो देखो, वह यज्ञमान की वाणी को पवित्र बनाना चाहते हैं, और यज्ञमान मानो देखो, यज्ञशाला का धिपति बन करके वह द्यौ लोक में जाना चाहता है। वह मानो देखो, द्यौ लोक में प्रवेश करना चाहता है, अपने को ऐसा प्रतीत होता है, तो बेटा! देखो, आओ, आज मैं तुम्हें उस यज्ञशाला में ले जाना चाहता हूँ।

जो यह यज्ञशाला बेटा! देखो, कर्म काण्ड का निधि कहलाया जाता है, मैं इससे पूर्व काल में यह उच्चारण कर रहा था क्या दक्षिण विभाग में मेरे प्यारे! देखो, उत्तरायण में उदबुद्ध होता हुआ, वह ब्रह्मा विद्यमान होता है और मुनिवरों! देखो, उत्तरायण में विराजमान होने वाला मानो देखो, उद्गाता उद्गीत गाता है जिसका दक्षिणाय मुखारबिन्दु होता है। क्योंकि वह सुरों का व्यंजन करने वाला दक्षिणाय कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, दिशाओं का वृत होने से और पूर्व दिशा में अध्वर्यु विद्यमान होता है, और मुनिवरों! देखो, वह पश्चिमां भूतप प्रह्वे में देखो, यज्ञमान विद्यमान होता है, और यज्ञमान की जो देवी है, मानो देखो, यज्ञम ब्रह्मा मानो देखो, वह सीधे अंग में विद्यमान हो करके बेटा! देखो, अपने में ऊर्ध्वा में गान करते रहते हैं, अंगनं ब्रह्मा लोकां वाच प्रह्वा लोकां मैं इसके सम्बन्ध में उद्गीत गा रहा था, और उद्गीत गाता मानो देखो, सीधामनं ब्रह्मे देखो, याग में हूत होना चाहिए, देखो, जैसे मानव का जीवन वह परमपिता परमात्म को प्राप्त हो जाएं, क्योंकि यह जो याग है यह परमात्मा की वेदी है। परमपिता परमात्मा का सर्वोचय वह बेटा! कर्म काण्ड माना गया है। इसमें मानो देखो, कोई न्यून होता है, और न कोई प्रबल होता है, परन्तु जब भी विचार उसके अनूकुल बन जाते हैं। वह सामान्यता की आभा में कोटि में परिणत हो जाता है।

आहार की पवित्रता

तो आओ, मैं आज विशेष चर्चा न देता हुआ केवल देखो, यहाँ वेद में नाना प्रकार कही-कहीं यागों में उत्तरायण और दक्षिणाय का भी वर्णन आता रहा है परन्तु यज्ञमान का आहार कैसा होना चाहिए? मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज पुरोहित विद्यमान हो गएं और मुनिवरों! देखो, महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज देखो, याग के ब्रह्मतव को प्राप्त हुए और उद्गाता गाने वाला महर्षि श्रृंगी वृत बन करके बेटा! देखो, जब गान गाने लगे और भी नाना ऋषि देखो, श्वेतकेतु ऋषि महाराज उस याग के विश्वामित्र के सहयोग से बेटा! देखो, वह अध्वर्यु के स्थान पर विद्यमान हो गएं थे और विद्यमान हो करके बेटा! देखो, याग प्रारम्भ होने लगा। जब याग का प्रारम्भ

हुआ, प्रारम्भ होने से ही पूर्व मानो देखो, उसकी छवि एक विचित्र कहलाई, मानो देखो, जैसे ब्रह्मा का स्थान वहाँ विद्यमान होता हो, गया हो वहाँ मानो देखो, तरंगो का यह जगत है, तरंगों का याग है, जितनी तरंगे पवित्र होती हैं उतना ही मानो देखो, याग वायु मण्डल का एक धिपति बन जाता है।

तो विचार आता रहता है बेटा! जब यज्ञशाला में देखो, आहार पवित्र होना चाहिए मेरे पुत्रों! देखो, यज्ञमान का जो आहार है, वह मानो देखो, एक अंजलि में जल ले करके वह यज्ञशाला के मानो देखो, दक्षिण भाग में मानो देखो, उसको स्थित करते हैं, और इस जल से पिपासा उसे जल की इच्छा होती है तो जल का पान किया जाता है वह पात्र स्वर्ण का हो या मानो देखो, चन्द्रवृत्तिका हो चाहे वह नाना प्रकार की धातुओं का निर्माण किया हुआ होना चाहिए यदि यह भी न हो तो पृथ्वी के रजों से बना हुआ पात्र होना चाहिए उस पात्र से जल को यज्ञमान को पान करना चाहिए मानो देखो, इसी प्रकार देखो, अमृतं ब्रह्मा वर्णसुतं देवाः वह जल भी मानो देखो, उसके लिए अमृत कहलाता है, उसमें यज्ञ की तरंगे तरंगित होती रहती हैं और वह जल मानो देखो, स्वाहा की ध्वनियों से उसमें जो जीवन शक्ति है, वह प्रबल बन जाती है। इसीलिए यज्ञमान के हृदय को पवित्र बनाने वाला है।

तो विचार आता है उसी प्रकार का अन्नाद होना चाहिए, अन्नाद मानो ऐसा होना चाहिए, जिसमें अग्नि प्रधानता विशेष हो और वायु प्रधानता मानो देखो, सूक्ष्मतम हो वास्तव में पंच महाभतों के अंग तो प्रत्येक अंगों में परिणत होते रहते हैं परन्तु देखो, यह ब्रह्मा का कर्तव्य है, उसको वह आहार करना है, जिससे देखो, उद्गाता का मन और देखो, ब्रह्म का मन एक सूत्र में सूत्रित हो जाएं यज्ञमान का होता जनों का मन एक सूत्र में हो जाएं और एक सूत्र में होता है जबकि अन्न पवित्र होता है। आचरण की धाराएं पवित्र होती रहती हैं, तो महाराज रघु के यहाँ जब याग का प्रारम्भ हुआ, तो नाना ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म का बखान कर रहे हैं, वेदमन्त्रों की ध्वनि में ध्वनित हो रहे हैं, वह बेटा! देखो, गार्हपथ्य अग्नि का चयन करता है, यज्ञमान सबसे प्रथम और गार्हपथ्य अग्नि में आह्वनीय अग्नि में उसका समन्वय करता है, और आह्वनीय अग्नि का समन्वय करके मानो देखो, वह दक्षिणायन अग्नि में प्रवेश करके बेटा! वहाँ स्वाहाः का उद्गीत गाता है। वह स्वाहाः कह करके उद्गीत गाता है। आज बेटा! देखो, मैं इस सम्बन्ध में कर्म काण्ड के सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही केवल इतना क्या यज्ञमान का हृदय मन मस्तिष्क एकाग्र होना चाहिए, और मन मस्तिष्क जब एकाग्र रहता है, तो मानो देखो, उसका मन पवित्र है, तो शरीर पवित्र है, और शरीर पवित्र है। तो मानो भावना पवित्र है और देखो, भावना पवित्र है तो देखो, उसके हृदय की आभा प्रवित्र कहलाती है, और जब हृदय पवित्र होता है। तो मानो देखो, आत्मा उदबुद्धता के मार्ग पर गमन करता है।

तो विचार आता है बेटा! वही चित्र बन करके द्यौ लोक में प्रवेश हो जाते हैं, उसका द्यौ मण्डल पवित्र बन गया, भू मण्डल पवित्र बन गया, और देखो, जब भू, भुवः और स्वः जब बेटा! देखो, तीनो मण्डल पवित्र बन गएं, तो उसमें बेटा! त्रि वर्धा में मानो देखो, परमपिता परमात्मा की प्रतिभा को दृष्टिपात करता रहता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! इस सम्बन्ध में मैं विशेष चर्चा तुम्हें नही प्रगट करने आया हूँ केवल विचार-विनिमय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती और उसकी आभा को जानने के लिए तत्पर मानो देखो, याग चलता रहा बेटा! याग को लगभग राजा रघु के यहाँ वह जो सर्वांग याग हुआ था, उस याग का मुझे प्रतीत है बेटा! वह जब उद्गाता उदगीत गाता है स्वर, व्यञ्जनों और ध्वनियों से गाता है, तो मानो देखो, वह तरंगो को जहाँ-जहाँ जा रही हैं, वही तरंगों को तरंगित कर देता है। किस देवता को वह कौन से मन्त्र का कौन-सा देवता है, उस देवता के प्रति व्यवधान करता है, और ध्यानावस्थित हो करके उसी का स्वाहा कहता है। बेटा! देखो, उसी का स्वाहा कह करके अग्न्याध्यान करता है, वह अग्नि ऊर्ध्वा में रमण करने वाली है, वही अग्नि तो मानो देखो, गार्हपथ्य कहलाती

है, इस गार्हपथ्य में तपा हुआ यज्ञमान होता है। वही अग्नि मानो देखो, गृहपथ्य होती है। जिसका गृह तपा हुआ होता है, और देखो, वही अग्नि आह्वनीय अग्नि कहलाती है, जिसका देखो, शिक्षा प्रणाली में पवित्रतव होता है, और वही अग्नि मानो देखो, दक्षिणाय को प्राप्त हो करके उत्तरायण को गमन करती हुई मानो देखो, द्यौ को प्राप्त हो जाती है।

तो विचार आता रहता है बेटा! वह अग्नि देवताओं का मुख कहलाती है, देवां भूतं देवं ब्रह्मा ब्रहे वह अग्नि देवतव को प्राप्त होती रहती है, तो विचार आता रहता है इसका हमें ध्यानावस्थित होना चाहिए। तो मेरे पुत्रों! देखो, इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना देने नही आया हूँ, विचार केवल यह कि हम मुनिवरों! देखो, जब अन्नाद को यज्ञशाला के अन्न को पाना चाहते है। तो मानो देखो, उसमें गो रस होना चाहिए, और गो रस किसे कहते हैं, मानो गो कहते हैं पशु को, पशु ब्रह्मणा नही परन्तु देखो, पशु कैसा होना चाहिए, जैसा मैंने पूर्व काल में कहा राजा रघु के यहाँ जब पशु जब गो धन आता, तो गो के पीछे गो धन को अप्रत करने वाले जब एक नाद होता और नाद होने के पश्चात जब पशु प्रसन्न हो जाता है, और वह दुग्ध देता है, प्रसन्नता के साथ दुग्ध को पान करना ही मानो देखो, उसके लिए सुयोग्यता कहलाता है। उससे मन की प्रति का निर्माण होता रहता है, परन्तु देखो, इसी विचार को ले करक गो नाम वनस्पतियों का माना गया है। वनस्पतियों में जितनी भी त्रि वर्धा की औषध हैं, आयुर्वेद के अनुसार मानो देखो, औषधियों का पिपाद बनाना चाहिए, और पिपाद बना करके अग्नि में तपा करके, खरल करके उस अन्न को, अग्नि मे तपा करके पान करना चाहिए। वह अन्न मानो देखो, मन से ले करके और प्राण की प्रतिभा को जन्म देने वाला होता है। इसीलिए वह मानो देखो, अनुष्ठान अपने मे सफलता को प्राप्त होता है।

तो मुझे स्मरण आता रहा है बेटा! देखो, राजा रघु के यहाँ जब याग हुआ तो वह मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला की अग्नि में तपाया हुआ मानो तरंगों से तपाया हुए अन्न को पान किया जाता है तो वह मानो देखो, याग सफल होता है क्योंकि मन की धारा उसी में रहती है, मन की तरंगों का जन्म उसी से उत्पन्न होता है और जब मनस्तं ब्रह्मा देखो, यह मन इस पृथ्वी से ले करके और सूर्य मण्डल क्या लोक-लोकान्तर में क्या परमात्मा में रमण करने वाला, वह ब्रह्माण्डं भूतं ब्रह्वे वही मनस्तव कहलाता है, जो मानो देखो, याग को पवित्र बनाया जाता है। विचार-विनिमय इस सम्बन्ध में रमण करना नही चाहता हूँ कर्म काण्ड का बहुत महत्व माना गया है, कर्म काण्ड की पद्धतियों में, यज्ञमान होता जन, यदि मन की प्रकृति चंचल बन गई है, मानो देखो, हिंसक बन गई है तो वह मानो देखो, यज्ञ का जो तारतम्य है, वह समाप्त हो जाता है। जैसे विद्युत का निर्माण करने वाला, विद्युत के मध्य में से मानो देखो, उसको दूरी कर देता है, कटि अस्तु कर देता है, तो वह विद्युत का सम्बन्ध देखो, कुछ समय के लिए शान्त हो जाता है अथवा उसका तांता शान्त हो जाता है। उसी से देखो, उसका निर्माण होता है। तो इसीलिए देखो, यज्ञशाला में तपे हुए ब्रह्मचारी हों, तपा हुआ ब्रह्मा हो, जो मानो देखो, अपनी ईर्ष्या से रहित हो, ईर्ष्या से रहित होने वाला मानो देखो, ब्रह्मा ब्रह्मतव को प्राप्त होता है और ब्रह्मचर्य से सजातीय जो ब्रह्मचारी हैं वह अपने ब्रह्मवर्चोसि को प्राप्त हो करके ब्रह्म का दर्शन करता है मानो यज्ञमान की वाणी को, जब होता जन पवित्र बनाता है द्यौ भू र्भुवः स्वः को ऊँचा बनाता है वह मानो देखो, देवतव को प्राप्त होता है और इसी प्रकार अमृतं देखो, होताजन, जो यज्ञमान की वाणी को पवित्र बनाना चाहता है, वह स्वाहाः कह करके, स्वः लोक को प्राप्त हो जाते हैं। तो विचार आता है बेटा! मानो देखो, वेद का यह मर्म है, वेद के मर्म को जानने वाले, मानो उस विद्या को अच्छी प्रकार जानते हैं। जैसे याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने मानो देखो, अनुष्ठान कियें हैं, एक समय मुझे स्मरण है कागभुषुण्ड जी ने सविता नामक मानो देखो, एक पोथी का निर्माण किया था, जिसमे यज्ञों का सर्वत्र विधि विधान उसमें वर्णित किया था। उन्होंने देखो, बारह-बारह वर्ष के अनुष्ठान किये, और कागभुषुण्ड जी ने लोमश मुनि की

आज्ञा से जो ऋषि आता उसके भाव को जान करके मानो देखो, उसको नियुक्त कर देता।

याग का स्वरूप

तो विचार आता है बेटा! यज्ञ अपने में बड़ा महत्वपूर्ण एक क्रियाकलाप माना गया है, इसका मन और प्राण से विशेष समन्वय होता है, पंच महाभूतों की प्रतिभा से उसका समन्वय होता है और वायुमण्डल से जो तरगें जाती है वह प्रदूषण को अपने में निगल जाती हैं, और शुद्धिकरण कर मानो उसमें प्रसार कर देती हैं। तो विचार आता रहता है कि प्रकृति के मण्डल में प्रदूषण नही होता है, जब मानव की वाणी पवित्र होती है, तो प्रदूषण नही रहेगा, नेत्र पवित्र बन गयें है, तो प्रदूषण नही रहेगा। यदि उसके अमृतं ब्रह्मा त्वचा में प्रीति है, वह मृत्यु से पार हो गया है, तो प्रदूषण नही रहेगा मानो इसी प्रकार उनका जो वाक् शक्ति है। वह इतनी पवित्र होनी चाहिए जिससे देखो, मृत्यु से वह पार हो जाएं। क्योंकि संसार में जितने भी अनुष्ठान हैं, वह इसीलिए करते है। कि हम मृत्यु से पार हो जाएं। तो मृत्यु से पार कैसे होंगे मानो देखो, मृत्यु से पार होने से हम मानो देखो, नेत्रों की ज्योति से अपने से समन्वय कर लें, और देखो, अमृतं घ्राणता को पृथ्वी से उसका अपना समन्वय कर लें, अपने में निबटारा करते चले जाएं, और त्वचा का सम्बन्ध है, वायु से अपना समन्वय करते चले जाएं, और वाणीं ब्रह्मे देखो, वाक् शक्ति का हम अन्तरिक्ष से इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, वाणी का रसों से देखो, अपने में अवृत करते हुए मानो देखो, प्रत्येक इन्द्रियों को ज्ञानेन्द्रियों को अरे, मृत्यु से पार कर दो। वह स्वः मे प्रवेश कर दो मानो स्वः लोक में ले जाओ उससे मानो देखो, मृत्यु से पार हो जाओगे, केवल आत्मा पंच महाभूतां के लोक मे रमण करने वाला वह पंच महा भौतिक बन करके वह मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है।

तो मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही केवल यह क्या मुनिवरों! देखो, यह वाक् जब उन्होंने उद्गीत रूप में गाया तो मानो देखो, याग प्रारम्भ हो गया याग में आहार याग में व्यवहार याग में मानो देखो, हिंसा नही होनी चाहिए। इसीलिए देखो, मैं आज उच्चारण कर रहा हूँ कि महर्षियों का वाक्यं ब्रह्मे व्रतं ऋषियों ने कहा है क्या वाक् शक्ति में पवित्रता होनी चाहिए, और राजा को कहा हे रघु! आप तो मानो देखो, याज्ञिक बन गएं हो, और तुम्हारा राष्ट्र भी याज्ञिक होना चाहिए, प्रजा में ज्ञान होना चाहिए, प्रजा में अनुशासन होना चाहिए, और अनुशासन जब होता है जबकि राजा स्वयं अनुशासित हो जाता है। यदि राजा अनुशासित नही होता है, तो प्रजा कदापि भी अनुशासित नही होगी यदि राजा याज्ञिक बन जाएं प्रजा याज्ञिक बन जाएगी, वह वेदों का ज्ञान विज्ञान में उड़ान उड़ने वाला राजा हो जाएं। तो प्रजा भी उसी में उड़ान उड़ने लगती है, मानो देखो, इसीलिए जैसे गृहपति और गृह स्वामिनी हैं। मानो देखो, यदि उनके गृह में पवित्रता आ गई है। तो बाल्य बालिका पवित्रता की धारा में रमण कर जाते हैं, राजा के राष्ट्र में विज्ञान होना चाहिए, परन्तु विज्ञान का यदि दुरूपयोग हो जाता है। तो वह विज्ञान ही मानो देखो, राष्ट्र को निगल जाता है, और यदि राष्ट्र में विज्ञान का सदुपयोग होता है, तो वही राष्ट्र मुनिवरों! देखो, राष्ट्र की प्रतिभा को जन्म दे देता है।

तो विचार आता रहता है देखो, माता-पिताओं का आचरण और उनकी पवित्रता देखो, बाल्यों को ऊँचा बनाती है, गृह को पवित्र बना देती है। तो इसी प्रकार राष्ट्रवाद की चर्चाएं मैं प्रगट करता रहता हूँ, और आचार्य कुल में जब विद्यालयों में आचार्य पवित्र है। तो ब्रह्मचारी पवित्र बनेगा और ब्रह्मचर्य से मानो देखो, मृत्यु से पार हो जाएगा, ब्रह्मचारी ब्रह्म में परिणत होता रहेगा, तो इसीलिए देखो, तुम्हारा जीवनउस परमपिता परमात्मा से कटिबद्ध रहना चाहिए आओ, मुनिवरों! देखो, मैं आज तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ, विचार-विनिमय केवल यह क्या आज हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हमें मृत्यु से पार होना है। याग का अभिप्रायः है कि मृत्यु से पार होना है याग का अभिप्रायः है हिंसा से रहित रहना मानो

क्योंकि पंच महाभौतिकता से रहित है, आत्मा हिंसा से रहित है, मानो देखो, मनस्तव प्रकृति का तन्तु हैं। तो इसीलिए मानव को हिंसा से रहित रहना चाहिए, और देखो, वह मनका बना करके एक-एक वेदमन्त्र देवता से पिरोया हुआ है, उसी देवता की प्रतिभा को ले करके एक माला बनानी चाहिए और उस माला को जो धारण करता है प्रत्येक आहुति मानो देखो, मनका बन करके वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोऐ जाते हैं, और पिरोने से मानो देखो, माला बन जाती है। उस माला को धारण करने वाला मानो देखो, यह जगत कहलाता है, पंच महाभूत कहलाता है, पंच महाभूतों की माला बनती है, तो मानो देखो, लोक बन जाते हैं, लोकों की माला बनती है, तो मानो देखो, यह गन्धर्वतव बन जाते हैं, और जब मानो देखो, इसी प्रकार माला बनती रहती है। तो यह ब्रह्माण्ड मानो देखो, मालाओं के सदृश्य हो जाते हैं, इस माला को धारण करने वाला मानो साधक अपने में साधना में परिणत हो जाता है।

याग का अभिप्रायः

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, केवल यह कि हमारा जीवन एक महानता में पिरोया हुआ होना चाहिए आज मैं विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ कर्म काण्ड की पद्धतियों में मानो देखो, जैसे वरुण है वरुण का स्थान वह देखो, ईशाण ब्रह्रे मानो देखो, ईशाण स्थली पर होता है, वहाँ विद्यमान हो करके मानो देखो, जलसतं ब्रह्रा जल का मानो देखो, प्रोक्षण होता है और वह प्रोक्षण मानो देखो, जैसे परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के पिता ने जब संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया, तो मानो देखो, एक मेखला है, जिसको समुद्र कहते हैं, समुद्र मानो देखो, एक मेखला का क्रियाकलाप कर रहा है। वह वायुमण्डल से दूषित तरंगो को अपने में तरंगित कर रहा है। उसका शोधन कर रहा है, इसी प्रकार जल में जल की पूजा मानो यज्ञशाला में मेखला में होती है, इसी प्रकार वरुण की पूजा होती है, पूजा का अभिप्रायः है, क्या उसका सदुपयोग होना चाहिए, और देखो, वरुण को विद्यमान करते हैं, तो देखो, स्वर्ण के कलश होने चाहिएं, और चन्द्रवृत्तियों के कलश होने चाहिएं, मानो और भी नाना प्रकार की धातुओं के कलश उनमें तरंगे जो विशेष तरंगो को अपने में ग्रहण कर सके ऐसे पात्र में जल होना चाहिए। मानो देखो, पृथ्वी के रजों से बने हुए जो पात्र हैं वह मुनिवरों! देखो, अपने में धारण करने वाले तरंगित होते हैं। तो मुनिवरों! देखो, वहाँ कलश का पूजन है, अग्नि देवताओं का मुख बन करके मेखला में रमण करती है, परमाणुओं को ले करके ऊर्ध्वा में गमन करती है, वही मानो देखो, मानव को उतिष्ठित बनना चाहिए, और ऊर्ध्वा में गमन करना चाहिए अग्नं ब्रह्मा लोकां व्रतं मेरे पुत्रों! देखो, इसी प्रकार वेद के आचार्यों ने अपना-अपना मन्तव्य दिया। अपने मन्तव्य की चर्चा तो बेटा! मैं कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् केवल इतना उच्चारण कर रहा हूँ, क्या प्रत्येक मानव को अपने जीवन को ऊँचा बनाते हुए याग जैसे क्रियाकलापों को उसके कर्म काण्डों को जान करके ही अग्रणीय बनता चला जाएं, और स्वाहा ही स्वाहा कहता चला जाएं। अपनी वाणी से मेरी वाणी को पवित्र बना दो, मेरे हृदय से इसका समन्वय है, मेरे हृदय का मिलान अपने हृदय से हृदय का मिलान हो जाएं जिससे प्रभु मेरे जीवन में अन्धकार न रहें मैं शुक्ल पक्ष का गामी बन जाऊं मैं कृष्ण पक्ष का त्यागता रहूँ क्योंकि ज्ञान का नाम ही मुनिवरों! देखो, शुक्ल पक्ष है और अज्ञान का नाम ही कृष्ण पक्ष कहलाता है। इसीलिए सबको अन्धकार को मैं दृष्टिपात करता, मैं प्रकाश में रत्त हो जाऊं। तो मेरे प्यारे! आज का हमारा अभिप्रायः क्या है हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए हम कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष को विचारते हुअए अपनी इन्द्रियों को मृत्युंजय बनाते चले जाएं इन्द्रियों के रहस्यों को जानना ज्ञान और विज्ञान में प्रवेश होना यही तो मुनिवरों! देखो, विज्ञानं भूतं ब्रह्मा यही तो विज्ञान की प्रतिभा कहलाती है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर

से पार होते चले जाएं, ऐसा हमारा प्रयास होना चाहिए। जैसें मैंने देखो, भीष्म की चर्चांए प्रगट की हैं, पितामह भीष्म की चर्चाए बेटा! देखो, उनका शुक्ल पक्ष बन गया तो शरीर को त्यागा गया जब मानव देखो, ज्ञानी बन जाता है। तो शरीर में ज्ञानी बन करके इस संसार को जानना चाहिए, जिससे आगे तरंगो में तरंगित हो करके ज्ञान का पुंज हमें प्राप्त हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, विचार यह कि बेटा! माला को धारण करना चाहिए, यह परमात्मा की विशेष माला है, इस माला को माला में ही परिणत हो करके हम अपने मनों के ऊपर विचार-विनिमय करते हुए इस संसार सागर से पार हों जाएं। यह आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन ओ३म् देवाः आभ्यां रथ माना प्राची गतं माना।

७ महाराज रघु का याग १२ ०३ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, जिस भी काल में, आचार्य जन अपनी-अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके विचार-विनिमय करने लगे हैं, तो एक-एक वेदमन्त्र के ऊपर उन्होंने अनुसन्धान किया जैसे मानो समुद्र में परिणत होने के पश्चात नाना प्रकार की सृष्टि प्रायः हमें दृष्टिपात आती है इसी प्रकार एक-एक वेद के मन्त्र में नाना प्रकार की विद्याओं का प्रादुर्भाव होता रहा है, और उस वेदमन्त्र के ऊपर विचार-विनिमय करते रहे हैं, जैसे हमारे यहाँ आज का वेदमन्त्र आ रहा था जंग्रम ब्रह्मणं व्रतं देवत्वां महा वर्णं देवतवां वाचसतर्षृह्वा तो ये वेद का मन्त्र, हमारा आख्यिकाओं के रूप में हमें यह वर्णित करा रहा है, क्या यह वेदमन्त्रों से चिन्तन करने से यह प्रतीत होता है क्या यह संसार नाना प्रकार की उपाधियों से अलंकृत किया गया है।

महादेव

हमारे यहाँ जैसे राजा भी एक उपाधि के रूप में परिणत माना गया है, इसी प्रकार हमारे यहाँ नाना प्रकार की, उपाधियां कही जाती हैं, क्योंकि महादेव भी एक उपाधि है, जो महादेव देवों का भी देव है, हमारे यहाँ देवो का महादेव की बड़ी महिमा का वर्णन आता रहा है। आचार्यों ने जब आचार्यों के समीप जब यह वेदमन्त्र आया, तो उन्होंने महादेव की विवेचना करते हुए कहा, कि यह जो ब्रह्माण्ड है, मानो यह महादेवं भूतं वर्णसुता यह मानो देखो, अवृत्तों से पिराया हुआ है, जिसमें मानो प्रत्येक वस्तु तुम्हे अपनी महानता में दृष्टिपात आती रहती है, तो इसी प्रकार देखो, महादेव नाम, हमारे यहाँ याग को माना गया है, याग का नाम भी महादेव है, क्योंकि जो देवताओं का देव है, जिस महादेव का महत्व अग्नि मानो मुखारबिन्दु हैं और जिसमें मानो शब्द भी उसका मूर्ध्वा कहा जाता है। तो इसी प्रकार देखो, हमारे वैदिक साहित्य में, ये नाना प्रकार से अवृत माना गया है। तो हमें यह विचारना चाहिए कि हम प्रत्येक उपाधि के ऊपर विचार-विनिमय करते चले जाएं, जैसे एक आयुर्वेदा आचार्य को हम मानो देखो, उसको आयुर्वेद की औषधियां से अलंकृत करते हैं, तो वैद्यराज कहलाता है। वैद्याम भूतं ब्रहे जो मानो देखो, दूसरों के कष्टों को दूरं ब्रहे मानो दूरिता को जो नष्ट करने वाला हो इसी प्रकार यहाँ परमपिता परमात्मा को, मानो महादेव की उपाधियां दी जाती हैं, जैसे यज्ञं ब्रह्मणा मानो जैसे जो रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण से भी उपराम हो जाता है, उसको भी रजो मानो देखो वह अपने में महादेव कहलाता है। जो देवताओं का भी देवतं कहलाता है। वह हम सदैव महादेव की उपासना करते रहें, जो याज्ञिक जन अपनी एकान्त स्थलियों पर विद्यमान हो करके, उस महादेव अथवा याग की महिमा का वर्णन करते है। क्योंकि राजा का नाम भी महादेव कहलाता है। जिस राजा के राष्ट्र में मानो प्रजा में शान्ति हो और राजा स्वयं अपनी इन्द्रियों पर संयम करने वाला हो, तो वह राजा देखो, प्रजा का स्वामी होने से जैसे मैंने पुरातन काल में कहा कि जैसे हिमालय पर्वत माना गया है। ऊर्ध्वा में रत्त है। इसी प्रकार जिस राजा के राष्ट्र में इस प्रकार की विचारक प्रजा हो जो मानो देखो, दर्शनों से गुथे विचारों को अपने में धारण करने वाली निर्मोहिता का व्रत हो मानो प्रजा में मोह न हो प्रेम की प्रतिभा मानो देखो, जैसे वायु अपने में गमन करता है, इसी प्रकार राजं ब्रहे देखो, हिमालय के तुल्य रहने वाली प्रजा हो उसका जो स्वामी है, निर्मोही है, राजा है, उसका नाम महादेव कहा जाता है। परन्तु देखो, वह यज्ञम् ब्रह्वा कृतं

मानो देखो, उस यज्ञ को भी महादेव कहते हैं। जहाँ मानो देखो, देवताओं की तरंगे देवताओं का निर्माण अथवा देवताओं की आभाओं का अन्नाद उत्पन्न होता हो, मानो देखो, मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हें वर्णन करते हुए कहा था कि यज्ञ में मानो सर्वत्रता का पूजन होने से और देवता मानो जिसके अंग-संग रहने से वह याग महादेव है, क्योंकि वह सुगन्ध देता है, वह वृत्तियाँ देता है, परमाणुओं का आदान-प्रदान करता रहता है, और विज्ञान देता है क्योंकि विज्ञान की जो उपलब्धियां हैं, वह प्रायः यागों से उत्पन्न हुआ करती हैं, प्रायः देखो, मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन करते हुए कहा कि यज्ञशाला में विद्यमान हो करके ज्ञानी पुरूष अथवा विवेकी पुरूष यज्ञ का अवधान करके और उसमें मानो ब्रह्मे वर्णसुतं उसी में विज्ञान को प्रायः अपने में दृष्टिपात करते रहे हैं, जैसे विद्यालयों में देखो, हमारे यहाँ नाना प्रकार की शालाएं हैं, तो एक उनमें विज्ञानशाला होती हैं, और विज्ञानशाला में देखो, ब्रह्मचारी विद्यमान हो करके अपनी उड़ाने उड़ते रहें हैं, और उस उड़ान का अभिप्रायः यह होता है कि लोक-लोकान्तरों की यात्रा करने वाला राजा के राष्ट्र में यातायात होना चाहिए। मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें अपने वाक् देते हुए कहा था यह हमारे यहाँ देखो, राजा रावण के राष्ट्र में या देखो, बहुत से राजा अयोध्या में इस प्रकार के हुए हैं, उनके यहाँ नाना प्रकार के यातायात लोक-लोकान्तर में जाने के थे मानो द्वापर के काल तक यह प्रायः विज्ञान बना रहा और जब महाभारत काल समाप्त हुआ तो महाभारत में यह सर्वत्र विज्ञान देखो, रसातल को चला गया। यह विज्ञान देखो, नष्ट हो गया जो मानो सूर्य की किरणों से यान देखो, लोकों की परिक्रमा की जाती है, वह सूर्य की किरणो चन्द्रमा की शीतल कान्ति किरणों से ले करके यानों का निर्माण होता रहा है, अथवा उसमें गति करने की क्षमता होती है, तो ऐसे ही प्राण सत्ता जैसे मानव के शरीर में परमपिता परमात्मा ने देखो, वायु का विभाजन किया है, मानो देखो, कहीं प्राण के रूप में, कहीं अपान के रूप में, कहीं व्यान के रूप में, कहीं उसी को देखो, समान और उदान के रूप में, मानो देखो, उसका वर्णन किया है। यह परमपिता परमात्मा की एक अनुपम रचना है, उसका विज्ञान बड़ा अनूठा माना गया है। तो इन्हीं प्राणो के आश्रित हो करके यह शरीर हमारा यन्त्र बन करके गति करता है। इसी का जब स्थूल रूप हम ले करके यन्त्रों का निर्माण करते हैं, तो लोक-लोकान्तरों की यात्रा भी इसी के माध्यम से प्रायः होती रही है।

तो आज मैं बेटा! शून्य बिन्दु में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, विचार केवल यह कि हमारा जो विज्ञान है, हमारी जो मानो धाराएं हैं वह बड़ी विच्छिन्नता में परिणत होती रही हैं आज का विचार हमारा यह कि हम परमपिता परमात्मा की अनुपम विज्ञानमयी धारा को जानने का प्रयास करें हमारे यहाँ जब विज्ञानवेत्ता पनपता है, मैंने तुम्हें कई काल शिकामकेतु उद्दालक की चर्चाएं की हैं, उद्दालक गोत्र में देखो, ऋषि शिकामकेतु उद्दालक हुए हैं, जिनके यहाँ देखो, एक-एक शब्द में मानो देखो, यन्त्र हैं एक-एक शब्द में विद्यमान होने वाला सर्वत्र वायु का नृत्त हो रहा है, और उसी में अपने में उड़ान उड़ने वाले मानो देखो, चित्र विद्यमान रहते हैं। तो विचार आता रहता है कि यह विज्ञान अपने में मानो अपने में पूर्णता को प्राप्त होता रहा है, मैं यहाँ शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ नही जब मैं मानो देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि की चर्चाएं या तत्त्व मुनि की चर्चाएं स्मरण आती रहती हैं। उनका नृत्त स्मरण आता रहता है तो बेटा! लोकों की यात्रा करने में सफलता को प्राप्त होते रहे हैं तो लोक-लोकान्तरों में जाना, यातायात बनाना, मेरे प्यारे! देखो, मैंने तुम्हे कई काल में वर्णन करते हुए कहा, महाभारत के काल में, जब मुझे महाभारत का वह काल स्मरण आता है, तो मानो देखो, मैं अर्जुन के पुरूषार्थ और उनका जो क्रियाकलाप है, वह बड़ा विचित्र रहा है, जिन्होंने अपने विज्ञान के यन्त्रों में महान पुरूषार्थ किया, और पुरूषार्थ इतना किया कि वह अपने में मानो देखो, यन्त्रों में विद्यमान हो करके, जो महाराजा इन्द्र की सहायता से उन्होंने यन्त्रों का व्यवधान किया और यन्त्रों में विद्यमान हो करके वह मंगल में, मंगल की यात्रा करना और वहाँ के वैज्ञानिकों से नाना प्रकार

की विद्या का अध्ययन करना, यन्त्रों को क्रियात्मकता में जानना वह मानो देखो, उनका विज्ञान, उनका पुरूषार्थ बड़ा विचित्र रहा है।

तो आज मैं बेटा! इस प्रकार के वाक्, नही देना चाहता हूँ केवल ये कि हमारे यहाँ विज्ञान में, कोई सूक्ष्मता नही रही हैं वैदिक साहित्य में, प्रायः यह आता रहा है कि हमारे यहाँ ब्रह्मणो व्रतं देवतवां ब्रह्म उपाधसुते यह तो उपाधि से अलंकृत होने वाला जगत है मानो जैसे हमारे यहाँ इन्द्र नाम उपाधि है, शिव नाम भी उपाधि है, ब्रह्म नाम भी उपाधि मानी गई हैं, विष्णु भी उपाधि है, और देखो, ऋषियों में वशिष्ठ भी उपाधि है, और जमदग्नि ब्रह्मा वर्णसुतं जमदग्नि भी एक उपाधि है, अत्रि भी एक उपाधि मानी गई है हमारे यहाँ ऋषि-मनि जब अपनी लेखनियाँ करना प्रारम्भ करते हैं, तो मानो देखो, वाणी को अत्रि कहते हैं मानो यह एक उपाधि से अलंकृत है अत्रि उसे कहा जाता है जो अति अपनी वाणी का उपयोग करके और वह सिद्धान्तों से अपने वाक्यों को उद्गीत रूप से गाता है अथवा गम्भीर परमात्मा के अगाध समुद्रो में समुद्रित हो करके अपनी वाणी का उद्गीत गाता है वह अत्रि कहलाता है मानो देखो, यह सब हमारे यहाँ विश्वामित्र भी एक उपाधि रूप वर्णित की जाती है तो आज मैं बेटा! देखो, उपाधियों में नही जाना चाहता हूँ केवल दधीचि भी एक उपाधि है अमृतं देखो, दधीचि के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं, इस साहित्य में इन्द्रो गणं ब्रह्मा देवतवां मानो देखो, हमारे यहाँ ये जो उपाधियां है। यह वैदिक साहित्य में, उनके गुणों को जानना अथवा उनके गुणों के आधार पर जब स्वीकार करते हैं, तो मानो देखो, वह हमारे विचारों में विचरण करने लगते हैं, जैसे हमारे यहाँ ब्रह्मणां ब्रह्मे इन्द्र हैं, तो इन्द्र एक सौ एक अश्वमेध याग करने से, इन्द्र बनता है, वह हमारे यहाँ एक परम्परागतों से मानो देखो, यहाँ यागों में इन्द्र की उपाधि क्यों? क्योंकि इन्द्र देखो, उसे कहते हैं, जो सर्वत्र राजाओं को याग का अभिप्रायः यह है कि जो सर्वत्र राजाओं को अपने ज्ञान से अपने कौतुक से अथवा अपने वीरतव से, अपनी महानता से जो मानो प्रत्येक राजा को विजय कर लेता है, ज्ञान के द्वारा मानो देखो, दीक्षा के द्वारा, यन्त्रों के द्वारा, किसी भी प्रकार से जब वह विजय कर लेता है, तो वह अश्वमेध याग का अधिकारी होता है, और वह राजा जब अश्वमेध याग करता है, तो मानो देखो, उसे इन्द्र की उपाधि प्रदान की जाती है, यह उपाधियों से अलंकृत है, इन्द्र वह कहलाता है, जो ब्रह्मा व्रतं मानो देखो, विष्णु वह कहलाता है जो विष्णु ब्रह्मस कृतं देवतं विष्णु वह विष्णु कहलाता है जो मानो देखो, राजा चार भुजों में मंगलं ब्रहे जो चार भुजों को ले करके अलंकृत होता है, मानो देखो, सबसे प्रथम भुज में पदम, गदा, चक्र, और देखो, वह शंख ध्वनि होती है जिस राजा के राष्ट्र में मानो देखो, सबसे प्रथम चरित्र, पदम होता है, द्वितीय में गदा होती है और तृतीय में चक्र होता है वह अपनी संस्कृति का प्रसार करता है, और शंख ध्वनि होती है, ध्वनि कहते हैं बेटा! ध्वनि के सम्बन्ध में बेटा! बड़ा एक विशेष रूप माना गया है। मानो देखो, ध्वनि कहते हैं, जो शंख ध्वनि है, मानो देखो, शंखां भूतं ब्रह्वा लोकं वाचन्नं ब्रह्वे देवत्वां मानो देखो, ध्वनि उसे कहते हैं, जब ध्वनि के ऊपर अनुसन्धान करने लगते हैं, तो मानो देखो, वेदज्ञ ध्वनि अपने में ध्वनित होती रहती है, जैसे हमारे यहाँ वेदों का उद्गीत गाने वाला जब उद्गीत गाता है, वह सबसे प्रथम उस उद्गीत को गाता है, जैसे जटा ब्रह्मा कृतं देवमा ब्रहे जैसे जटा पाठ है, माला पाठ है, विसर्ग उदात्त और अनुदात्त में जब मानो देखो, वह पाण्डितव अपने में गान गाता है। राजा के राष्ट्र में जितना पवित्र वेदों का ज्ञान जटा पाठ और माला पाठ में गाया जाता है, स्वर संगम में परिणत कर लेता है, अपने को तो राजा के राष्ट्र में जितना बुद्धिजीवी प्राणी होता है, और बुद्धिजीवी उस प्राणी को कहते हैं। जो ज्ञान में कर्म में और देखो, उसकी करणी कथनी मानो देखो, दोनो एक ही तुल्य होती हैं, विचार आता है कि उस राजा के राष्ट्र में जो विवकी जो ज्ञान जो रजोगुण से उपरामता को प्राप्त होते हैं, सतोगुण से उपरामता को प्राप्त होने वाला योगी कहलाता है। वह मानो देखो, विवेकी पुरूष होता है, राजा को इस प्रकार का ज्ञान हो, जिस राजा को देखो, राजा भी विवेकी

होना चाहिए, यदि राजा की दृष्टि में अपनी सन्तान का मोह होगा, और प्रजा का मोह नही होगा, उतना मानो देखो, वह राजा राज्य का अधिकारी नही होता, जब न्यायालय में विद्यमान हो करके, न्यायाधीश जब न्याय करता है, एक स्थली में उसका पुत्र है, एक स्थली में प्रजा का स्वामी है, जब राजा न्याय करता है, दोनों का मानो देखो, न्याय वह परमात्मा की कृतिका का न्याय होता है, वह न्यायाधीश बन करके देखो, उसी प्रकार का देखो, निष्पक्ष से उसका न्याय है, वही उसको देवता बनाता है। तो इस प्रकार मानो देखो, अमृतं वह उसको विवेकी बना देता है, ज्ञानी बना देता है।

तो आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं, केवल यह क्या मानो देखो, राजा अपने में महान पवित्रतव की धारा में रहना चाहिए, मोह ममता में मानो देखो, राष्ट्र और प्रजा का हम पालन नही कर सकते, मोह ममता में ईश्वर का ध्यानावस्थित नही हो सकते। मानो देखो, जो ईश्वर का भक्त होता है, वह भी देखो, मोह में आ जाएगा तो देखो, उसकी आत्मा का हनन हो जाएगा। राजा यदि मोह में आ जाएगा तो उसकी राष्ट्रीयता का हनन हो जाएगा, तो विचार आता रहता है बेटा! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा प्रगट नही करूंगा।

आओ, मैं तुम्हें उस याग में ले जाना चाहता हूँ, जिस याग की चर्चाएं मैं कई समय से कर रहा हूँ, कई समय से मानो देखो, याग की चर्चाएं विज्ञान की चर्चाएं प्रायः होती रही हैं, आओ, मुनिवरों! देखो, ब्रह्मणे व्रतप्प द्रवतव प्रह्वा वेद का वाक् कहता है, अमृतं मानो देखो, राजा रघु के यहाँ जब याग प्रारम्भ हो गया, तो नाना ऋषि-मुनि बेटा! उसमें विद्यमान हैं, निर्वाचन हुआ तो वशिष्ठ मुनि महाराज पुरोहित बनें और मुनिवरों! देखो, महर्षि शाकल्य मुनि महाराज उस याग के मानो देखो, आचार्य बनें और मुनिवरों! देखो, ब्रह्मकेतु ब्रह्मा और महर्षि शीतल व्रेत केतु मानो देखो, विश्वामित्र उस याग के ब्रह्मतव को प्राप्त हो गएं, और जब ब्रह्मतव को प्राप्त हो करके बेटा! नाना ऋषि जैसे वरुण इत्यादि अपनी उपाधियों में अलंकृत हुए कोई अध्वर्यु बना, कोई उद्गाता बना, कोई मानो देखो, विचार-विनिमय करने वाला, व्रत बना तो बेटा! देखो, याग का प्रारम्भ हो गया। जब प्रारम्भ हो गया तो बेटा! देखो, विचारा गया ऋषि-मुनि रात्रि समय सब अपने कक्ष में सब विद्यमान हैं। तो विचारने से बेटा! ऋषि ने यह प्रश्न किया सोमवृत्तिका ने क्या महाराज यह जो याग है, यह अप्रतं कहलाता है, यह श्रुति है, और श्रुति का अभिप्रायः यह होता है, क्या मानो देखो, जिस याग में प्रत्येक वस्तु अपने को शान्त करके अपने को शान्त करके ही मानो देखो, सुगन्ध का प्रादुर्भाव कर देती है, जैसे समिधा है, वह अग्नि में समाप्त हो करके अपने स्थूल को समाप्त करके अपने में सूक्ष्मता में अग्नि में समर्पित हो करके उसका भोगतव्यं करके और वही अग्नि मानो देवताओं का भोज बन जाता है, और देवताओं का भोज बन करके देवता उससे तृप्त होते हैं, और जब तृप्त होते हैं, तो वही मानो देखो, प्रदूषण को समाप्त कर देते हैं। वह जन समूह के लिए पवित्र धारा को जन्म देते हैं। इसी प्रकार मानो देखो, जैसे नाना प्रकार का साकल्य है उस साकल्य में मधुपन है मानो देखो, उसमें मुधपन है पौष्टिक है सुगन्धित है और रोगनाशक है वह चारों प्रकार का साकल्य एकत्रित करके जब यज्ञमान हूत करता है यज्ञशाला में तो वह मानो देखो, वह चारों प्रकार का सूक्ष्म रूप बन करके अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो जाता है। एक-एक कण मानो देखो, वह माला बन करके वह प्रदूषण को समाप्त करता रहता है इसी प्रकार देखो, घृत में भी इसी प्रकार के चतुर्थ गुण कहलाए जाते हैं, घृत्यं भूतं ब्रह्मे देखो, श्रद्धा देखो, हमारे यहाँ घृत के बड़े पर्यायवाची शब्द हैं, घृत नाम मानो देखो, श्रद्धा को कहा गया है, जब श्रद्धा से ओत-प्रोत होने वाला, जो साकल्य है ओत-प्रोत होने वाला जो, गो रस है तो मुनिवरों! देखो, वह जब अन्तरिक्ष में, जब देवता उसे ग्रहण करते हैं, तो देवता प्रसन्न हो जाते हैं। प्रदूषण को समाप्त कर देते हैं। मानो देखो, वायु मण्डल उससे पवित्र बनता है, साधकों की दृष्टि में, साधना करने वाला, अपने में साधक बन करके ऊर्ध्वा को प्राप्त हो जाता है। तो इसी प्रकार उन्होंने अपने ब्रह्मणे व्रते तो कहा है कि असुति

मानो देखो, यह याग श्रुति कहा जाता है। इसीलिए हमें याग के ऊपर विचार-विनिमय करना चाहिए, उसमें जो भी जैसे मन्त्र हैं, मन्त्र देखो, देवता कहा जाता है, देवता जब व्रत होता है, तो मानो प्रत्येक देवता देवताओं के आँगन में विद्यमान होने वाला देखो, वेदमन्त्र और वेदमन्त्र के ऊपर देखो, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके और वह साकल्य उसमें ओत-प्रोत हो करके भावना से द्यौ को प्राप्त होता रहता है। वह अपने में मानो देखो, सूत्रित होता हुआ उस जगत में परिणत हो जाता है, तो इसी प्रकार याग अपने में बड़ा विचित्र एक क्रियाकलाप माना गया है। जो सृष्टि के प्रारम्भ से वर्तमान के काल तक जो क्रियाकलाप चल रहा है, वह बड़ा अनुपम है, इसके ऊपर विचार-विनिमय करना यह बड़ा एक श्रोत्रीय कहा जाता है, तो मानो देखो, इस प्रकार जब यज्ञमान अपनी भावना को अप्रत करता है।

मेरे प्यारे! देखो, याग लगभग छह माह तक वह याग रघु का प्रारम्भ रहा। छह माह के पश्चात मुनिवरों! देखो, उसका समापन हुआ, और जब समापन हुआ, तो बेटा! देखो, राजा रघु ने जितना द्रव्य था, वह कोष में जितना सब द्रव्य, गऊओं को माध्यम ब्रह्वे मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मवेत्ताओं को सब, उन्होंने दक्षिणा में परिणत कर दिया, मेरे प्यारे! देखो, राजा ने यह कहा कि हे पुरोहित जनों! मैं तुम्हें दक्षिणा में क्या दूं? उन्होंने कहा कि तुम हमें अमृतं ब्रह्मा देवतं तुम हमें अमृत दो। मेरे प्यारे! राजा रघु ने कहा-प्रभु! अमृत कहाँ प्राप्त होता है, उन्होंने कहा यज्ञमान यदि अमृत में चला गया है, तो हमें वह अमृत प्राप्त हो गया है। उन्होंने कहा-प्रभु! यह कैसा वाक् उद्गीत गा रहे हो, आप तो ब्रह्मवेत्ता हो ब्रह्मनिष्ठ हो आत्मा को विष्णु रूप बनाने वाले हो। हे प्रभु! आप तो स्वतः अमृत हो, मैं यह नही जान पाया हूँ, तुम्हारे शब्दों को उन्हें कहा कि हमें द्रव्य नही चाहिए, हमें द्रव्य नही चाहिए क्योकि राष्ट्र का जो द्रव्य है, वह हमारी बुद्धि को मानो संकुचन न कर दे।

हे राजन्! हम यह चाहते हैं कि तुम्हारे हृदय में जितनी तुम्हारी अन्तर्न्द्रियों में देखो, त्रुटियां हैं देखो, चित्त के जगत में उन त्रुटियों को तुम हमें प्रदान कर दोगे, हमें जितना भी दक्षिणा में परिणत कर दोगे, उतना ही देखो, यह राष्ट्र और समाज सब पवित्र बनता चला जाएगा। हमें पवित्रता की आवश्यकता है, हमें द्रव्य की आवश्यकता नही हैं, द्रव्य तो हम देखो, परमात्मा के राष्ट्र में देखो, वायु से ग्रहण कर लेते हैं, हम मानो देखो, जब प्राणायाम करते हैं, खेंचरी मुद्रा में परिणत हो जाते हैं, तो मानो देखो, अपने उदर की पूर्ति कर लेते हैं। हम जब मानो सूर्य प्राणायाम करते हैं, तो सूर्य से हम ऊर्जा को प्राप्त कर लेते हैं, जब चन्द्र प्राणायाम करते हैं, तो चन्द्रमा से मानो देखो, हम वह कान्ति को ग्रहण कर लेते हैं, और वायु से प्राण को ले लेते हैं, और प्रकृति मण्डल से मन को ले करके आत्मा को उसमे व्रत कर लेते है। आत्मा से चेतना को प्राप्त हो जाते हैं। हमे चेतन की आवश्यकता है, और यदि हम मृत्यु से पार होना चाहते हैं, तो मानो देखो, मृत्युंजय बनने के लिए हम सदैव अध्ययन करते हैं। प्राणायाम करते हुए मन और प्राण को दोनो को एक सूत्र में ला करके मानो देखो, परमात्मा के उस मानो ब्रह्मसूत्र में पिरों देते हैं। तो हम मानो देखो, मृत्युंजय बन जाते हैं।

हे राजन्! हमें क्या चाहिए दक्षिणा में दक्षिणा का अभिप्रायः केवल यह कि हमें हृदय चाहिए। क्योंकि हृदय से दक्षिणा का समन्वय होता है, जैसे चाक्राणी ने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से कहा था, दक्षिणां भूतं ब्रह्मे लोकां क्योंकि दक्षिणा का समन्वय हृदय से है, और हृदय का समन्वय श्रद्धा से है, और श्रद्धा का समन्वय वह मानो देखो, दक्षिणा से स्वीकार किया गया है। तो हमे दक्षिणा चाहिए, हमें द्रव्य नही चाहिए, हम केवल देखो, दक्षिणा चाहते हैं। मेरे प्यारे! रघु शान्त हो गया, उनकी देवी ने कहा-प्रभु! अब क्या दक्षिणा दे सकते हो? उन्होंने कहा कि जो इनकी इच्छा हो वह इन्हें अवश्य दूंगा, यदि दक्षिणा नही दूंगा, तो मेरा याग सम्पन्न नही होगा, और सम्पन्न यदि मुझे याग करना है। तो मुझे दक्षिणा देनी होगी मानो देखो, द्रव्य तो इनका राष्ट्रं ब्रह्मे ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा-प्रभु! यदि

द्रव्य यदि दोगे, तो एक ही मानो देखो, हमारी राष्ट्र धरोहर है, प्रजा की धरोहर है, प्रजा आप की धरोहर है, और प्रजा में हम भी है, तो हमारी भी धरोहर मानी गई है। मानो देखो, यदि हमें वेद की पोथी दोगे, तो वह पोथी भी हमारी धरोहर है। परन्तु देखो, वेदों का ज्ञान हम जब अध्ययन करते हैं, तो उसका अध्ययन से समन्वय रहता है, और अध्ययन का समन्वय मानो देखो, मन से हैं, और मन का समन्वय प्राण से हैं, और प्राण का समन्वय मानो देखो, हृदय से माना गया है, और हृदय ही मानो देखो, वह प्रभु की धरोहर है। वह प्रभु की धरोहर मानी गई हैं, क्योंकि जो प्रभु की अवहेलना करता है वही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, राजा अपने में वर्णनं ब्रह्मा कृतं शान्त हो गया, तो ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा-प्रभु! हम दक्षिणा में कुछ नही चाहते केवल यह उद्गीत चाहते हैं, जैसे परमात्मा का यह जगत हृदय है, ऐसे ही राष्ट्र का जो यह समाज है, यह हृदय है, और देखो, यह जो समाज है, इस जन समूह में देखो, एक दूसरे की भावना मानो देखो, एक दूसरें में सूत्र मानो मनका हैं, मनके हैं, धागें हैं, धागं ब्रह्मा दोनों का समन्वय हो करके माला बन जाती है। ऐसी हमें माला चाहिए, प्रभु राष्ट्र में देखो, प्रत्येक मानव का सम्मान होना चाहिए, और सम्मान का सम्मान जब होता है, जबकि राजा अपनी विद्या का सम्मान करता है, राजा अपने राष्ट्र में छात्र बल का सम्मान करता है, मानो देखो, इस प्रकार जब उन्होंने उद्गीत गाया, तो राजा रघु अपने में मौन हो गया, और रघु ने कहा-प्रभु! जो तुम्हारी इच्छा हो, वह अवश्य दूंगा। उन्होंने कहा तो प्रभु! हम यह चाहते हैं कि तुम्हारा जीवन मृत्यु से पार होना चाहिए, हम यही दक्षिणा में चाहते हैं, उन्होंने कहा कि तुम्हारा जीवन मृत्यु से कैसे पार होगा, उन्होंने कहा इस परमात्मा के रचाए हुए शरीर में पांच ज्ञानेन्द्रियाँ मानी गई हैं, पांच ज्ञानेन्द्रियाँ उन पांच ज्ञानेन्द्रियों का जो विषय है, जैसे नेत्रों का विषय जैसे दृष्टिपात करना उसका विषय रूप है, और उसका जो देवता है, वह अग्नि मानी गई है, परन्तु उसको रूप को संकीर्णता में ने दृष्टिपात करते हुए उसे अग्नि जब हम स्वीकार कर लेंगे, वह अग्नि होते ही मृत्यु से पार देखो, हमारे नेत्र हो जाएंगे। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा भगवन! जैसे वाणी है, वाणी देखो, अन्तरिक्षं ब्रह्मा व्रतं यह शब्द अन्तरिक्ष से आता है, जब हम अपने को अन्तरिक्ष ही स्वीकार कर लेंगे, तो अन्तरिक्ष की आभा में परिणत हो जाता है, तो मृत्यु से पार हो जाते हैं, उन्होंने कहा जैसे हमारे श्रोत्रों में शब्द आता है, शब्द देखो, दिशाओं से भ्रमण करके आता है, और दिशओं से भ्रमण करता हुआ, जब हम श्रेत्रों को दिशा स्वीकार कर लेंगें, तो दिशाओं में एक-एक परमाणु गमन करता है। एक-एक परमाणु संघर्ष करता रहता है, और वह जो परमाणुवाद संघर्ष करता रहता है, वही दिशा जब बन जाती है, दिशा स्वीकार कर लेते हैं। तो वह देखो, हम अमृतं देखो, अमृत हमारा जीवन अमृत बन गया वह हम ब्रह्मे व्रतं मानो देखो, मृत्यु से पार हो जाएंगे। हे प्रभु! हम यह चाहते हैं कि आपके नेत्र आपकी वाणी रसों में रहनी चाहिएं। परन्तु देखो, उसमें प्रत्येक प्रकार का रस होना चाहिए, उसका प्रतिनिधि जल है, और जल में नाना प्रकार का स्वादन होता है, वह जब जल रूप बन जाता है, तो देखो, जहाँ भी जल जाता है, वही प्राण सत्ता देता है, तो हे राजन! तुम्हारा जीवन प्राण सत्ता देने वाला बनेगा, वाणी तुम्हारी प्राण सत्ता देने वाली बनेगी, तो तुम मानं ब्रह्मे देखो, राष्ट्रं ब्रह्मा व्रत्यं वही हमारी दक्षिणा है, प्रत्येक इन्द्रियों का जो दोष है, उसे हमें प्रदान कर दो, तो यही हमारी दक्षिणा है।

तो मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने यह कहा तो राजा रघु मौन हो गया और रघु ने यह कहा कि देवी! अब क्या किया जाएं, हम क्या उत्तर दे सकते हैं? इन बुद्धिमानों का उन्होंने कहा हे देव! आपको दक्षिणा देनी है, और इन्हें लेनी है, परन्तु जो इच्छा हो वह प्रदान कीजिए। मेरे प्यारे! देखो, राजा रघु ने कहा तो प्रभु! मैं मानो देखो, मैंने यह निश्चय किया है, क्या मैं लगभग छह माह तब अपने जीवन को उत्तरायण में ले जाऊंगा, और अपने राष्ट्र का पालन भी करूंगा मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने यह दक्षिणा में प्रदान किया क्या राजा रघु ने कहा कि मैं छह माह

तक उत्तरायण बनाऊंगा, अपने जीवन को उत्तरायण का अभिप्रायः यह है, क्या प्रकाश में ले जाऊंगा, जैसे सूर्य उदय होता है, और वह प्रकाश देता चला जाता है, ऊर्ज्वा देता है, ऐसे ही हमारे जो उत्तरायण है, वह ज्ञान है, वह कर्म है, वह कर्म के साथ में हमारा ज्ञान हो ज्ञान के साथ में कर्म हो तो उसके साथ मेरा जीवन जब व्यतीत होगा तो मानो देखो, मैं अपने जीवन को उत्तरायण में ले जाऊंगा ऋषियों ने बेटा! वह दक्षिणा स्वीकार कर ली। स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा धन्य है, तो मेरे प्यारे! देखो, राजा ने रघु ने एक वाक् कहा कि-प्रभु! मैंने तुम्हें दक्षिणा प्रदान कर दी है, परन्तु मुझे आप क्या देना चाहोगे, तब मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा कि हमारा जो हृदय है, वह राष्ट्र के लिए है, वह हृदय हमारा राष्ट्र के लिए है, क्योंकि हृदय में सर्वत्र देवता अपना नृत्त करते रहते हैं, क्योंकि देखो, नेत्रों से प्रकाश आता है, रूप आता है, वही हृदय में रहता है, और देखो, रसना से रस आता है, वह भी हृदय में रहता है, और देखो, श्रोत्रों से शब्द आता है, वह भी हृदय में हैं, और वह इसी प्रकार पृथ्वी से गन्ध आती है, वह भी हृदय में हैं, वायु से प्रीति आती है, वह हृदय में हैं, तो हृदय ही तो मानो देखो, यज्ञशाला है, इस यज्ञशाला को हम आपको समर्पित करना चाहते हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, यह वाक् उन्होनें जब उद्गीत रूप में गाया तो राजा रघु मौन हो गया और उन्होंने मुनिवरों! देखो, ऋषि-मुनियों के चरणों को स्पर्श किया। उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! तो मेरे प्यारे! देखो, दक्षिणां भूतं ब्रह्मा व्रतं वेदमन्त्र कहता है हे यज्ञमान! तू दक्षिणा प्रदान कर। तू पुरोहित को दक्षिणा दे और पुरोहित कहता है मं ब्रहे व्रतं देवा बृह वृत्ति हे राजन्! हे अन्तर्तम्! हे यज्ञमान! तू तुझे दक्षिणा प्रदान करनी है, तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार के विचार जब राजा के राष्ट्र में होते हैं, राजा के याज्ञिक जैसे कर्मों में होते हैं, तो राजा का राष्ट्र बेटा! पवित्रता को प्राप्त हो जाता है। ज्ञानियों का राष्ट्र बन जाता है, और जिस राजा के राष्ट्र में बुद्धिजीवी पुरूष नही होते आध्यात्मिकवेत्ता नही होते उस राजा के राष्ट्र में अन्धकार छा जाता है, और वह अन्धकार छा करके अन्धकार में उग्रवाद है, प्रदूषण है उस राजा के राष्ट्र में समाज में महानता नही हो पाती तो विचार आता रहता है, मैं बहुत पुरातन काल में बेटा! यह चर्चा मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है, जैसा मैं आज राजा रघु की उस यज्ञशाला में विद्यमान था मानो देखो, ऐसा मन प्रसन्नता को प्राप्त हो रहा है विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, वह दक्षिणां भूतं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, अमृता उन्होंने दक्षिणा प्रदान कर दी उन्होंने कहा-प्रभु! आपका हृदय मेरे साथ है, तो मैं सदैव आपका दक्षिणाय अपने जीवन को उत्तरायण बनाऊंगा और दक्षिणाय को त्यागने का प्रयास करूंगा। तो मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार मानव को विचारना चाहिए, क्या हमे अपने में अपने पन का व्यवधान करते रहें। विचार-विनिमय करते रहें, तो बेटा! देखो, वह जो बुद्धिमानों का जो हृदय है, वह राष्ट्र के लिए होता है, वह समाज के लिए है, अपनी इन्द्रियों को मानो एक सूत्र में लाने का प्रयास करके वही देखो, ब्रह्म की आभा को चरने वाली है। वही ब्रह्म वर्चस कहलाते हैं, और वह ब्रह्मवर्चोसि बन करके ही संसार सागर से पार होने का प्रयास करते हैं। तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वाक् क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए, और मानो कर्म काण्ड की पद्धतियां को जानने का प्रयास करें, कर्म काण्ड की पद्धति हमारी क्या कहती है कर्म काण्ड यह नही कहता कि तुम देखो, अपने में मानो देखो, उग्रवाद के कर्म करो कर्म करना है तो विज्ञान के साथ करना है कर्म करना है तो तुम्हारा कर्म और ज्ञान दोनों एक सूत्र में परिणत हो जाएंगे तो तुम मानो देखो, महादेव की उपाधि को प्राप्त कर सकोगे तुम इन्द्र बनोगे और इन्द्र बन करके जमदग्नं ब्रह्मा तुम जमदग्नि बन करके अग्नि के सदृश्य बन जाओगे, अत्रि बन करके तुम जैसे प्राण यह शरीर की आभा को चरता रहता है, निगलता रहता है, ऐसे ही तुम मानो देखो, दधीचि की भांति बनोगे मानो देखो, इस प्रकार तुम्हारा जीवन महानता में गमन करना चाहिए। तो आज का हमारा वाक् यह क्या कह रहा है, वेदमन्त्र कहता है कि मानव का जीवन नाना प्रकार की उपाधियों से अलंकृत रहा है, राजा भी एक उपाधि है, मानो देखो, राजा वह उपाधि से अलंकृत

किया जाता है। जिस राजा का हृदय मन मस्तिष्क एक सूत्र में सूत्रित होता है, इसी प्रकार देखो, मानव अपने में मानवीयता को विचार-विनिमय करता हुआ, इस संसार सागर से आध्यात्मिकवाद को ले करके देखो, राष्ट्र अपने राष्ट्र को ऊँचा बना सके और जब आध्यात्मिक विवेकी पुरूष राजा के राष्ट्र में होते हैं। तो राजा अपने में महान बन जाता है, यह है बेटा! देखो, आज का हमारा विचार, राजा के राष्ट्र में देखो, पदम होना चाहिए, चक्र होना चाहिए, और राजा के राष्ट्र में शंख ध्वनि और अमृतं ब्रह्मा मंगलं ब्रहे अमृतं गदा होनी चाहिए। यह चार मानो देखो, नियमावली कहलाई जाती हैं। यह कर्म काण्ड की पद्धति में परन्तु चारों को सम्मिलत करके एक ही सूत्र में पिरोए जाते हैं। उसका केवल एक ही मन्तव्य है, क्या मानव देखो, अपनी शंख ध्वनि से ध्वनित हो जाएं, वही ध्वनि मानो देखो, वेदमन्त्रों में जटा पाठ में हैं वही ध्वनि घन पाठ में हैं, वही मानो देखो, ध्वनि जटा पाठ में हैं, और वही उस ध्वनि का व्यवधान करता हुआ अन्तरिक्ष में उसका ध्यानावस्थित हो जाता है, और उसी ध्वनि को जब साधक अपने में करता है, तो वह अनाहद मस्तिष्क में वह ध्वनि होती है, उसको योगीजन अपने में ध्यानावस्थित हो जाते हैं, और वह जो स्वर संगम में ध्वनित होती है, मेरे प्यारे! देखो, अपने में धारणा करते रहते हैं। उसी से मानो देखो, व्याकरण उसी से मानो देखो, जीवन की धाराएं हैं, वेदमन्त्रों का उद्गीत गायन हो सकता है, जो मानो देखो, अपने मस्तिष्क की ध्वनि को अनाहद में परन्तु एक सूत्र में लाने का प्रयास करता है बेटा! देखो, आज का विचार-विनिमय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए अपनी जीवन को प्राप्त करते रहें। मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हमारा जीवन एक अलंकृतों से परिणत होना चाहिए।

८ महाराज रघु का याग १३ ०३ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं, और उसकी महिमा का एक-एक परमाणु, अपनें में गुणगान गा रहा है, जो भी हमें दृष्टिपात आने वाला जगत है, चाहे वह जड़ रूप में हैं, चाहे वह चैतन्य रूप में हैं, परन्तु वह परमपिता परमात्मा का यशोगान गा रहा है इसीलिए हमारा एक-एक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का बखान करता है, अथवा उसके गुणों का वर्णन करता रहता है। तो हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें, वे परमपिता परमात्मा एक-एक कण-कण में विद्यमान हैं, एक-एक परमाणु उसका यशोगान गा रहा है। प्रत्येक लोक-लोकान्तर एक माला का समूह बना हुआ है, जिस मालाओं की चर्चा बेटा! मैं परम्परागतों से अपने विचारों में प्रस्तुत करता रहा हूँ, और यह हम विचार देते रहें हैं कि यह संसार एक माला के सदृश्य है, यहाँ प्रत्येक लोक-लोकान्तर एक दूसरे की माला बना हुआ है, और वह माला मानो जैसे पाण्डितव अपने में गान गाता है। जैसे माला पाठ का माला पाठ में अपने स्वरों व व्यंजनों से गान गाता है अथवा स्वरों में जैसे माला पाठ व जटा पाठ गाता है, तो वह जो माला पाठ है, वही तो अपने में वशिष्ठ माना गया है।

तो विचार आता रहता है कि हम मानो देखो, उस माला को जानने वाले बनें, क्योंकि ये परमात्मा का जो अनन्यमयी जगत हैं। जिसको अनन्तमयी कहा जाता है यह उस माला के सदृश्य है इस माला को जानना इस माला को अपने में धारण करना यह हमारा मानो कर्तव्यवाद माना जाता है आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का यशोगान गा रहा है।

आओ, मेरे पुत्रों! आज का हमारा वेदमन्त्र अपने में अपनेपन की आभा का वर्णन कर रहा है, यहाँ बेटा! देखो, जिस भी काल में ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान होते रहे हैं, उसी काल में एक-एक वेदमन्त्र के ऊपर अन्वेषण करते रहें। एक-एक वेदमन्त्र में बेटा! ब्रह्माण्ड की प्रतिभा का प्रायः वर्णन करते रहे हैं नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की प्रतिभा का वर्णन और अपनी आभा में रत्त होते रहे हैं, मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में कहा कि हमारे ऋषि-मुनियों की दो प्रकार की महानताएं परम्परागतों से रही हैं एक महानता यह रही है, कि हम भौतिक विज्ञान जिसे कहा करते हैं, एक आध्यात्मिक विज्ञान माना गया है, क्योंकि आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता जितने भी पुरूष हैं, वह आध्यात्मिक गान गाते अपनी आत्मा को जानने का प्रयास करते रहे हैं। क्योंकि पंच महाभूतों के लोक में यह आत्मा अपना वास करने वाला है और एक मुनिवरों! देखो, भौतिक विज्ञान है जिस भौतिकवाद के रूप में मानो देखो, यह सर्वत्र जगत हमें दृष्टिपात आता है, यह जो नाना ब्रह्माण्ड हैं, नाना जो लोक-लोकान्तर हैं, और लोक-लोकान्तर एक दूसरे को जो प्रभावित कर रहा है, एक दूसरे का जो माला बना हुआ है, तो मानो देखो, वह भौतिक विज्ञान के रूप में वर्णित रहा है। प्रत्येक मानो देखो, ऋषि-मुनि जब भी अपनी स्थलियों में विद्यमान रहे हैं और विद्यमान हो करके उनका अन्वेषण किया है बेटा! उन्होंने एक वेदमन्त्र को लिया उन्होंने बेटा! जैसे परमाणु, का समूह यह मानो शरीर है यह परमाणु एक-एक मानो देखो, माला का क्रियाकलाप कर रहा है इसी प्रकार, यह जो नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर हमें दृष्टिपात आते हैं यह लोक-लोकान्तर मानो देखो, एक दूसरे की माला बने हुए हैं, जैसे माला की चर्चा करते हुए जब शिकामकेतु उद्दालक मुनि से यह कहा गया कि महाराज! ब्रह्मचारियों से

यह कहा कि प्रभु! हम माला के सम्बन्ध में जानना चाहते हैं।

अहंकार से शरीर गठन

तो मेरे प्यारे! देखो, शिकामकेतु उद्दालक ने कहा क्या तुम विज्ञान के माध्यम से जानना चाहते हो या अमृतं मानो देखो, व्याख्या के रूप में जानना चाहते हो? उन्होंने कहा-प्रभु! हम मानो विज्ञान के रूप से ही जानना चाहते हैं तो शिकामकेतु उद्दालक ने बेटा! देखो, माला के रूप में कुछ वर्णन कराया कि मानं ब्रह्मे क्या मेरी जो विज्ञानशाला है, यह तुम्हें दृष्टिपात आ रही है, इसमें नाना ब्रह्मचारी अपना अन्वेषण करते हैं, और विज्ञानशाला में निरिक्षण करके मानो एक दूसरे की माला को जानने का प्रयास करते रहे हैं, मेरी विज्ञानशाला में मानो देखो, तीस लाख पृथ्वियों का समूह माना गया है। अब मैं देखो, पृथ्वियों को भी तुम्हें ईकाई में वर्णन करना चाहता हूँ, मानो इसका कोई स्वरूप ऐसा सूक्ष्म से सूक्ष्म बन जाता है, जैसे मानो देखो, एक परमाणु हैं, अणु वर्णानं ब्रहे देखो, तुम देवत्वां सति मानो देखो, परमाणु के रूप में तुम्हें दृष्टिपात आने लगेगा। मेरे प्यारे! ब्रह्मचारियों ने कहा-प्रभु! वर्णन कराईए। उन्होंने कहा ब्रह्मचारियों से, ब्रह्मचारियों! तुम्हें किसी काल में अभिमान आता है? उन्होंने कहा-प्रभु! अहंकार से तो हमारा शरीर ही कटिबद्ध रहता है। क्योंकि अहंकारं भूतं ब्रह्मे वर्ण सुतं यह अभिमान नहीं क्योंकि इसको अभिमान कहते हैं, क्योंकि इसको अहंकार से वह संसार एक दूसरें मे सुगठित रहता है, जैसे आन्तरिक जगत में जब जाते हैं, तो सबसे प्रथम मन का व्यापार आता हैं, और मन के व्यापार के पश्चात बुद्धि का व्यापार आता हैं, और बुद्धि के व्यापार के पश्चात मानो देखो, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार की मानो देखो, उसमें प्रतिष्ठा मानो देखो, प्रतीत होने लगती है। तो मेरे प्यारे! देखो, उसमें वह अहंकार के लिए कटिबद्ध रहते हैं। जब ब्रह्मचारियों ने यह कहा तो महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने कहा कि यह जो अहंकार है, वह सामान्य जो परमाणुओं से सुगठित रहता है, मानो देखो, तुम्हें स्थूल रूप से भी अभिमान होता है। उन्होंने कहा-प्रभु! हम स्थूल को नही जान पायें हैं। उन्होंने कहा तुम्हें मानो अपनी किसी विद्या पर अभिमान हो या शरीर पर कोई अभिमान हो या तुम्हारें क्रियाकलाप में तुम्हे अभिमान हो या शिक्षा का अभिमान हो, उन्होंने कहा-प्रभु! यह भी अभिमान हो सकता है, परन्तु देखो, यह जो अभिमान है, यह तुम्हारा मिथ्या है। क्योंकि परमपिता परमात्मा ने जब एक अहंकार की प्रतिभा का स्रोत बनाया है, एक दूसरे को सुगठित रहना है, एक दूसरें को मानो देखो, अमृतं ब्रह्मा देखो, संगतिकरण में रहना है।

तो मेरे प्यारे! ब्रह्मचारियों ने कहा-प्रभु! यह तो हमारे स्वीकार कर लिया हैं, परन्तु हम जानना चाहते हैं कि आप उच्चारण करना क्या चाहते हैं? शिकामकेतु उद्दालक ने कहा कि हे ब्रह्मचारियों! मैं तुम्हें यह उच्चारण करना चाहता हूँ कि एक मानव अभिमान करता है, वह चाहे वह द्रव्य का अभिमान करता है, चाहे वह मानो अपनी विद्या का अभिमान करता है, चाहे वह अपनी द्रव्यां भूतं देखो, अपनी लोकप्रियता का अभिमान करता है, वह जो उसका अभिमान है, वह उसका मानो व्यर्थथता में उसका दृष्टिपात आता है, जब मैं इसके ऊपर अन्वेषण करता हूँ, तो विचार आता है कि देखो, यदि विद्या का अभिमान करता है, तो परमात्मा की जो विद्या है। वह अनन्तता में गमन करती रहती है, इसीलिए देखो, परमात्मा अभिमानी नही हैं। क्योंकि विद्वता में परिपूर्ण हैं, विद्या ही मानो देखो, उसका आयतन है। उसका गृह है, उसका सदन है। परन्तु देखो, उसको अभिमान नही करना है। इसीलिए परमात्मा वह अमृतं देखो, वह परमात्मा को हमें जानना चाहिए। उसके पश्चात मनं ब्रह्मे कृतं देवतवहे वर्णा तो वेद का आचार्य कहता है कि यदि तुम यह चाहते हो कि मुझे द्रव्य का अभिमान करना है, तो द्रव्य तो परमात्मा देखो, सब द्रव्य का स्वामी है, जितना भी यह पृथ्वी मण्डल हैं, पृथ्वी के गृर्भ में मानो देखो, कही स्वर्ण के परमाणु है। कहीं मानो देखो, रत्नों की धातु विद्यमान है, नाना प्रकार के जलों का भी वह शोधन करने वाला किरणों के द्वारा

है, और उसी के जल तत्त्व की शक्ति से वाहन अपने में मानो क्रिया में रमण करता है। हे मानव! यदि तू द्रव्य का अभिमान करता है, तो सबसे ऊर्ध्वा में द्रव्य पति वे परमपिता परमात्मा है। इसीलिए तुम अभिमान किसका करते हो, कौन-सी वस्तु ऐसी है, जिस पर तुम्हें अभिमान करना है, ब्रह्मचारीजन मानो देखो, वह द्रव्य पति है, वह मानो इस पृथ्वी का स्वामी है, स्वामी देखो, इस पृथ्वी को देखो, लक्ष्मी कहते हैं, और उस परमपिता परमात्मा को विष्णु कहते हैं। क्योंकि वह इसका स्वामी होने से वह लक्ष्मी पति है, तो इसीलिए परमात्मा जो लक्ष्मी पति है, तो हम तो लक्ष्मी कुछ नही कहा जा सकता, परन्तु यदि विद्या में अभिमान नही हैं, अमृतं देखो, यदि देखो, काया पर अभिमान नहीं है, तो देखो, काया का यह जो स्वरूप है, जो हमें स्थूल रूप में यह ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आ रहा है। यह इतना अनन्तमयी ब्रह्माण्ड हैं, मानो देखो, एक ईकाई में तुम्हें ले जाऊं, तो बेटा! देखो, तो बेटा! देखो, तुम्हें ऐसा प्रतीत होगा कि गणना भी समाप्त हो जाती है। जहाँ गणना भी समाप्त हो जाती है तो मानो देखो, अमृतं ब्रह्मे कौन-सा ऐसा क्रियाकलाप है, जहाँ हम देखो, अपने में गौरव स्वीकार कर सकें, मानो परमपिता परमात्मा का अनन्तमयी यह ब्रह्माण्ड हैं, मानो उसका जो क्रियाकलाप है, उसका जो नृत्त कहलाया जाता है, वह इतना महान है कि उसके ऊपर विचार-विनिमय करना एक मानव अपने में मौन हो जाता है। जैसे मैं आज तुम्हें कौन-सी चर्चा प्रगट करूं मानो देखो, जैसे पृथ्वी मण्डल के ऊपर या पृथ्वियों के ऊपर अन्वेषण करते हैं, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने ब्रह्मचारियों के मध्य में यह कहा हे ब्रह्मचारियों! जब हम विचारते रहते हैं, क्या पृथ्वियों की अन्तरिक्ष में गणना करने लगते हैं, वेदमन्त्र को ले करके गणना में लग जाते हैं। तो गणना ईकाई में रह जाती है, मानो तीस लाख पृथ्वियाँ अमृतं देखो, हम गणना में लायें इसी गणना मानो देखो, एक माला बनती है, और उस माला को सूर्य अपने में धारण कर लेता है, तो यह जो सूर्य है, यह इतना विशाल मण्डल है, इस विशाल मण्डल में मानो देखो, तीस लाख पृथ्वियों की माला तीस लाख पृथ्वियाँ उसमें समाहित हो जाती हैं। विचार आता है, जब इस प्रकार का हम विचारने लगते हैं कि उसका जो मानो देखो, विद्या है, उसकी जो रचना है वह कितनी अनुपम हैं तो मुनिवरों! देखो, उसके ऊपर जाते हैं, तो माला का एक स्रोत बन गया। विचार आता है बेटा! इस सूर्य मण्डल पर, ऋषि-मुनि विचारने लगता है, क्या यह सूर्य क्या है जो इतना विशाल मण्डल है तो बेटा! सूर्य की गणना करने लगे गणना करते करते समाधिष्ट हो जाता है ऋषि वह परमाणु के माध्यम से देखो, अपने अपने परमाणुओं का सम्मिलान करता है तो बेटा! उस विज्ञानवेत्ता को ऐसा दृष्टिपात आता है, क्या मानो देखो, एक सहस्त्र सूर्य उसकी सृष्टि में दृष्टिपात आने लगते हैं, और एक सहस्त्र सूर्यों की जब गणना करता है, तो एक सहस्त्र सूर्यों की माला बन करके मानो देखो, उसको बृहस्पति अपने में धारण करता है। बृहस्पति इतना विशाल मण्डल है, जो मानो देखो, विचारने वाला विचारता रहता है, ऋषि जन अपने मनोनीत हो करके मन और प्राण को एकाग्र करके प्राण का उसमें पुट लगाते हैं, और पुट लगा करके उसके पश्चात अपने में संशोधन करते हैं, तो मुनिवरों! देखो, वह जो बृहस्पति है, वह इतना विशाल है, एक सहस्त्र सूर्य मानो उसमें समाहित हो जाते हैं, और एक सहस्त्र बृहस्पतियों की माला को जब धारण करता है, एक सहस्त्र आरुणि मण्डल अपने में धारयामि बन जाता है। तो बेटा! यह सर्वत्र संसार मानो देखो, ईकाई में तुम्हें दृष्टिपात आयेगा। इतना विशाल उस प्रभु का ज्ञान है, उसका क्रियाकलाप है जब उसके क्रियाकलाप को जानने वाला मुनिवरों! देखो, जानता रहता है। अनुसन्धान करता रहता है। कई जीवन समाप्त हो जाते हैं। मेरे प्यारे! उसकी सृष्टि को नहीं जान पाता, ऐसा अनुभव होता रहता है, विचार आता रहता है, मेरे पुत्रों! कि हम किसके ऊपर अपनी रचना के ऊपर कैसे अभिमान करें, और द्रव्यां भूतं ब्रह्मे व्रतं देवाः मेरे प्यारे! देखो, जब व्रतं ब्रहे हमारे यहाँ ऐसा हमें प्रतीत होता रहा है, क्या एक सहस्त्र देखो, आरुणि मण्डलों की जब माला बनती है, तो मुनिवरों! वह उसको ध्रुव अपने में धारण करता है, तो मेरे प्यारे! एक सहस्त्र ध्रुवों की माला बनती है,

उसको मुनिवरों! देखो, वह स्वाति नक्षत्र अपने में धारण करता है। एक सहस्त्र स्वाति नक्षत्रों की माला बनती है, उसको पुष्प नक्षत्र अपने में धारण करता है, एक सहस्त्र पुष्प नक्षत्रों की माला बनती है, और माला को धारण करने वाला मेरे पुत्रों! अमृतं ब्रह्मा वर्णा सुते वह मानो अचंग मण्डल अपने में धारण करता है। एक सहस्त्र अचंग मण्डलों की माला बन करके अम्रेत मण्डल अपने में धारण करने लगता है। तो मेरे प्यारे! जब धारयामि बनते रहते हैं, धारणां ब्रह्मा वर्णन अन्तिम जो सूत्र है बेटा! देखो, वह अमृता देखो, वह उस माला का जो मनका है, अन्त में वह गन्धर्व माना गया है। तो विचार आता है मेरे पुत्रों! इतने मण्डलों का इतनी मालाओं का एक सौर मण्डल बनता है बेटा! कितनी विचित्र गणना है, इसकी मानो ऐसा प्रतीत होता है, प्रत्येक मानव अपनी ईकाई में रमण कर रहा है। वह ज्ञान देता है, कितना विशाल है, परमपिता परमात्मा वैज्ञानिक जन मानो सूक्ष्म से यन्त्रों को जान करके अभिमानित हो जाते हैं, राष्ट्र में अपने को गौरव स्वीकार करते हैं, परन्तु परमात्मा के विज्ञान को विचारते-विचारते अन्त में बेटा! बुद्धि का माध्यम भी समाप्त हो जाता है, मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक मुनि ने जब इस प्रकार अपनी वार्त्ता प्रगट की तो ब्रह्मचारी बेटा! मौन हो गएं, और ब्रह्मचारियों के अन्तर्हृदय से यह वाणी उद्गीत गाने लगी कि महाराज! और कुछ उच्चारण कीजिए। तो उन्होंने कहा कि इतने सौरमण्डलों का एक सौर मण्डल बना है, और एक सौर मण्डल मानो एक वेदमन्त्र मैं तुम्हें उच्चारण कर रहा हूँ, सहस्त्र भूतं प्रद्वा लोकं ब्रहे आपात ब्रीहि अमृतं देवतवाम लोकां तो उन्होंने कहा कि यह वेद की आख्यिका है, वेद का मन्त्र है, वेद का मन्त्र यह कहता है, जब चिन्तन करने से मानो देखो, मनस्तव प्राणतव के ऊपर चिन्तन करते हैं। तो चिन्तन करते-करते हम इतनी गम्भीर मुद्रा में परमात्मा के भौतिक विज्ञान में क्योंकि विज्ञान में रत्त हो जाते हैं, क्या मुनिवरों! देखो, ऐसा प्रतीत होता है, यह सौर मण्डल हैं, और इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बना है। तो मानं ब्रह्मे लगभग एक अरब, छयानवें करोड़, उन्तीस लाख, उन्नचसवें हजार, पांच सौ इक्यानवें इस प्रकार मानो देखो, एक आकाश गंगा का निर्माण होता है। मानो देखो, एक आकाश गंगा बनी हैं, इसी प्रकार देखो, आकाश गंगाओं का एक समूह है, यह प्रभु का विज्ञान है, प्रभु के विज्ञान में इतनी अनन्तता है, क्या उसके ऊपर विचार-विनिमय करना हमारे लिए एक अश्वत कहा जाता है। यह मैंने तुम्हें बेटा! कई कालों में वार्त्ता प्रगट की हैं आज भी मैं देखो, उसी क्षेत्र में ले गया हूँ, मुझे बारम्बार ऋषियों की वार्त्ताएं जब स्मरण आने लगती हैं। तो प्रायः देखो, हृदय गद-गद हो जाता है, मानव को इस परमपिता परमात्मा की इस रचना के ऊपर मग्न होना चाहिए, और उसके ऊपर हमारा अन्तर्हृदय से हमारा प्रसन्न होना चाहिए, और प्रसन्न हो करके उसके ऊपर विचार-विनिमय हो, तो इस प्रकार देखो, एक आकाश गंगा का ऋषि ने वर्णन किया। परन्तु जब द्वितीय ब्रह्मचारियों ने कहा-प्रभु! और उच्चारण कीजिए तो ब्रह्मचारियों ने मानो देखो, उनको दृष्टिपात करते हुए ऋषि कहता है, शिकामकेतु उद्दालक ने कहा है हे ब्रह्मचारियों! मानो देखो, ब्रह्मे व्रतं देवतव सुता वर्णी देवतवां भूतं ब्रद्वा वेद का आचार्य कहता है कि हे ब्रह्मचारियों! क्या देखो, इस प्रकार एक अरब अठानवें करोड़ नवासी लाख उन्नचसवीं हजार पांच सौ इक्कसठ के लगभग इतनी आकाश गंगाओं की एक अवन्तिका बन जाती है। मानो देखो, अवन्तिका बन गई तो मानव ईकाई चला गया है, गणना भी ईकाई में चली जाती है, परन्तु देखो, इस प्रकार जब विचार-विनिमय करने वाला ऋषि कहता है। हे ब्रह्मचारियों! तुम परमात्मा के ब्रह्माण्ड को अथवा उसके विज्ञानमयी जगत को दृष्टिपात करने का मानो कोई कुछ सौभाग्य अपने में स्वीकार करों, और एक वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन करते चले जाओं मन्त्र ऐसे हैं। जो अमृतं जितना मानव प्रायः अध्ययन कर लगता है, अध्ययन करते करते अपनी अन्तरात्मा में प्रवेश हो जाता है। तो अन्तरात्मा के ऊपर जब विचार करने लगता है, तो बेटा! देखो, वह यौगिक क्षेत्र में प्रवेश हो जाता है। यह तो मैं भौतिक विज्ञान की चर्चा मैं तुम्हें प्रगट कर रहा हूँ, क्या ऋषि-मुनियों ने कितना अन्वेषण किया कितना विचारा है,

महाराजा रघु का याग

जब शिकामकेतु उद्दालक ने कहा क्या भगवन! देखो, पोने दो अरब अवन्तिकाओं की एक निहारिका बनती है परन्तु देखो, ऋषि इस प्रकार अपने में मौन हो गया और वह कहते है। कि परमात्मा का जगत अनन्यं ब्रह्मा ब्रह्माण्डे कृतं देवतवं प्रह्वा क्या वे परमपिता परमात्मा का जगत तो अनन्तमयी माना गया है इसीलिए उस परमपिता परमात्मा को अपनी माला बना करके परमात्मा में हमें मौन हो जाना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, मानव का कोई भी क्रियाकलाप ऐसी नही हैं जो मानो जा मानो देखो, परमात्मा के क्रियाकलापों से जब हम तुलना करते हैं तो मानव न तो संसार में अभिमान ही कर सकता है। और न मानो संसार में द्रव्य का अभिमान कर सकता है। क्योंकि वह लक्ष्मी पति है और न मानो ज्ञानी अपने में अभिमान करता है कि मैंने सब कुछ जान लिया है अरे, परमात्मा का विज्ञान तो अतना अनन्त हैं, क्या वैज्ञानिक जन जानते जानते मानो वैज्ञानिक ईकाई में चले जाते हैं। वह मानव और भी शेष रह जाता है। तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके उद्गीत गाने वाले जगत के ऊपर विचार-विनिमय करें। तो बेटा! मैं देखो, आज इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं, आज का वेदमन्त्र यह कहा रहा था मानवं ब्रह्मे वर्णनं इसी प्रकार पाण्डितव, जब अपनी एकान्त स्थलियों पर विद्यमान होता है, तो वह माला पाठ गाता है, माला का प्रकरण बड़ा विचित्र माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में नाना परमाणुओं की एक माला बनती है, और उस माला को धारण करने वाला एक-एक मण्डलां भूतं माना गया है। तो मुनिवरों! देखो, वह मालाओं का समूह माना गया है। जो माता के गर्भस्थल मं जिसकी रचना होती है, वह रचनाकार मानो देखो, परमपिता परमात्मा जो इस संसार का मानो देखो, माला का स्वामीतव करने वाला है। इसी प्रकार यह जो परमाणुओं की माला है, एक-एक अणु की माला बनती है तो मुनिवरों! देखो, देखो, वह माला बनते-बनते माला का शरीर बन जाता है। कहीं बुद्धि का निर्माण है, कहीं बुद्धि भी मानो कई प्रकार की मानी गई है, मन की नाना प्रकार की तरंगों में तरंगित होने वाला जगत अपने में तरंगित हो जाता है। तो विचारने वाला बेटा! विचारता है कि हम परमपिता परमात्मा के अनन्तमयी जगत को जानने का प्रयास करें, और अनन्तमयी जगत को जान करके, जो आत्मा को जानने वाला है, जो मानो देखो, अपने में ब्रह्मतत्यां भूतं ब्रह्मा वेदां मानो देखो, वह कहता है कि हे मानव! तू ब्रह्म हत्या न करने वाला बन, यदि तू ब्रह्म की प्रेरणा को अपने हृदय से दूरी कर देगा तो तू ब्रह्म हत्यारा कहलाएगा। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है क्या तू ब्रह्मणां ब्रह्मा ब्रह्मणे देवत्वां लोकां तू अपने हृदय से ब्रह्म की प्रेरणा को स्वीकार कर और उसी की प्रेरणा के आधार पर अपने क्रियाकलापों को धारण कर जिससे तेरा जीवन यौगिक हो जाएं, और तेरे जीवन में विवेक हो करके तू संसार का सिरोमणी प्राणी बन करके, परमात्मा की सृष्टि को जानने वाला बन।

तो बेटा! मैं आज इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, विचार विनिमय यह, कि यह अनन्तमयी जगत है इसके ऊपर परमाणु कैसे संघर्ष करता है? यह चर्चा तो बेटा! मैंने तुम्हें पूर्व काल में भी प्रगट की हैं आज भी मुनिवरों! देखो, मैं मालाओ की चर्चा करने लगा था परन्तु देखो, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर एक दूसरें में ओत-प्रोत हो रहे हैं, जैसे मानो मानव, मानव में ओत-प्रोत है एक दूसरें में प्रतिष्ठा को प्राप्त कर रहा है, तो हमें मानो देखो, उस ज्ञान और विज्ञान के ऊपर विचार-विनिमय करना चाहिए। तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें दूरी नही ले जा रहा हूँ। आज का विचार केवल यह है कि हम अपने में अपनेपन की प्रतिभा को जानने वाले बनें। मेरे प्यारे! देखो, आज मैं बहुत दूरी नही जाना चाहता हूँ, विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, पृथ्वी के ऊपर नाना प्रकार का संघर्ष होता रहता है, सूर्य मण्डल में भी नाना संघर्ष होते रहते हैं, चन्द्रमा में भी नाना प्रकार के परमाणुओं के संघर्ष होते रहते हैं, इसी प्रकार मंगल में भी और बुद्ध इत्यादि लोकों में भी नाना प्रकार के संघर्ष होते रहते हैं, परन्तु देखो, उन संघर्षो की चर्चा क्या परमाणु देखो, यह तो रचना का स्वभाव है।

मानो संघर्ष होना ही रचना का स्वभाव माना गया है, कोई वस्तु रचती है, तो उस पर संघर्ष होता रहता है, वह मानो किसी काल में क्षुद्र रूप में किसी काल में वही गुरुता के रूप में परिणत हो जाता है।

शुद्ध-विशुद्ध

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार क्या मैं आज तुम्हें तीन वाक्यों कि मानो देखो, तुम्हें अमृतं काया के ऊपर अभिमान करना चाहिए कि मैं इतना स्वाभिमानी हूँ क्योंकि परमपिता परमात्मा की रचना बड़ी अनन्तमयी है, परमात्मा का जगत मानो देखो, विज्ञान से ओत-प्रोत है, वैज्ञानिक जनों ने बेटा! देखो, परमात्मा की प्रतिभा को परमाणुओं के मानो एक दूसरी तरंगों को जान करके यन्त्रों का निर्माण करते हैं, और द्यौ में प्रवेश हो जाते हैं द्यौ में रत्त रहने वाला, अपने में रतता को रमण करता रहता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा विचार क्या? आज मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ बेटा! जहाँ राजा रघु का वह याग प्रारम्भ हो रहा था, मेरे प्यारे! देखो, राजा रघु के याग में वह बारम्बार मुझे उसका प्रतीत होता रहता है जैसे हम उस याग में विद्यमान हों और मानो परमात्मा दृष्टा बना हुआ है और परमात्मा की वाणी का हम बखान कर रहे हैं ऐसा हमें प्रतीत होता रहता है जब मेरे प्यारे! देखो, राजा रघु का याग छह माह तक प्रारम्भ रहा और सर्वांग याग उन्होंने किया, और सर्वांग याग उन्होंने किया जितना उनके द्वारा द्रव्य था अथवा गृह में स्वर्ण था, वह द्रव्य मुनिवरों! देखो, उन्होंने द्रव्य प्रमाणां ब्रहे तो सब याग में परिणत कर दिया। तो मेरे पुत्रों! देखो, उस समय जब वह याग सम्पन्न होने लगा, सम्पन्न होने के पश्चात मुनिवरों! देखो, राजा अपने राष्ट्र के मानो देखो, गो इत्यादियों को वह दान देने लगे दानां दक्षिणां ब्रह्मा देखो, दक्षिणा उन्होंने दी, तो दक्षिणा ऋषि ने स्वीकार नही की, ऋषियों ने कहा हे प्रभु! मुझे तो वह दक्षिणा चाहिए, जो दक्षिणा हमें स्वीकार करनी है। मेरे प्यारे! देखो, राजा से यही कहा कि तुम्हारा राष्ट्र पवित्र होना चाहिए। तुम्हारे राष्ट्र में महानता का जन्म होना चाहिए। जो राजा रघु और देखो, वह अपने स्वयं कृषि कला करते थे, वह कृषि कला कौशल करके उस अन्न को पान करते थे, जिससे पवित्र हो जाएं। क्योंकि राजा का यह था क्योंकि राजा के यहाँ प्रजा को प्रजा के वैभव को राजा अपने उपयोग में लाने लगता है, जानों की वह राजा की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, और राष्ट्र की जो परम्परा वह नष्ट हो जाती है। इसीलिए हमारे यहाँ यह माना गया है कि अमृतं ब्रहे देखो, राजा स्वयं कला कौशल करके अपने राष्ट्र का पालन करे, परन्तु ऋषि-मुनि उस अन्न को ग्रहण नही करते थे देखो, जो राजाओं के यहाँ अन्न होता राजं ब्रह्मे जब महाराज अश्वपति के यहाँ एक समय मानो देखो, हमने यह विचार बनाया कि चलो पूज्यपाद गुरुदेव के समीप हम चलते हैं, और महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में भ्रमण करेंगे।

आत्मा का लोक

तो महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में जब पंहुचे तो महाराज ने ऋषि का स्वागत किया और स्वागत करने के पश्चात उन्होंने कुछ अन्न इत्यादि को लाने का प्रयास किया, तो ऋषियों ने कहा कि नही भगवन! हम तुम्हारे अन्न को ग्रहण नही करेंगे। उन्होंने कहा भगवन! क्यों नही करोगे क्या मेरा जो अमृतं अन्नं ब्रहे राष्ट्र का अन्न है और राष्ट्र को जो अन्न होता है, वह दूषित है, वह रजोगुण से तमोगुण से सना हुआ होता है, और रजोगुण तमोगुण से सने हुए अन्न को पान करने से हम हमारा ऋषितव समाप्त हो जाता है, और मानो देखो, अपनी बुद्धि को अमृतं अमृतमयी लाना चाहते हैं, तो महाराजा अश्वपति उनकी देवी ने नतमस्तिष्क हो करके यह कहा-प्रभु! हमारा जो अन्न है, वह हम स्वयं कला कौशल करते हैं, और उसके बदले जो अन्न आता है, उसको हम पान करते हैं। प्रभु! वही हम अतिथि को हम आप हमारे अतिथि हैं, अतिथि पने को यदि आप स्वीकार नही करेंगे, तो हम पाप के पात्र बनेंगे। हे प्रभु! उस अन्न को पाईए मेरे प्यारे! देखो, ऋषियों ने जब उसको दृष्टिपात किया कि इस प्रकार का

अन्न है, तो उसको पान किया उन्होंने मेरे प्यारे! पान करके उसकी बुद्धि विचित्र बन गई। तो विचार-विनिमय क्या राजा की बुद्धि जब पवित्र होती है, जबकि राजा देखो, परमात्मा को जानने वाला परमात्मा के जानने से जब विवेक रहता है, विवेकी राजा ही बनना चाहिए, जो ब्रह्मवेत्ता है, जो यह जानता है कि मुझे स्वयं कला कौशल करके राष्ट्र के अन्न को नही ग्रहण करना है। यह तो प्रजा का राष्ट्र हैं, मानो देवताओं की धरोहर है, मेरे द्वारा मैं इसका रक्षक हूँ, मेरा जो अन्नाद है, उससे मेरा शरीर पंचमहाभूतों का विचित्र बनेगा तो मेरा स्वयं प्रकाश होना चाहिए इस प्रकार देखो, राजा रघु ने यह वाक् कहा कि-प्रभु! मैं भी अपने में कला कौशल करता हूँ। हे प्रभु! उस अन्न को मैं पान करता हूँ। तो मेरे प्यारे! क्योंकि अन्नाम् भूतं ब्रह्मा जैसे देखो, यज्ञशाला में हूत करने वाला यज्ञमान जब विचारक होता है, आहुति देता है, शुद्ध हृदय से वही आहुति मानो देखो, अग्नि में जाती है। वही आहुति अग्नि में प्रतिष्ठित हो करके सूर्य की किरण अपने में ले जाती है, और वही चन्द्रमा को प्राप्त होती है। चन्द्रमा उसको प्राप्त करके देखो, समुद्रो से जलों उत्थान करता है, और देखो, जलों का उत्थान करके मानो देखो, मेघ मण्डलों से वृष्टि होती है। उसी से अन्नाद होता है, मानो देखो, उसी प्रकार ब्रह्मणे कृतं देवा तो सूर्य अपने में धारण करने वाला द्यौ को प्राप्त होता है। वह नाना प्रकार की विशुद्ध ऊर्ज्वा देता है, जिससे दूषित वायुमण्डल को अपने में सिंचन करता है, और उसी को वह प्रदान करता हुआ मानो देखो, सूर्य अपने में महान है, अग्नं ब्रह्मा देखो, अग्नि एक मानो देखो, देवताओं का मुख माना गया है तो इसी प्रकार देखो, जितना भी यज्ञमान हृदय से शुद्ध पवित्र निष्काम कर्म से याग करता है, वही देवताओं को प्राप्त हो करके और वही देवता हमारे मानव शरीर में क्रियाकलाप करते हैं, जिसका यह पंच महाभूत हैं, और पंच महाभूतों का लोक ही मानो आत्मा का लोक है। आत्मा मानो पंच महाभूतों के लोक में रह करके, पवित्रता का और अपने में उद्गीत गा करके, अपने को उद्गाता बनाता है।

शिक्षा में राष्ट्र प्राण

तो विचार आता है मेरे पुत्रों! यज्ञनं ब्रह्मा यज्ञनं ब्रहे देखो, इस प्रकार राजा के यहाँ, याग जब सम्पन्न हुआ तो भिन्न प्रकार के ऋषि-मुनियों ने अपने उदगार दिये, और उदगार दे करके उसकी रचना को स्वीकार किया। उन्होंने कहा-प्रभु! हम चाहते हैं क्या राष्ट्र में ऋषितव रहना चाहिए, यह हमारी दक्षिणा है। राजा के राष्ट्र में शिक्षा प्रणाली पवित्र हो, और शिक्षा में जिस प्रकार के यन्त्र होने चाहिएं, जैसे देखो, जब विद्यालय में आचार्य शिक्षा देता हो, यन्त्र विद्यमान होने चाहिएं ब्रह्मचारी देखो, अंग संग विद्यमान हैं, यदि देखो, आचार्य के हृदय से अशुद्ध तरंगे उत्पन्न होती हैं मिथ्या तरंगे होती हैं उनके चित्र यन्त्रों में आने चाहिएं और वह जो यन्त्रों के चित्र हैं, मानो देखो, यन्त्रों देखो, उसका राजा का कर्तव्य है ऐसे आचार्य को मानो देखो, ऐसे शिक्षक को विद्यालय से दूरी कर देना चाहिए। क्योंकि उसका मन दूषित हो गया है, तो इस प्रकार देखो, शिक्षा प्रणाली राष्ट्र का प्राण होता है राष्ट्र का यदि प्राण है। तो मानो देखो, वह शिक्षा प्रणाली है, यदि शिक्षा प्रणाली पवित्र है, तो राष्ट्र पवित्र है, ब्रह्मचर्य पवित्र है, ब्रह्मचर्य की सुरक्षा हो सकेगी और ब्रह्मचर्य ऊर्ध्वा में तो देखो, परमपिता परमात्मा को ब्रह्म और चरी के रूप में दृष्टिपात करके हम मानो अपने में प्रकाश को प्राप्त कर सकते हैं। तो इस प्रकार देखो, यह कहा उन्होंने आचार्यों ने कि तुम्हारे राष्ट्र में शिक्षा प्रणाली पवित्र होनी चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है महाराज अश्वपति के राष्ट्र में देखो, जब ब्रह्मचारी अपने में जब विद्यालय में अध्ययन कराते तो देखो, एक समय एक ब्रह्मचारिणी अपनी ब्रह्मचारिणियों को शिक्षा दे रही थी। शिक्षा देते देते उसका मन मानो देखो, भय के आँगन में प्रवेश हो गया, शिक्षा देते देते मन मस्तिष्क चला गया वही मानो देखो, चित्त में चित्रित होने लगा ब्रह्मचारियों ने कहा राजा से प्रभु आप के विद्यालय में यह ब्रह्मचारिणी जो शिक्षा देती है, आचार्य यह अशुद्धं ब्रह्मा इसके मन मस्तिष्क में स्थिरता नही है। तो मानो देखो, उसने देखो, प्रार्थी ने कहा अरे, हे देवी! तुम्हारे मन मस्तिष्क में चिन्तनता नही है। उन्होंने

स्वीकार कर लिया स्वीकर करके उन्होंने कहा उस समय त्यागा और पुनः मन मस्तिष्क के ऊपर उन्होंने तप किया। वेदों का अध्ययन करके एकान्त स्थली में और उन्होंने उपवास करने के पश्चात उनके मन की गति पवित्र बनी। तो इस प्रकार जब शिक्षा ब्रह्मचारियों को दी जाएगी। उनका हृदय पवित्र बनेगा, और जब हृदय पवित्र बनेगा तो मानो देखो, शिक्षालय में महानता का प्रसार होगा, वह विद्या का प्रसार हो करके राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न होगी। उसी में आध्यात्मिकवाद निहित रहेगा और उसी में मानो देखो, यह जगत अपनी आभा में रत्त होता रहेगा तो आज बेटा! मैं तुम्हे विशेष चर्चा देना नही चाहता हूँ। ऋषि-मुनियों ने यह महाराज रघु से प्रार्थना की और यही दक्षिणा में स्वीकार किया। तो मुनिवरों! देखो, राजा रघु ने कहा-प्रभु! मैं अपराधी हूँ, और मैं तुम्हारे वाक्यों का पान करूंगा। तो मैं भी जिससे तुम्हारा पालन पोषण हो रहा है, द्रव्य उसको तो स्वीकार करो तो राजा रघु ने मानो स्वीकार किया। मेरे प्यारे! देखो, याग सम्पन्न हो गया याग जब सम्पन्न हो गया तो सर्वांग याग हो गया, कोई मानो कोष में द्रव्य नही रहा उनके द्वारा देखो, पृथ्वी के पात्र रह गएं। पृथ्वी के पात्र खनिज पात्र नही रहा वह केवल देखो, पात्र पृथ्वी के कणों के पात्र रह गएं। उन पात्रों में से मानो देखो, अपने जल पान करते थे। उसी में वह तपश्चर रह गएं वह पति पत्नी दोनो अपने में मानो देखो, तपस्या में जीवन वयतीत करने लगे तो मेरे प्यारे! देखो, उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः यह है, क्या मुनिवरों! देखो, जब तक राजा और उनकी देवी जब तब राष्ट्र में तपस्वी जीवन व्यतीत नही करेंगें या उनके जीवन की तरंगे क्रियाकलाप में नही होगी देखो, ज्ञान तो है। परन्तु क्रियाकलाप में नही हैं तो देखो, उसका समाज देखो, अन्धकार में चला जाता है, और यदि ज्ञान है कर्म नही है, तो वह उसका मानो देखो, ज्ञान और कर्म भी पवित्र होना चाहिए। मैं यह उच्चारण करना चाहता हूँ, क्या हमारे यहाँ देखो, शिक्षा प्रणाली बड़ी विचित्र मानी गई है आज का विचार तो केवल हमारा यह कि परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस परमात्मा के जगत को विचारें, और जगत को विचार करके मानो देखो, याग जैसे क्रियाकलापों को शुद्ध हृदय से शुद्ध भावना से देखो, प्रत्येक क्रियाकलाप को करते हैं, तो हमारा वायुमण्डल हमारा देखो, महानता में प्रवेश हो जाएगा, तो आज का वाक् हमारा क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। सबसे प्रथम ही पार होना है, चाहे वह राजा भी मृत्यु से पार होना चाहता है, ब्रह्मचारी भी मृत्यु से पार होना चाहता है, और विद्यालय में आचार्य भी मृत्यु से पार होना चाहता है, द्रव्यपति भी मृत्यु से पार होना चाहता है, और द्रव्यहीन भी मृत्यु से पार होना चाहता है, क्योंकि मृत्यु ही अन्धकार है। अन्धकार में न जाओं प्रकाश का नाम जीवन है, इसीलिए प्रकाश को लाने का प्रयास करो मेरे प्यारे! अन्धकार को त्याग करके प्रकाश में रत्त हो जाओगे। तो जीवन पवित्र बनेगा और राष्ट्र और समाज में एक महानता का वातावरण उत्पन्न हो जाएगा। तो आज का विचार-विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए मेरे प्यारे! इस परमात्मा के जगत से हम पार हों जितना भी यह जड़ जगत है, यह चैतन्य जगत है, इसमें मानो देखो, यह परमात्मा का अनुपम जगत है, चाहे वह जड़ रूप में हो चाहे चैतन्य रूप में हो तो मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार हमारा अब सम्पन्न होने जा रहा है। आज के विचारों का अभिप्रायः यह है कि हम बेटा! देखो, एक दूसरे के विज्ञान में रत्त हैं, परमात्मा का जगत बड़ा अनन्तमयी है, क्योंकि परमात्मा द्रव्य का स्वामी इसीजिए मानव द्रव्य के ऊपर अभिमान नही कर सकता। मानो देखो, रचना में स्थूल जगत में एक मानो यह ब्रह्माण्ड है, यह तो उस ब्रह्म का है, तो वह उसका जितना भी स्थूल है, तो वह इसीलिए वे परमपिता परमात्मा स्थूल के ऊपर भी हम अभिमान नही कर सकते, और यह बुद्धि के ऊपर यदि विद्या का अभिमान करते हैं। तो वह परमात्मा तो उसका जो अनन्तमयी भण्डार हैं, क्या वह उसके क्रियाकलाप को उसने ऐसा रचा है, जिसके ऊपर मानव के जीवन के जीवन समाप्त हो

जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार-विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा के क्षेत्र में आ करके मुनिवरों! देखो, अपने में पवित्रता को धारण करें, और अपने में मानवीय जीवन को पवित्र बनाने में सदैव अपने क्रियाकलापों में रत्त रहें। तो आज का क्रियाकलाप अब यह सम्पन्न होने जा रहा है। कल मुझे समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं, कल मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो शब्द उच्चारण करेंगे आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

९ शिक्षा प्रणाली १४ ०३ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारें यहाँ परम्परागतों से उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और उसका जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आता रहता है आज का हमारा वेदमन्त्र छात्रं ब्रह्मण ब्रहे कृतं ब्रहा हमारे यहाँ वेद वाक्यों में एक प्रसंग आया है क्या यह छात्रं ब्रह्मणा राष्ट्र की नाभि क्या है? तो राष्ट्र की नाभि के ऊपर ऋषि कहता है क्षत्रश्चं ब्रह्मा कृतं देवाः क्या यह जो छात्र है यह राष्ट्र की नाभि है। मानो यही अपनें में पवित्रता को धारण कर सकता है। तो मानो देखो, यह राष्ट्र और समाज पवित्र आभा में परिणत हो जाता है तो विचार आता रहता है छत्रंश्चं ब्रह्मा वर्णासुते मानो देखो, यह संसार की जो नाभि है, मानो समाज की जो नाभि है जैसे मानो प्राण मानो जगत संसार की नाभि माना गया है इसी प्रकार यह जो छात्र है राष्ट्र की समाज की नाभि कहलाता है, क्योकि यह मध्य है, यही तो जीवन का स्रोत माना जाता है। आज का हमारा वाक् यह कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, अपने में उस देव का गुणगान गाते रहें। इसीलिए राजा महाराजा और मानव बेटा! सदैव छात्रों के लिए उसकी आज्ञा का पालन करता रहा है। मुझे वह वाक् स्मरण आता रहता है, मानो देखो, राजाओं के यहाँ जाते हैं ब्रह्मचारी कहता है, प्रभु! मुझे आचार्य को दक्षिणा प्रदान करनी है मुझे द्रव्य दीजिए! तो राजा उस समय द्रव्य देता है और ब्रह्मचारी अपने गुरुओं के लिए व्रत रक्षां ब्रह्वे वह भिक्षा प्रवृत्ति से उसको मानो प्रदान कर देता है, अमृतं ब्रह्मा वर्णासुतं तो इसी प्रकार देखो, राष्ट्र को ऊँचा बनाने के लिए प्रत्येक मानव और प्रत्येक राजा के लिए राष्ट्र में छात्रवत पवित्र होना चाहिए। छात्रं नाभि, क्योंकि जैसे मानो पृथ्वी की नाभि यह यज्ञशाला कहलाती है यही तो कारण है और यह ऊर्ध्वा में कर्म माना गया है इसीलिए यह नाभि है इस नाभि के ऊपर हमें विचार-विनिमय करना चाहिए नाभ्यां भूतं मानो देखो, आचार्यों ने सर्वांगता में, अपने सर्वत्र जीवन के लिए उन्होंने याग का व्यावधान किया।

आज मैं इस सम्बन्ध में, विशेष चर्चा नही प्रगट करूंगा, आज का वाक् केवल यह कि आज हम ब्रह्मे देखो, हम अपने राष्ट्र अपने समाज और मानवीयता को पवित्र बनाने के लिए तत्पर रहें, और अमृतं ब्रह्मा और अपने में महानता की ज्योति को अपनाने का प्रयास करें। तो आज का हमारा वाक् यह कह रहा है कि परमात्मा का जगत अनन्तमयी है और लोक-लोकान्तरों में, समय-समय पर, मानो नाना प्रकार का आह्वान होता रहता है एक दूसरें में संघर्ष भी होता रहता है, और एक दूसरें में मानो देखो, उसकी कृतियां भी नष्ट होती रहती हैं और वह पृथ्वी मण्डल पर मानो देखो, अध्यात्म ब्रीहि अवृत होता रहता है क्योंकि पृथ्वी मण्डल पर जितने श्रेष्ठ क्रियाकलाप होते हैं, महानता के क्रियाकलाप होते हैं, तो मानो वायुमण्डल में उनकी कृतियां जाती हैं, और वही कृतियों मानो देखो, अभ्योदय करने के लिए वह उस प्रदूषण को अपने में निगलती चली जाती हैं। तो आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नही अब मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् देवां भूतं भवि ब्रह्मणा देवां भविते नमं ब्रह्मणं व्रत्यां देवाः मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद राष्ट्र की चर्चाएं कर रहे थें, मानो आज ही नही कर रहे हैं, वह नित्यप्रति राष्ट्र का आह्वान करते रहते हैं क्योंकि राष्ट्र को ऊँचा बनाओं, ऐसी वार्ता वह प्रगट करते रहते हैं। हमारे यहाँ नाना प्रकार के देखो, राष्ट्रो में जो दोषों का आरोपण आ गया है, उसके ऊपर विचार-विनिमय करना है।

महाराजा रघु का याग

हम सब यहाँ इसीलिए उपस्थित हैं, क्या हम मानो देखो, त्रुटियों के ऊपर विचार-विनिमय करें जिससे मानव रसातल को जाता है उसके मूल में क्या है? जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने इससे पूर्व काल में राष्ट्रीय प्रणाली के ऊपर अपना विचार दिया, क्या राष्ट्रीय प्रणाली कैसे पवित्र और कैसी होनी चाहिए? इसके ऊपर विचार-विनिमय किया इसके पश्चात आध्यात्मिकवाद की भी चर्चाएं मेरे पूज्यपाद गुरुदेव नित्य प्रति करते रहते हैं, क्या राजा को आध्यात्मिकवादी होना चाहिए और जितना भी समाज है। वह सब देखो, आध्यात्मिकवाद में ब्रह्म के याग में वर्णन वर्णित होता है। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह कहा कि राष्ट्रं ब्रहे राजा का राष्ट्र जब भी पवित्र बनता है, मानो देखो, आत्मवेत्ताओं से ऊँचा बना करता है, जब शंख ध्वनि होती है, वेदज्ञ ध्वनि होती है, तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कई समय से राष्ट्र की चर्चाएं कर रहे हैं, और उसमें आध्यात्मिकवाद का समन्वय करते रहें हैं। आज मैं समन्वय तो नही करूंगा, परन्तु विचार-विनिमय यह कि आधुनिक जगत जो इस प्रकार वर्तमान का यह काल चल रहा है, इस काल में मानो देखो, जो भी त्रुटियां मुझे दृष्टिपात आती हैं। मैं उसका वर्णन अवश्य कर पाऊंगा, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो मुझे नाना प्रकार की वार्त्ताएं प्रगट कराते रहते हैं, दूरिता के ऊपर मेरे हृदय से कटुता का मानो वाक् तो अवश्य उच्चारण होता रहता है, क्योंकि सत्यं ब्रह्मा कटु व्रति देवत्वां क्योंकि हमारे आचार्यों ने कहीं से ऐसा माना है, क्या यह जो कटु शब्द होता है, यह भी मानव में वृत्तियों में जन्म देता है। परन्तु देखो, मैं सत्य के ऊपर उच्चारण कर रहा हूँ कि मानव समाज को कैसे ऊँचा बनाया जाता है।

विज्ञान के दुरुपयोग से राष्ट्र का पतन

मुझे स्मरण आता रहता है कि जब महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया क्या, महर्षि भारद्वाज के यहाँ जब महर्षि सोमकेतु मुनि महाराज और प्रवाहण और शिलक जी का आगमन हुआ, जिसमें देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज की अध्यक्षता वाला, जो समाज, ऋषि-मुनियों का जब भारद्वाज मुनि के यहाँ पंहुचा, तो भारद्वाज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया, भारद्वाज मुनि से यह प्रश्न किया गया, क्या आपका विज्ञान कितना महान है, तो उन्होंने विज्ञान के लिए नाना प्रकार के यन्त्रों का उन्होंने दृष्टिपात कराया। उन यन्त्रों में बड़ा बड़ा आविष्कार था मानो देखो, यन्त्रों में चरित्र आवान्ते नाना प्रकार के चरित्र और चित्र भी आते रहते थे चित्र के साथ में चरित्र का आह्वान होता रहता तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने जब यह हमें वर्णन कराया तो मानो देखो, उनकी कृतियों को पुनरूक्ति दे रहे हैं महर्षि भारद्वाज मुनि से ऋषि-मुनियों ने यह कहा कि-प्रभु! यह राष्ट्र और समाज कैसे ऊँचा बनता है क्योकि तुम्हारा विज्ञान तो बड़ा एक महान है मानो देखो, विज्ञान है क्या विज्ञान का अन्तिम चरण क्या होता है क्योंकि जहाँ सूर्य मण्डल की ऊर्ज्वा से परमाणुओं को ले करके यन्त्रों का निर्माण किया जाता है चन्द्रमा से किरणों को ले करके यन्त्रों का निर्माण किया जाता है कान्ति युक्त हो करके इसी प्रकार देखो, पार्थिव तत्त्वों को मानो देखो, परमाणु रूप दे करके निर्माण किया जाता है, और वही निर्माण किया जाता है। मेरे यहां अमृतं पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा था कि यही यन्त्र हमारे राष्ट्र के लिए मानो वृत्ति कहलाती है, तो महर्षि भारद्वाज मुनि से जब यह प्रश्न किया गाड़ीवान रेवक ने की इस महाराज का मानो देखो, जो आपने विज्ञान को जाना है। तो मानो देखो, इस याग को जाना है, इसका अन्तिम चरण क्या होता है। उन्होंने कहा था कि इस समय विज्ञान का जिस भी काल में देखो, विज्ञान का दुरूपयोग होता है, वह विज्ञान मानो देखो, समाज को मानो मृत्यु को पंहुचा देता है, और जब विज्ञान का दुरूपयोग नही होता विज्ञान का दुरूपयोग होता है, तो वही विज्ञान मानो देखो, ऊर्ध्वा में गमन कराता रहता है, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने जब यह वर्णन कराया, तो मानो उनके वाक्यों को श्रवण करते रहे, तो उन्होंने यह कहा ब्रह्मणे विज्ञान का सदुपयोग होना चाहिए। जितना विज्ञान का दुरूपयोग होता है, उतना विज्ञान राष्ट्र और समाज के लिए घातक कहलाता है। मानो देखो, समाज में जब देखो, इस भौतिकवाद

का मनोरंजन की वार्त्ता आती हैं, क्या उसे देखो, मनों में रंजन मानो देखो, यह विज्ञान और ज्ञान मनों का रंजन नही होता, यह तो आत्मा का स्वाभाविक रूप कहलाता है, जिसके ऊपर मानव को अपने में अनुसन्धान करना है, परन्तु देखो, जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वर्णन कराया क्या भारद्वाज मुनि के यहाँ नाना प्रकार के यन्त्र विद्यमान हैं और उन यन्त्रों का देखो, सदुपयोग होना ऋषि ने वर्णन किया है यह कहा कि नाना प्रकार की चित्रावलियाँ हैं और उन चित्रावलियों में ऋषि-मुनियों के भी चरित्र आते हैं ऋषि-मुनियों के देखो, महानता के क्रियाकलाप होते हैं तो वही विज्ञान मानो देखो, समाज को ऊर्ध्वा में ले जाता है और जिस विज्ञान के माध्यम से मेरी पुत्रियों के नृत्त होते हैं मानो देखो, अश्लीलता मे चित्रों का दर्शन किया जाता है तो वही राष्ट्र के लिए घातक बन जाता है तो इसीलिए देखो, विज्ञान का दुरूपयोग नहीं होना चाहिए सबसे प्रथम यह वाक् अब प्रश्न यह आता है कि विज्ञान का दुरूपयोग क्यों होता है? यह महर्षि ने वर्णन करते हुए कहा है, गाड़ीवान रेवक मुनि ने यह कहा कि यह विज्ञान राजा अपने राष्ट्र में दुरूपयोग क्यों करता है? तो उस समय ऋषि कहता है, क्या इसीलिए क्या भारद्वाज मुनि ने कहा कि इसीलिए करता है, क्योंकि देखो, जब राजा में राजा में देखो, जब उसका आहार और व्यवहार पवित्र होता है, तो प्रजा में भी आहार और व्यवहार पवित्र होता है, और विज्ञान भी स्वच्छ बन करके आता है, और ज्ञान भी स्वच्छ बन करके आता है। जब ज्ञान और विज्ञान स्वच्छ होता है, तो मानो देखो, राजा की प्रतिभा ऊर्ध्वा में राष्ट्र प्रतिभाशाली बन जाता है। राष्ट्र का मूल कारण यह कि उसके विज्ञान का दुरूपयोग है, और विज्ञान जब दुरूपयोग होता है, जब राजा के राष्ट्र में स्वतः चरित्र नही रहता जब राजा में चरित्र होता है, चरित्र की विवेचना करते हुए आचार्यों ने वर्णन करते हुए की है, क्या देखो, वह राजा अपने प्रातःकालीन जब सूर्य उदय होता है, उदय होने से पूर्व अपनी शारीरिक क्रियाओं से निवृत्त हो करके, जब वह परमात्मा का चिन्तन करता है, और अपने विचारों से सुगन्धि देता है, अपने में व्ययामशाला में देखो, अपने शरीर को सजातीय बनाता है, अथवा उसे पौष्टिक बनाता है, तो उसका जो क्रियाकलाप राजा का है, वह स्वतः ही मानो देखो, प्रजा में प्रसारण हो जाता है, और प्रजा उसी के अनुसार बरतने लगती है। जब प्रजा उसके अनुसार बरतती रहती है। तो राजा के राष्ट्र में देखो, सुरा और सुन्दरी और मानो देखो, द्रव्य की लोलुपता नही होती, क्योंकि जब देखो, राजा में द्रव्य सुरा और सुन्दरी की लोलुपता नही होती, तो प्रजा में भी नही होती, और प्रजा ऊर्ध्वा में गमन करती रहती है। मानो देखो, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कईं काल में कहा है, क्या इस मानो क्रियाकलाप को बहुत समय हो गया है, आज देखो, कोई नवीन वाक् नहीं परन्तु महाभारत के काल में उससे पूर्व किसी काल में देखो, यह कौतुक आया और यह विचार आए कि राजा स्वार्थी बन गया और देखो, महाभारत का काल मोह ममता में आ जाता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने इससे पूर्व काल में एक वाक् बहुत पूर्व उद्गीत रूप में गाया, उन्होंने कहा कि जब राजा मोह में आ जाता है, तो न्याय नही कर सकता, मानो देखो, उसी प्रकार जब महाभारत का काल आया, तो महाभारत के काल का विनाश का कारण क्या था, मानो देखो, उसमें सुरा और सुन्दरी थी, सुरा और सुन्दरी और देखो, अमृतं ब्रह्मे विज्ञान का दुरूपयोग हो गया था, जब विज्ञान का दुरूपयोग जब उसमें अभिमान आ गया, मेरी पुत्रियों का हनन किया गया, मानो देखो, हनन करने से उस अभिमान का परिणाम यह हुआ, क्या हस्तिनापुर में अग्नि प्रदीप्त हो गई। मुझे प्रतीत है कि देखो, यहाँ ऋषि-मुनियों ने यह कहा कि अमृतं सबसे प्रथम मानो देखो, भीष्म जी को अभिमान आया, अपने क्रियाकलापों अपने अस्त्रों शस्त्रों पर अभिमान देखो, जब भीष्म को अभिमान आया, तो उस अभिमान का यह परिणाम यह हुआ कि उन्होंने मेरी पुत्रियों का तिरस्कार किया, जब मेरी पुत्रियों का तिरसकार होना प्रारम्भ हुआ, तो तिरस्कार का परिणाम यह हुआ कि हस्तिनापुर में अग्नि प्रदीप्त हो गई। सब मानो देखो, उससे खिन्न हो गएं राजा भी, मानो देखो, राजा महाराजा सब खिन्न हो गएं, और देखो, अपने गृह में मानो देखो,

अग्नि प्रदीप्त हो करके मानो महाभारत का संग्राम हो गया।

आज मैं इसके ऊपर विचार नही दूंगा, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई समय वर्णन कराया, इन्होंने वर्णन करते हुए कहा कि अभिमान ही राष्ट्र की मृत्यु है, पुत्रियों का हनन होना ही, देखो, राष्ट्र की मृत्यु हैं, और चरित्र न होना राजा के राष्ट्र की मृत्यु हो जाती है। तो इसीलिए मानो देखो, चरित्र के लिए बहुत-सी आभाएं हैं, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से पूर्व काल में बहुत से प्रश्न किए जब राजा सुरापान करने लगता है, जब राजा द्रव्य की लोलुपता में आ जाता है, न करने वाले क्रियाकलाप को करने लगता है, तो राजा के राष्ट्र में चरित्र न रहने से मानो देखो, भंयकर अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। उस अग्नि का परिणाम यह होता है क्या राजा के राष्ट्र में देखो, नाना प्रकार की रूढ़ियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, और उस रूढ़ियों के उत्पन्न होने से वह एक दूसरा प्राणी प्राणी को नष्ट करने के लिए तत्पर हो जाता है। ज्ञान न रहने से जब ज्ञान नही रहेगा, तो विवेक नही रहेगा और जब विवेक नही आयेगा, तो ज्ञानं ब्रह्मा देखो, जब यह दोनो नही रहेंगे चरित्र भी न ही रहेगा, और चरित्र नही रहेगा तो अज्ञान छा जाएगा, और अज्ञान के आने पर मानो देखो, विद्याएं लुप्त हो जाती हैं, और जब विद्या लुप्त हो जाती हैं, तो विद्याओं के मानव को वह आत्मिक चाहिए, तरंगो से वह आत्मिक तरंगो में तरंगित न होता हुआ मानो देखो, नाना प्रकार के रूढ़िवाद बन जाते हैं। इन रूढ़ियों का परिणाम यह होता है क्या देखो, वह रूढ़ियाँ एक दूसरे को नष्ट करने लगती है, प्राणों के प्राणो को नष्ट करने लगती हैं रक्त बहाने लगती हैं। तो इसीलिए राजा के राष्ट्र में एक अग्नि प्रचंड हो जाती है।

तो विचार आता रहता है इसीलिए चरित्र की राजा को आवश्यकता रहती है, राजा के राष्ट्र में देखो, चरित्र जो बहुमूल्य एक वस्तु कहलाती है, जिसके ऊपर उसको विचार-विनिमय करना है, आज मैं राष्ट्र की चर्चा इसीलिए उच्चारण कर रहा हूँ कि राष्ट्र होगा तो समाज पवित्र रहेगा, आध्यात्मिकवाद भी राष्ट्र से गुथा हुआ होना चाहिए। परन्तु देखो, आज मैं वर्तमान के काल की वार्त्ता प्रगट करा रहा हूँ, कहाँ वह काल आध्यात्मिकवाद का काल था, जब अपने पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा अध्ययन के लिए जाते तो जब अध्ययन करते मस्तिष्कों का जब अध्ययन किया जाता, तो पूज्यपाद कहते इतने समय तक गायत्री का जाप करो, मानो वेदों का अध्ययन करो, और मन्त्रों की रात्रि समय इतने समय विश्राम करना है। इतने समय अध्ययन करना है, जब आचार्य इस प्रकार उद्गीत गाते, तो वह ऐसा ही किया जाता तो विद्यालय सजातीय बन जाता। आधुनिक काल में तो छात्रवत की प्रवृत्ति है, वह अशुद्ध बन रही है, मानो देखो, वह आहार से नही कहते, वह आचार्य कहते जाओ, प्रातःकाल तुम वायु का सेवन करो देखो, आधुनिक काल में ब्रह्मचारी को यदि आचार्य यह कहता है कि वायु का सेवन करो तो वह ब्रह्मचारी अपने में जाने के लिए तत्पर नही है। उसका मूल कारण क्या है? उसके मूल में राजा है, और आचार्य हैं उसके मूल में माता है, पितर जन हैं, यह सर्वत्र मानो देखो, अपने में क्रियाकलापों को नही कर पाते हैं। जब नही कर पाते तो ब्रह्मचारी भी नही कर पाता। तो इसीलिए देखो, आगे चल करके ब्रह्मचारी ने देखो, केवल द्रव्य की लोलुपता के लिए अध्ययन करता है। वह मानवता के लिए अध्ययन नही कर रहा है, यदि आज का छात्रवत आज का राष्ट्र यह विचारने लगे कि मेरे जीवन में मानवता होनी चाहिए, और विद्यालयों में मानवता के लिए ही मैं शिक्षा अध्ययन कराता हूँ। मुझे द्रव्य की लोलुपता नही हैं, मैं मानवता चाहता हूँ, मनन करने वाली विद्या को चाहता हूँ, तो मानो देखो, राष्ट्र सदैव ऊँचा बनेगा छात्र वहाँ का ऊँचा रहेगा, परन्तु जब आचार्य को द्रव्य चाहिए, तो ब्रह्मचारी को भी द्रव्य चाहिए, और जब ब्रह्मचारी को ऐश्वर्य के लिए द्रव्य चाहिए, गृहाश्रम में प्रवेश करके उसके क्रियाकलाप सब नष्ट हो जाते हैं, परन्तु देखो, वही अज्ञानता के लिए जब आत्मा को भोज्य ही नही प्राप्त होता, तो वह रूढ़ियों में परिवर्तित हो जाता है। तो जब समाज रूढ़ियों में बन जाता है। क्योंकि अज्ञानता से रूढ़ि आती है, जब भी

मानो शिक्षा प्रणाली का प्रसंग हमारे समीप आता है, हम शिक्षा प्रणाली के ऊपर विचार-विनिमय करते हैं, तो देखो, राजा के राष्ट्र में देखो, शिक्षा प्रणाली का जो मानो वितरण है, वह वितरण प्रणाली राष्ट्र के यहाँ पवित्र न रह करके अपवित्र बन गई है। तो इसीलिए देखो, वह शिक्षा ग्रहण करके भी मानो देखो, रूढ़ियों को उत्पन्न करता है, वह रूढ़ियां में जाता है। अपने मानो देखो, मुखारबिन्दु के जिस विद्या को जान करके देखो, ब्रह्मचारी निगल करके जिस विद्या का वमन करता है।

गुरुओं की झूठन

आचार्य बन करके और ब्रह्मचारी उससे पवित्र होता है, आधुनिक काल में वही देखो, आचार्य वही आचार्य जब द्वितीय रूप में चला जाता है। तो अपने शिष्य और शिष्याओ को देखो, वह अपना वमन को न दे करके, अपने आहार देखो, अन्न के आहार का वमन करा कर, उसका पान कराना चाहता है। अपनी झूठन देता है, और अपने शिष्यों को जब वह झूठन देता है, तो शिष्य बड़े प्रसन्न रहते हैं। कहते हैं, गुरु की बड़ी अनुपम कृपा हो रही है, तो मानो इसका नाम रूढ़िवाद कहा जाता है। रूढ़िवाद का अभिप्रायः यह है क्या वह देखो, उसे झूठन न देनी चाहिए, न ब्रह्मचारी को पान करनी चाहिए, उसके मूल में यह क्या ज्ञान नही रहा है, आचार्यों ने ज्ञान नही दिया अचार्यों ने ज्ञान न दे करके केवल वह द्रव्य कि लिए अध्ययन किया है। अध्ययन करने के पश्चात मानो देखो, इस प्रकार की प्रवृत्ति बन जाती है, यह प्रवृत्ति देखो, राष्ट्र के लिए समाज के लिए आध्यात्मवाद के लिए बड़ी घातक कहलाती है। परन्तु देखो, जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह प्रश्न किया था, जब मैं विद्यालय में पंहुचा क्या आचार्य की झूठन क्या होती है? तो गुरुओं की झूठन क्या होती है? तो मैंने उत्तर दिया क्या हे प्रभु! देखो, झूठन के उत्तर को तो मैं जानता नही, इतना जानता हूँ क्या जिस विद्या का अध्ययन आचार्य ने किया है, और तपस्या से उसका मन्थन किया है, वही विद्या आचार्य देखो, ब्रह्मचारी को वमन के रूप में परिवर्तित करता रहता है। तो वह विद्या हमें होनी चाहिए, उस विद्या से मानव का जीवन पवित्र बनता है। जब मैं यह कहता रहता हूँ, इसके मूल में राष्ट्र है, और राष्ट्र की जो प्रणाली है, वह बड़ी अशुद्ध है, क्योंकि राष्ट्र की प्रणाली केवल चरित्र के ऊपर होनी चाहिए। जब राष्ट्र का निर्वाचन हो तो देखो, बुद्धिजीवी प्राणी विद्यमान हों, आधुनिक काल में बुद्धिजीवी उन्हें स्वीकार करते हैं, जो सबसे विशेष मिथ्या उच्चारण करते हैं। वह बुद्धिमान कहलाता हैं, परन्तु देखो, जब वह यह कहता है, क्या हम सब धर्मों को एक स्वीकार करते हैं अरे, जब मैं यह कहता रहता हूँ, अरे, भोले हे राष्ट्र के वेत्ता! राष्ट्र के कर्मवेत्ता देखो, धर्म तो एक ही होता है, धर्म अनेक नही होते जब राजा को यह ज्ञान नही होता राष्ट्र के कर्मचारियों को यह ज्ञान नही होता कि धर्म एक ही है, धर्म अनेक नही हैं, राष्ट्र की प्रणाली समाप्त हो जाती है। वही धर्म और मानवीयता प्रणाली समाप्त हो जाती है। इसीलिए राजा को चाहिए क्या देखो, धर्म एक है और धर्म को ही स्वीकार करना क्योंकि मानव के नेत्रों का धर्म है, दृष्टिपात करना शुभ दृष्टिपान करना ही मानव का धर्म है, और कुदृष्टिपान करना मानव की धर्म प्रवृत्ति बन जाती है। तो इस प्रकार देखो, मैं अपने में विचार-विनिमय विशेष नहीं दूंगा, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे एक राष्ट्र के प्रति, एक दाह बनी हुई है, उसका मूल कारण यह है कि जब राजा का निर्वाचन होता है? और जब निर्वाचन में एक बुद्धिमान, जिसने जीवन भर वेद का अध्ययन किया है और तपस्या की है और वायु का सेवन करके अपने जीवन को व्यतीत किया है, वह विवेकी बन गया है, निष्पन्न बन गया है, जब उसके विचार उसकी एक ही भावना रहती है जो अपठित है जो नही जानता है, जब दोनों का एक ही सूत्र मनका बन जाता है, तो उस राजा के राष्ट्र की प्रणाली निर्वाचन प्रणाली भ्रष्ट हो जाती है, और वह भ्रष्ट इसीलिए होती है, क्योंकि बुद्धिमानों से राष्ट्र का निर्वाचन होना चाहिए। बुद्धिमानों की सभाएं होनी चाहिएं, और उसमें देखो, सभापति एक देखो, जो वेद का मर्मज्ञ हो, जो तपस्या का ममर्ज्ञ हो, जो ऋषि मानो देखो, जो निस्वार्थ हो जो

वेदज्ञ, उसका निर्वाचन होना चाहिए, और वह राजा बने और वह राजा बन करके अपने राष्ट्र का कल्याण करें और वह प्रजा में अश्वमेध यागों का आयोजन होना चाहिए जिस प्रकार देखो, राजा निर्मोही होना चाहिए जब राजा के राष्ट्र में प्रत्येक मानव निर्मोही बन जाएगा तो राष्ट्र देखो, अपने आप ही शुद्ध और पवित्र बेला में परिणत हो जाएगा। इसीलिए देखो, राष्ट्र में धृष्टता है, क्योंकि राजा चरित्रवान न होने से, इन्द्रियों के ऊपर संयम न होने से, मानो देखो, इसीलिए राष्ट्र अपने में अपवित्र बनता चला जा रहा है। मैं आधुनिक काल में दृष्टिपात करता रहता हूँ, कि आधुनिक काल में वह जो प्रणाली बनी है जन समूह की प्रणाली है वह जो विचित्र वह बुद्धिमानों की प्रणाली हैं परन्तु देखो, जब निर्वाचन होता है, तो बुद्धिमान भी देखो, विश्रत हो जाता जाता है और देखो, वह द्रव्य की लोलुपता में उसी मानो देखो, सुरा सुन्दरी की लोलुपता में भ्रष्ट हो करके देखो, राष्ट्र का विनाश कर रहा है। इसीलिए आधुनिक काल देखो, राष्ट्र के विनाश के मार्ग पर जा रहा है उसके मूल में ज्ञान न होने से, यह यह देखो, त्रेता के काल से क्रियाकलाप चला आ रहा है, त्रेता के काल के पश्चात यहाँ देखो, जितने राजा उनमें अज्ञान आया, उसके पश्चात यहाँ और भी अज्ञान आया क्या द्वितीय देखो, एक राष्ट्र से देखो, द्वितीय राष्ट्र से आक्रमण होना प्रारम्भ हुआ, जब आक्रमण होना प्रारम्भ हुआ, तो अपनाने का प्रयास किया। यवनों ने राष्ट्रों में अकृत किया, उनकी संस्कृति उनके चरित्र को भ्रष्ट करने का प्रयास किया, वह इसीलिए चरित्र भ्रष्ट कर रहा है, मानव क्योंकि अपनी लोलुपता के लिए करता रहता है। यदि उसे अपना कोई ज्ञान हो विवेक हो, तो वह प्रजा के चरित्र को भ्रष्ट नही करेगा। चरित्र इसीलिए भ्रष्ट करता है राजा, क्योंकि अपनी लोलुपता अपना राष्ट्र बना रहे, इसीलिए मानो देखो, वह चरित्र को नष्ट करता रहता है।

नाग जाति का सम्मान

आज मैं देखो, उन राजाओं की वार्त्ताएं प्रगट नहीं कर रहा हूँ जितने राष्ट्र हुए वह मानो देखो, सुन्दरियों में रमण करते रहे हैं, और सुन्दरियों में रमण करने से अज्ञान आया, अज्ञान के आने से देखो, नाना प्रकार की रूढ़ियों की उपलब्धि हुई, यहाँ देखो, अमृतं मंगलं ब्रहे जब मैं देखो, ऐसे वाक्यों की चर्चा कर रहा हूँ जैसे मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया, बभ्रु भान जब देखो, बुद्धिमान जब देखो, पाताल पुरी का राजा बना। तो पाताल पुरी में देखो, एक मानवता का प्रसार हुआ, वह हमारे यहाँ देखो, भगवान कृष्ण की पतिका मानो देखो, अपने से बड़े विशालता से पाण्डव की पतिका भी बड़ी विशालता से, परन्तु देखो, वहाँ जब एक क्रान्ति आई थी, बभ्रु भान से पूर्व एक क्रान्ति आई, जहाँ देखो, अमृतं ब्रह्मा देखो, वह अश्विती कृतं ब्रीहि ब्रहा महर्षि कपिल मुनि महाराज देखो, पाताल पुरी के रहने वाले, वहीं उनका विद्यालय था, जब वहाँ से क्रान्ति प्रारम्भ हुई, उस क्रान्ति से देखो, नाग जाति जब भारत भूमि पर आई और नाग जाति को भगवान कृष्ण ने अपने में अपनाने का प्रयास किया।

तो जब अज्ञान आया, समाज में तो कैसा आया पूज्यपाद क्या देखो, एक नाग प्राणी है, एक रेंगने वाली प्राणी है, उसको समाज ने देखो, नाग स्वीकार करके और उसको नाथने के रूप में उसको परिचय दिया। समाज ने कलंकित किया है, जिसको महापुरूषों को, रूढ़िवाद में ही कलंकित किया जाता है। नाग जाति देखो, यहाँ जातीयता के आधार पर के वह मिश्रण हो गई, और मिश्रण हो करके आज भी आधुनिक जगत में भी कहीं कहीं नाग जातियां प्राप्त होती रहती है। इसीलिए देखो, मैं उच्चारण कर रहा हँर बहुत से राष्ट्र से मुझे इस प्रकार का भान हुआ। परन्तु देखो, जब पाताल पुरी जब रूढ़िवाद के आँगन में प्रवेश हुई, मानो देखो, वहीं देखो, ईसा के मानने वाले हुए, तो ईसा के मानने वालों में नाना प्रकार का रूढ़िवाद आया, और प्राणी, प्राणी को नष्ट करने लगा। रक्त में रक्तों की कृतियां मानो नष्ट हो गई। क्योंकि रूढ़ियों में एक दूसरे की रूढ़ि को नष्ट करने लगा, इस

प्रकार देखो, संसार का विनाश क्यों होता है? जब होता है, जब अज्ञान आ जाता है, ज्ञान नही होता देखो, ज्ञान ही सर्वत्रता में विद्यमान रहने वाला मानो देखो, अपनी आभा में परिणत हो जाता है। विचार आता रहता है मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन करता रहता हूँ, उसके पश्चात देखो, और भी नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बनीं। परन्तु देखो, वे रुढि वृत्तियों में महाभारत काल के पश्चात, नाना प्रकार की रूढ़ियों का प्रादुर्भाव हुआ, देखो, यहाँ मोहम्मद के मानने वालों में एक शब्द बनता है कुरू, मानो कुरू का जन्म कहाँ से होता है? वह कुरू वंशियों से होता है, क्योंकि यहाँ महाभारत में देखो, कुरू वंश और पाण्डव देखो, दो पक्ष बने थें। तो जितने भी कुरु थे, वह सर्वत्र मानो देखो, यह दुर्योधन के मानने वाले, यह कुरु को मानने वाले थे, यह कुरु वंश कहलाए गएं हैं, और इसी प्रकार देखो, हम जिसको कहते हैं पातालपुरी यह सब पाण्डवों के अंग वृत्तियों में रत्त रहने वाले, परन्तु देखो, यह भी अपने में मानो संग्राम के वृत्ति बने, विचार आता रहता है कि मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं परन्तु यह भी रूढ़िवाद बन गया। यही रूढ़िवाद बन करके कोई मोहमम्द के मानने वाला, कोई ईसा के मानने वाला, यह रूढ़ियाँ क्यों बनती हैं यह अज्ञानता से बनती हैं। इसीलिए अज्ञान को राजा का कर्तव्य है कि अज्ञान को नष्ट करने के लिए राजा का जन्म होता है। राजा की उपलब्धियां होती हैं, वह माताएं चली गई, संसार से जिन माताओं के गर्भ से मानो देखो, जहाँ कृष्ण जैसों का जन्म होना चाहिए था, यहाँ राम जैसे महापुरूषों का जन्म होना, सब समाप्त हो गया, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव एक समय श्रवण किया क्या लंका में देखो, जब रावण का राष्ट्र तप रहा था। राजा रावण के राष्ट्र में सूर्य अस्त नही होता था, इतना विशाल राष्ट्र बन गया था, परन्तु देखो, उस राजा के राष्ट्र में रूढ़ि और अज्ञान आ गया अज्ञान आने से ज्ञान न रहने से राजा में स्वार्थवाद आया, सुरा और सुन्दरियों में लग गएं परन्तु देखो, नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बन गई। परन्तु देखो, यह राक्षस जो उपाधि हैं, एक रूढ़ि कहलाती हैं, और देखो, वह राजा रावण का पुत्र मेघनाथ इत्यादि वह सब देखो, देवी सम्पदा को स्वीकार करते थे, जो देवी की पूजा करते थे, उनका परिणाम यह हुआ कि उनका नाना प्रकार की रूढ़ियों में राष्ट्र चला गया, अन्त में देखो, राम ने ज्ञान के द्वारा रूढ़ियों को नष्ट करने का प्रयास किया, और प्रयास करके देखो, रामं ब्रहे उन्होंने राम राज्य की स्थापना की।

तो विचार आता रहता है। मैं इस सम्बन्ध में यह चर्चा देने आया हूँ कि प्रत्येक राष्ट्र में ज्ञान की आवश्यकता है, राजा को ज्ञान और विवेक की आवश्यकता है, जब तक यह विवेक नही होगा क्या? हम अपने को अपने पन को न स्वीकार करें, तब तक मानो देखो, राष्ट्र ऊँचा नही बनता मैंने राष्ट्रीयता के हृदय को जानने के पश्चात मेरे हृदय में एक विडम्बना होती रहती है कि राष्ट्र कहाँ जा रहा है? कहाँ छात्र बल जा रहा है, कहाँ आचार्य जन जा रहे हैं, कहाँ आचार्य और छात्र दोनो देखो, सुरा का पान करने वाल एक स्थान पर होते हैं, तो विद्यालय कैसे ऊँचा बनेगा। ऊर्ध्वा में कैसे बनेगा? मानो जहाँ पिता और पुत्र दोनों सुरा पान में लग रहे हो, तो वह कैसे पवित्र बनेंगे? आज कोई देखो, अपने गृह को पवित्र बनाना चाहता है अरे, अमृतं ब्रह्म उस माता कौशल्या को जन्म देना होगा, जिन माता कौशल्या के गर्भ से राम जैसों का जन्म हो, जो राष्ट्र को मानो देखो, एक जैसे बाल्य अपने में देखो, अमृतमयी देखो, संहार करते रहते हैं, जब तक माता के गर्भ से राम जैसे पुत्रों का भरत जैसे पुत्रों का जन्म नहीं होगा, जो राष्ट्र को खिलवाड़ की भांति स्वीकार करते हैं अरे, राष्ट्र को नही चाहता, वह भी राष्ट्र को नही चाहता, जब तक इस प्रकार के त्यागी पुरूषों का जन्म नही होगा, जब तक मानो देखो, राष्ट्र की महानता का जन्म नही हो सकेगा।

मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा कि बहुत समय हो गया, इस समाज को मानो रेंगते हुए जैसे सर्प रेंगता रहता है, ऐसे ही समाज रेंग रहा है, यह अपने चरित्र और देखो, अपने को ऊँचा बनाने

में असमर्थ हो रहा है। मैं यह चाहता रहता हूँ कि इसको पवित्र बनना है देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी वर्णन किया है, और मैं भी इन वाक्यों की पुनरूक्ति करता हूँ, क्या राष्ट्र को ऊँचा बनना है, तो विज्ञान पवित्र होना चाहिए। जब विज्ञान में मेरी पुत्रियों का नृत्त होता है, मेरी पुत्रियों के नृत्त को दृष्टिपात करके मेरे राष्ट्र में रहने वाली पुत्र और पुत्रियाँ मानो उस नृत्त में प्रसन्न होते हैं, और समाज में निकृष्टता आ रही है, ब्रह्मचर्य नही रहा है, क्योंकि ब्रह्मचर्य से मानव में बुद्धि आती है, ब्रह्मचर्य मानो देखो, विज्ञान के दुरूपयोग ने अपने में ग्रहण कर लिया है, ग्रहण करने से देखो, वह नष्ट कर रहा है। पुत्र, पुत्रियाँ नष्टता को जा रहे हैं। परन्तु क्या यह राजा को ज्ञान नही हैं, राजा कहता है, शिक्षा शास्त्री यह कहते हैं, क्या पुत्र और पुत्रियाँ देखो, एक ही विद्यालयों में अध्ययन करें, यह सबसे महान एक दोषारोपण राजा के लिए है। क्योंकि विद्यालय मानो दूरी होने चाहिएं, कन्याओं का विद्यालय पवित्र हो, तो ब्रह्मचारियों का पुनीत हो दोनो ही देखो, अपने-अपने जीवन को ऊँचा बनाने वाले हों इस प्रकार की प्रणाली भगवान मनु ने निर्धारित की थी, मनु जी के वाक्यों को न विचार करके ही मानो देखो, यह समाज रसातल को जा रहा है। मैं यह कहता रहता हूँ कि सभाएं होनी चाहिएं राजाओ की सभा जब राजा मानो देखो, किसी वाद के आँगन में प्रवेश हो जाता है, और राजा को मृत्यु का भय बना रहता है अरे, यहाँ के देखो, जब बुद्धिमान भी जो अपने को गुरुजन कहते हैं, जब उनके शिष्य भी मानो देखो, मृत्यु का भय बना रहता है, तो वह आचार्य गुरु भी नही रहते विचार आता रहता है, मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही परन्तु ब्रह्मे वेद का मन्त्र कहता है कि मानव को निर्भय रहना चाहिए। राजा को निर्भय रहना चाहिए। क्योंकि राजा निर्भय उसी काल में होता है, जब उसे ज्ञान होता है, विवेक होता है, वह परमात्मा का भक्त होता है, क्योंकि परमात्मा का जो भक्त है, वही तो निर्भय रहता है। इसीलिए राजा में परमात्मा की प्रतीति न होने से उसे मृत्यु का भय बना रहता है। मेरी यहाँ भी मृत्यु न हो जाएं, मेरी यहाँ भी मृत्यु न हो जाएं अरे, मानो तब तू अपने जीवन को ब्रह्मसूत्र में प्रवेश कर लेगा और ब्रह्मचर्य को ऊँचा बना लेगा, तो तेरी मृत्यु राजा नही होगी अरे, राजा तेरी तो मृत्यु होने के लिए सदैव तत्पर रहती है। जब तेरे राष्ट्र में रूढ़ि नही होगी, धर्म के ऊपर रूढ़ि नही होगी, मानवता के ऊपर रूढ़ि नही होगी, तो तेरी मृत्यु क्यों होने लगी है, देखो, राम जब अपने राष्ट्र का शासन करते थे, तो तपस्या कर रहे हैं। वनों में भरत से कहते हैं, मैं तपस्या करने जा रहा हूँ, वह बारह वर्ष का तप करते हैं, ऋषि-मुनि आते साधारण प्राणी आते तो उनकी चर्चाए ज्ञान की चलती परन्तु देखो, इसी प्रकार भरत भी इसी प्रकार के क्रियाकलाप करते रहते थे, तो राजा देखो, जब सांयकाल को रात्रि काल में सदैव भ्रमण करते थे, और भ्रमण करके प्रजाओं को चुनौती देते, प्रजा में कही कोई कमी तो नही है, जब इस प्रकार का काल आ जाता है, तो प्रजा कैसे ऊँचा नही बनेगी, प्रजा तो जब ही ऊँची बनेगी जब राजा, प्रजा में नही देखो, वह प्राप्त होती रहेगी। जब राजा देखो, प्रजा के अपने राष्ट्र में निर्भय रहेगा, प्रजा देखो, राजा को अपनी वार्त्ता उद्गीत रूप में गायेंगे, तो समाज पवित्र बनेगा, जब राजा के राष्ट्र में मानो देखो, मेरी पुत्रियाँ अपने श्रृंगार को नष्ट करके अपने उदर की पूर्ति करने वाली हो, तो वह राष्ट्र नही होता वह अकृत कहलाता है। तो विचार आता रहता हैं, यह क्यों है? ऐसा इसके मूल में अज्ञान है, इसके मूल में विद्यालय हैं, क्योंकि जहाँ देखो, छात्र बल जहाँ देखो, जहाँ देखो, पुत्रियों को कुदृष्टिपान करने वाला छात्र बन गया है अरे, कोई विद्यालय कैसे ऊँचे बनेंगे, यहाँ आचार्य कैसे महानता को प्राप्त होते रहेंगे।

आज मैं इसीलिए उच्चारण कर रहा हूँ क्या इसके मूल में यह सब राजा का दोष है, यह दोषरोपण राजा को कहा जाता है, तो राजा क्या कर सकता है, तो विचार आता है कहा जाता हो जो परमात्मा की धरोहर है, राष्ट्रवेत्ता की धरोहर है, अमृतं देखो, राष्ट्र भूतं ब्रह्मा यहाँ सम्प्रदायों के ऊपर एक सम्प्रदायवादी कहता है, गऊओ की रक्षा होनी चाहिए, एक सम्प्रदायवादी कहता है क्या देखो, इससे हमारे शरीर बलवती होते हैं, और कहता है नही

होना चाहिए अरे, राजा को हित और अहित को तो विचारना है। प्रजा कैसे विचार सकेगी, यह रूढ़िवाद को नष्ट करने के लिए राजा का जन्म होता है, और यदि देखो, रूढ़िवाद नष्ट नही होता है, अज्ञान नष्ट नही होता है, तो मानो देखो, राष्ट्र का अपना कोई अस्तित्व नही कहलाता है, विचार आता रहता है कि मानवता का धर्म मानवता का नाम ही तो धर्म है, राजा कहता है कि हमारा राष्ट्र निरपेक्ष कहलाता है अरे, निरपेक्ष वह कहलाता है जिसकी तुम अपेक्षा कर रहे हो अरे, यदि मानो नेत्रों से सुदृष्टिपान करना समाप्त हो जाएगा, तो राष्ट्र कर मृत्यु हो जाती है। यदि देखो, सु शब्द नही रहा है तो शब्द ध्वनि नष्ट हो जाती है, राष्ट्र की मृत्यु हो गई है अरे, धर्म तेरी इन्द्रियों में राजा कहाँ स्वीकार करता है, क्या राजा देखो, धर्म के स्थान बना लेता है। इनको धर्म स्थान स्वीकार करके मानो देखो, राष्ट्र इसी में लगा रहता है, जब विचार आता है कि धर्म कहाँ हैं अरे, धर्म मानव की इन्द्रियों में निहित रहता है। तो इन्द्रियों के ऊपर विचार-विनिमय होना चाहिए, उसके ऊपर अनुसन्धान होना चाहिए, इसीलिए देखो, मैं जितना भी वाक् उच्चारण करूं वह विशेष नहीं आज का विचार केवल मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ कि हे राष्ट्र यदि तू अपना जीवन चाहता है, अपने में देखो, राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है, तो तेरे राष्ट्र में रूढ़ि नही रहनी चाहिए, और रूढ़ि जब नष्ट हो सकती है, जब राजा विवेकी होगा, राजा ज्ञानी होगा और वह देखो, प्रजा को ज्ञानी बना करके निर्भय बन करके अपने राष्ट्र में भ्रमण करेगा।

मैंने कई कालों में वार्त्ताएं प्रगट कीं पूज्यपाद गुरुदेव की आज्ञा पाते हुए क्या राष्ट्र को ऊँचा बनाना है, तो राष्ट्र जब ऊँचा बनेगा जब यहाँ आचार्य पवित्र बनेगा, और राजा के राष्ट्र में देखो, वैज्ञानिकता होनी चाहिए। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई कालों में एक बहुत महत्वपूर्ण वाक् प्रगट किया, क्या देखो, विद्यालयों में ऐसे यन्त्र होने चाहिएं, विज्ञान के जैसे मानो देखो, विद्यालयं ब्रहे ब्रह्मचारियों! को देखो, आचार्य उपदेश दे रहा है, उसके मन की दशा क्या है, मन की गति क्या है, उस गति को जान करके यन्त्र में उसके चित्र आने चाहिएं उसको जब ब्रह्मचारी अपने में ग्रहण करेंगे तो वह कहेंगे यह अशुद्ध है, परन्तु देखो, वह आचार्य मौन हो जाएगा, और राष्ट्र का उस काल में विज्ञान का सदुपयोग होगा विज्ञान का दुरूपयोग नही सदुपयोग होना चाहिए। चित्रावलियों में मेरी पुत्रियों के नृत्त नही होने चाहिए। उसे कहता है समाज मनो का रंजन अरे, मनो का रंजन तो प्रभु! ने निर्माणित किया है, पूज्यपाद कल उच्चारण कर रहे थे क्या मन को लगाना है, तो ब्रह्माण्ड में लगा दो जहाँ लोक-लोकान्तरों की माला बना करके कण्ठ जिससे सजातीय होता है। मन जिससे पवित्र होता है। उसमें क्यों नही लगा रहा है समाज, मंगलं ब्रह्मे वर्णसुता पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा समाज में मंगलतव होना चाहिए। इसी प्रकार आज मैं राष्ट्र की कहाँ तब चर्चा करूंगा, अश्वपति के यहाँ महाराजा रघु की चर्चा हो रही है कई समय से रघु वंश में जितने राजा हुए हैं इनकी बड़ी बड़ी आयु हुई हैं मनु वंश में जितने राजा हुए हैं उनके बड़े विशाल देखो, में आयु रही है और ऐसी आयु है, जिस आयु को हम विचारते रहते हैं मानो देखो, उनका ब्रह्मचर्य छात्रवत सब पवित्र बना रहा है और राजा के राष्ट्र में स्वतः अपने में पवित्रता को धारण करके देखो, वहाँ रूढ़िवाद नही रहता, यह रूढ़िवाद समाप्त नही होगा, तो मानो देखो, यह रूढ़िवाद अज्ञानता से या यह संग्राम से एक दूसरे को नष्ट करके यह समाप्त नही हो सकता। अरे, रूढ़ि जब समाप्त होती है ज्ञानी पुरूष होते है। राजा विवेकी होता है, ब्रह्मवेत्ता होता है, ब्रह्मनिष्ठ होते हैं। ब्रह्मणा भूतं ब्रह्मा ब्राह्मण ऊँचे रहने चाहिए तो इसीलिए हम अपने में देखो, राष्ट्र को ऊँचा बना सकेंगें अन्यथा देखो, आज हम स्वरों में उद्गीत गाते रहते हैं परन्तु देखो, निर्वाचन प्रणाली हमारी पवित्र होनी चाहिए। हमारा जीवन देखो, एक महानता में रमण जब ही कर सकता है, जब हम ज्ञानी बनेंगे ज्ञान का अभाव होने से यह मानो देखो, एक धर्म को नाना धर्म उच्चारण कर रहा है, एक जो राजा अधिपति बन गया है, वह भी नाना धर्म कह रहा है, एक जो राष्ट्र का कर्मचारी वह भी नाना धर्म कह रहा है अरे, धर्म तो एक होता है, और रूढ़ियाँ अनेंक

होती हैं। इसीलिए रूढियों को नष्ट करों धर्म को अपनाने का प्रयास करों यह आज मैं विशेष चर्चा प्रगट करने नही जा रहा हूँ अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा क्योंकि मैं विशेष चर्चा प्रगट नही करूंगा

पूज्यपाद गुरूदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने हृदय की वेदना प्रगट की है, और उनकी वेदना बड़ी मार्मिक रही है, उन्होंने यह कहा कि ज्ञान होना चाहिए, बिना राष्ट्र के ज्ञान कदापि ऊँचा नही बनेगा प्रायः उनका वाक् बड़ा विचित्र रहा है और देखो, उसमें ज्ञान और विवेक होना चाहिए जैसा मैं कई समय देखो, राजा रघु की चर्चा हम कर रहे हैं। राजा रघु के यहाँ देखो, ज्ञान भी था और विवेक भी था, और ज्ञान और कर्म दोनो को राष्ट्र को ऊँचा बनाया जाता है, तो इसी प्रकार देखो, यह आज का वाक् यह अब सम्पन्न होने जा रहा है। कल मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ शब्द कल भी उच्चारण करेंगे, आज का वाक् समाप्त इनके वाक्यों में बड़ी मार्मिकता रही है, देखो, मिलन करने की बड़ी प्रवृत्ति रही है, आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

१० याग पर महर्षि याज्ञवल्क्य के विचार १५ ०३ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है क्योंकि परमात्मा का यह जो ब्रह्माण्ड हैं ये अनन्तमयी यज्ञशाला के रूप में प्रायः हमे दृष्टिपात आती रहती है आज कही से मुझे यह प्रेरणा प्राप्त हो रही है, क्या याग के ऊपर कोई विचार-विनिमय होना चाहिए मैंने बहुत पुरातन काल में वर्णन करते हुए कहा था क्या हमारे ऋषि-मुनियों ने दो प्रकार के यागों का व्यवधान किया है, मानो एक आध्यात्मिकवाद है, और द्वितीय भौतिक विज्ञान कहा जाता है, वह भी यज्ञशाला के रूप में वर्णित किया गया है, मानो आध्यात्मिक और भौतिक यागी प्राणी, अपने मानवीयतव को ऊँचा बनाता है, और राष्ट्र और समाज की एक सम्पदा बन करके और मानवीयतव में परिणत हो जाता है।

तो आओ, मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है, वेदमन्त्र कहता है, यज्ञनं ब्रह्मा वर्णसुतं ब्रह्मा जैसे याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा है क्या यह जो याग है, यह मानो इस संसार की नाभि है, और याग जैसे जितने भी संसार के सुक्रियाकलाप हैं, सुकर्म हैं, सुविचार हैं, यदि संसार से यह चले जाते हैं। तो संसार का नाभां ब्रह्मे वह नाभि समाप्त हो जाता है। याग का नाम हैं जितने भी सुक्रियाकलाप हैं, इसमें मानव के हृदय में सुक्रिया की तरंगों का प्रादुर्भाव होना चाहिए। जिससे हृदय अगम्यता को प्राप्त होता हुआ जो भी ज्योति लिंग में प्रवेश करता हुआ, अपने को ऊँचा बनाता है। तो आज का हमारा वेदमन्त्र यह कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता के ऊपर हम सदैव विचार-विनिमय हम करते रहें। तो यह परमात्मा का जो जगत है, यह अनन्तमयी माना गया है, यह अनन्तवत कहलाता है। तो इसीलिए अनन्तवान प्रभु की महिमा का हमें गुणगान गाना चाहिए।

तो आओ, मुनिवरों! देखो, मैंने तुम्हें याग के ऊपर कुछ महान विचार नही देना है, परन्तु यह परमात्मा ने यह जो सृष्टि का सृजन किया है, यह एक प्रकार की यज्ञशाला का उन्होंने निर्माण किया, और यज्ञशाला का उसमें निर्माण करके उसमें स्वयं परमपिता परमात्मा इस संसार रूपी याग के ब्रह्मा हैं। आत्मा यज्ञमान हैं, और यह पंच महाभूत मानो देखो, इसके होता कहलाए जाते हैं। जो हूत हो रहा है, यही हूत मानो देखो, विद्यालय मे आचार्य के गृह में होता है, यही राजा के राष्ट्रीयतव में होता है, तो यह संसार हमें अपने में यागमयी जगत हमें दृष्टिपात आता रहता है। तो आज बेटा! मैं तुम्हें याग के सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ, केवल यह कि हमारा याग पवित्र होना चाहिए। जिससे हमारा आन्तरिक और बाह्य जगत दोनो ऊर्ध्वा में गमन करते रहें।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें वाक् प्रगट करते हुए कहा था आज मैं तुम्हें संक्षिप्त परिचय देना अवश्य चाहूँगा, जो मैंने पुरातन काल में इसके वाक्यों का विश्लेषण दिया, और आज भी मुनिवरों! भिन्न-भिन्न वाक्यों के ऊपर विचार-विनिमय करना हमारा कर्तव्य है। मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ नैतिकता जब ब्रह्मचारियों को प्रदान की जाती, तो उस समय आचार्य देखो, प्रातःकालीन यज्ञशाला में विद्यमान हो करके वह ब्रह्मचारियों को वेदमन्त्रों का उद्गीत गाता हुआ कहता है, हे ब्रह्मचारी! तू गार्हपथ्य अग्नि का ध्यान कर। तू अग्नि को प्रदीप्त कर, और वह कहता है, हे गृह में वास करने वालों! तुम गर्हपथ्य नाम की अग्नि का चयन करो, वह कहता है हे वानप्रस्थ में रहने वाले! हे प्राणवर्धक! आह्वनीय नाम की अग्नि का चयन कर, अनेक प्रकार की अग्नियों का चयन करने वाला बन। मेरे

महाराजा रघु का याग

प्यारे! देखो, अपने में महानता की प्रतिभा में रत्त हो जाता है तो विचार आता रहता है कि हम परमपिता परमात्मा के उस अणुवृत्तियों को ध्यानावस्थित कर दे। तो इस प्रकार जब उसने वर्णन किया तो एक यज्ञदत नाम का ब्रह्मचारी उपस्थित हुआ और यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा-प्रभु! हम याग कैसे करें? तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा यागां भूतं ब्रह्मणा वृतं यज्ञं ब्रहो कृतं देवाः क्या यदि तुम्हें याग करना है, तो तुम अपने हृदय रूपी अग्नि को मानो जागरूकता में लाने का प्रयास करो। यज्ञं भूतं ब्रह्मा वर्णासुतं देवाः मेरे प्यारे! देखो, जैसे हमारे यहाँ वशिष्ठ मुनि महाराज इत्यादियों की चर्चाएं आती रहती हैं, और वशिष्ठ मुनि महाराज के यहाँ भी प्रातःकालीन मानो नैतिक वाद की चर्चाएं होती रहती अथवा यागों का चलन होता रहा है, इसी प्रकार देखो, रामं ब्रह्मा देखो, अयोध्या में राष्ट्रवाद की विवेचना करते मानो देखो, उसके यहाँ भी याग का व्यवधान होता रहा है। प्रातःकालीन बेटा! देखो, राम अपने राष्ट्र में यज्ञशाला थी और यज्ञशाला में प्रायः यागों में परिणत रहते थे। मेरे प्यारे! देखो, आज इस क्षेत्र में तुम्हें विशेष विवेचना नही दूंगा केवल यह हमारे यहाँ नैतिकवाद की चर्चा करते हुए, ऋषि ने देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से, जब ब्रह्मचारी ने कहा कि-प्रभु! हम याग कैसे करें। तो उन्होंने कहा कि यदि तुम्हें याग करना है, तो तुम मानो देखो, अग्नं ब्रह्मा देखो, अग्नि को प्रदीप्त करो, और उस अग्नि में चार प्रकार के साकल्य का हूत करो, मानो देखो, जिस साकल्य में मधुपन हो, मानो जिसमें अमृतं देखो, सुगन्धित हो और पौष्टिक हो और मुनिवरों! देखो, प्राणं ब्रहा प्राण वर्धक हो यह सर्वत्र औषधियों को ले करके व्रत्यं ब्रह्वा देखो, उतानं भूतं ब्रह्मा यह अपने में पुष्टिकारक कहलाता है। इन यागों का अपने में व्यवधान करो, जिससे तुम्हारा याग अपने में पवित्रता को प्राप्त होता रहे।

तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा-प्रभु! यह साकल्य हमें कैसे प्राप्त हो उन्होंने कहा तुम यज्ञशाला का निर्माण करो, और यज्ञशाला का निर्माण करने के पश्चात तुम उसके अंग संग विद्यमान हो जाओ, और अंग संग विद्यमान हो करके मानो देखो, तुम हूत करो, नाना प्रकार का देखो, घृत मधुपन में होना चाहिए, पुष्टिकारक होना चाहिए, और सुगन्धित होना चाहिए, अपने में मानो देखो, अमृतां अमृत को देने वाला हो। तो मेरे प्यारे! देखो, उसके द्वारा तुम साकल्य के द्वारा तुम याग करो, और याग करने का अभिप्रायः उसकी यज्ञशाला में तुम हूत करो, अग्नि को प्रदीप्त करो और प्रदीप्त करके तुम अग्नि का व्यवधान करो, तो मेरे प्यारे! देखो, यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा-प्रभु! यह वाक् तो हमने स्वीकार कर लिया। परन्तु यदि हमें यह भी सुविधा न हो, यज्ञशाला भी न हो, और मानो साकल्य भी न हो, तो मानो प्रभु हम याग कैसें करें? उन्होंने कहा यदि यह न हो तो तुम अग्नि को प्रदीप्त करो, और अग्नि को प्रदीप्त करके समिधाओं के द्वारा और यह कहो कि प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहाः और उदानाय स्वाहाः कह करके हूत प्रारम्भ करो। क्योंकि प्राण ही देखो, हमारा जीवन है, प्राण ही मानो देखो, अरबो खरबों परमाणुओं को लाता है, अरबों खरबों परमाणुओं को आन्तरिक जगत से बाह्य जगत में प्रवेश करा देता है। इसी प्रकार देखो, व्यान इतना विलक्षण मानो देखो, प्राणं ब्रह्मे प्राण अपान देखो, उसको अपने में समन्वय करता है, और व्यान उसका निरीक्षण करता है, और समान मानो सर्वत्रता में रमण करता है, और उदान मानो मेरे प्यारे! उद्गीत गाता रहता है। तो इस प्रकार तुम अपने में याग करो कहो कि प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, जब यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो, तो यह प्राणों का यज्ञ करने वाला क्योंकि प्राण ही तो भोक्ता रहता है, प्राण ही तो भक्षण करता है, क्योंकि प्राण ही अवधान करता रहता है। तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा तुम समिधाओं के द्वारा अग्नि का ध्यान करो, और अग्नि में हूत प्रारम्भ करो। क्योंकि अग्नि देवताओं का मुख कहलाता है, देवता मुखानाम भूतं ब्रह्मा लोकां मानो यह देवताओं का मुख है। देवता इसी के माध्यम से सर्वत्रता को प्राप्त करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा-प्रभु! यह भी हमने स्वीकार कर लिया है, परन्तु

हम ब्रह्मा देखो, ऐसा स्थान स्थली हो ज्ञानं ब्रह्मा मानो देखो, हमारे यहाँ अग्नि भी न हो, यह समिधा भी न हो, तो प्रभु! हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि समिधा न हो, तो तुम मानो देखो, जल को अपनी अंजलि में लो, और जल से कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः इस प्रकार तुम मानो देखो, हूत प्रारम्भ करो और प्रारम्भ करते कहो की प्राणां ब्रह्मा लोकां ब्रहे मानो देखो, वह जल को अंजलि में ले करके, जब स्वाहा दोगे, तो जल के द्वारा ही जल का पात्र तुम्हारे समीप होना चाहिए, और जल से क्योंकि जल की ही तरंगे उत्पन्न होती हैं, देखो, अग्नि से मिलान करती हैं, अग्नि की तरंगे ही तो उत्पन्न हो करके देखो, वायु मण्डल को निर्माणित करती हैं। तो इसी प्रकार देखो, अग्नं ब्रह्मा यही तो मानो देखो, जलं ब्रह्मा अग्नां भूतं यह जल हो तो पिण्ड बनाने वाला है। तो इसीलिए जल तरलतव पदार्थ माना गया है, चाहे वह मानो इस पृथ्वी मण्डल पर हो, चाहे वह सूर्य मण्डल में हो, चाहे वह चन्द्र मण्डल में हो, चाहे किसी भी लोक-लोकान्तरों में नृत्त करने वाला परमाणु क्यों ने हो, उसमें तरलता की गतियां रहती हैं। वही मानो देखो, आगे चल करके पिण्ड के रूप में परिणत हो जाती हैं।

तो मेरे प्यारे! जब इस प्रकार ऋषि ने अपना मन्तव्य दिया, तो उस समय यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा-प्रभु! मैं विशेष इसकी व्याख्या नही कराना चाहता हूँ। आचार्यों ने मुझे ऐसा वर्णन कराया है, मेरा एक प्रसंग और है, क्या हे प्रभु! कहीं मानो हमें जल भी प्राप्त न हो तो हम याग कैसे करेंगे? उन्होने कहा यदि तुम्हें जल भी प्राप्त न हो, तो तुम पृथ्वी की रज को ले करके कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः कह करके हूत प्रारम्भ करो। मानो उस हूत को तुम प्रारम्भ करके तुम अपने में रत्त हो जाओ। विचार आता रहता है मुनिवरों! अमृतं ब्रह्मा लोकं ब्रह्मे यही तो पिण्ड का स्वामी है, माता के गर्भस्थल में जब मानो यह तरलतव वनस्पतियों का रस जाता है। तो मानो यही पिण्डं भूतं यही गुरूतव होता है, वही तो पिण्ड का मानो देखो, मूल कहा जाता है। मेरे प्यारे! जब लोक-लोकान्तरों की रचना होती है, तो उसमें गुरूतव होने से ही पृथ्वी के रज होने से ही मुनिवरों! देखो, नाना पिण्डों का निर्माण होता है। वह पिण्ड मानो कोई पिण्ड पृथ्वी के रूप में हैं, द्वितीय पिण्ड मंगल के रूप में हैं, कहीं बृहस्पति के रूप में हैं, कहीं मानो देखो, वही पिण्डं ब्रह्मा ध्रुव इत्यादि लोक-लोकान्तरों के रूप में दृष्टिपात आता रहता है। यह जो जगत है यह पिण्डाकार माना गया है और पिण्डाकार का निर्माण मुनिवरों! देखो, बिना गुरूतव के पदार्थ के निर्माण नही होता। तो इसीलिए वेद का ऋषि कहता है, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों के मध्य में कहा हे ब्रह्मचारियों! यह जो गुरूतव मानो पृथ्वी के रज हैं अरे, इसके ही रज जब माता के गर्भ में जाते हैं, तो हम जैसे शरीरों का निर्माण होता हैं, पंच महाभूतों का निर्माण होता रहता है, और वही तरंगे जब ऊर्ध्वा में गमन करती है, तो सूर्य मण्डल का देखो, वह पिण्ड बनता रहता है। एक पिण्ड नहीं है बेटा! नाना पिण्डों की विवेचना मैंने पूर्व काल में तुम्हे वर्णन की है। एक पिण्ड नही है कोई माता के रूप में पिण्ड हैं, कोई पितर के रूप में पिण्ड हैं, कोई पुत्र के रूप में पिण्ड बना हुआ है। मानो देखो, यह नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों वाला और निहारिका वाला, यह पिण्डाकार जगत मानो मुझे दृष्टिपात हो रहा है।

तो विचार आता रहता है, यह पिण्डं ब्रह्मा यह पिण्ड का निर्माण करने वाला, यह कौन है? कौन निर्माण कर रहा है वह चैतन्य देव जो रचनाकार है वही तो इन पंच महाभूतों को मानो देखो, एकत्रित करता हुआ, एक संगठित बनाता है, और उसमें अपना तेजोमयी दे करके उसका निर्माण प्रारम्भ होता है। तो विचार आता रहता है कि पिण्डों का आकार जब बनता है, चाहे वह मानो पृथ्वी के रूप में हो, चाहे मंगल के रूप में हों, चाहे वह बृहस्पति के रूप में हो, चाहे मुनिवरों! देखो, वह मंगलं ब्रहे वह आरुणि मण्डल के रूप में हों, चाहे वह पुष्प नक्षत्र

के रूप में हों, नाना प्रकार का जो पिण्डाकार जगत दृष्टिपात आ रहा है। ये सर्वत्र मानो देखो, एक गुरूतव में विशेषतव प्रदान रहता है। मेरे प्यारे! देखो, तीन प्रकार के परमाणु हैं, जिनके ऊपर सर्वत्र विज्ञान निहित रहता है, वैज्ञानिक कहते हैं कि मानो देखो, तीन प्रकार का परमाणुवाद है, तेजोमयी तरलतव और गुरूतव, तीन प्रकार के परमाणु मानो अभ्यन ‍करते रहते हैं वायु देखो, इनको गति दे रहा है, और अन्तरिक्ष में ये गति करते रहते हैं इसीलिए यह पंच महा वृत्तियों का देखो, प्रकृति की मानो पांच गतियां मानी जाती हैं तो विचार आता रहता है कि कौन निर्माण करने वाला, निर्माणवेत्ता प्रभु हैं अपनी-अपनी आभा में देखो, गुरूतव परमाणुओं को ले करके निर्माणित करते रहें हैं। तो विचार आता रहता है कि विज्ञानवेत्ता अपनी विज्ञानशाला में यन्त्र का निर्माण करता है, और यन्त्र का आयु देता है, मेरे प्यारे! देखो, मैंने तुम्हें कई काल में कहा था, महाराजा भीम और घटोत्कच्छ की विज्ञानशाला में जब भीम घटोत्कच्छ ने दोनों ने अपनी विज्ञानशाला में एक यन्त्र का निर्माण किया था उनका यन्त्र देखा वर्तमान में वायु मण्डल में गमन कर रहा है गमनं ब्रह्मा वर्णनं ब्रह्वे व्रतं एक-एक लाख वर्षों के वायुमण्डल में यन्त्र गतिवान हो रहे हैं।

तो आज मैं देखो, इस सम्बन्ध में विचार ने देता हुआ, केवल यह कि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि हे ब्रह्मचारियों! मानो तुम पंच महाभूतों के ऊपर विचारो यह आत्मा का लोक है, क्योंकि आत्मां भूतं ब्रह्मे वही मेरे प्यारे! देखो, अपने में रत्त होता रहता है। तो विचार आता है। वेद का ऋषि याज्ञवल्क्य ब्रह्मचारियों के मध्य में कहते हैं, हे ब्रह्मचारियों! आओ, तुम नैतिकता को ऊँचा बनाओ, तुम गुरूतव परमाणु के ऊपर विचार-विनिमय करो, माता के गर्भस्थल में जब वह तत्त्व प्रवेश होता है, तो वहाँ शिशु का नृत्त होता है, तो मानो देखो, तो मानो देखो, एक ग्रन्थि का निर्माण होता है, और निर्माण हो करके वह मानव समाज वृत्तियाँ उत्पन्न वह पिण्ड कहाँ बन रहा है, बेटा! माता के गर्भस्थल में वही पिण्ड है, जिसका समन्वय सूर्य मण्डल से है, वही पिण्ड है जिसका समन्वय चन्द्रमा से है, वही पिण्ड है, जिसका समन्वय मानो द्यौ से कहा जाता है। नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों का मण्डल बन करके मानो देखो, लघु मस्तिष्क का निर्माण होता है। नाना प्रकार की निमाणित्ता कही जाती है, और वैज्ञानिक जन इसके ऊपर अनुसन्धान करते रहें हैं।

तो विचार-विनिमय यह कि विचारवेत्ताओं ने कहा कि मानो गुरूतव परमाणु को पृथ्वी की रज को ले करके कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, और समानाय स्वाहः कह करके अंगवृत्तियों को प्राप्त हो जाओं। मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो वह याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि हे ब्रह्मचारियों! देखो, यही पिण्डं ब्रह्मे मानव का पिण्ड हैं, जिसमें मानो देखो, यहाँ पिण्ड का जो निर्माण किया जाता है, उसमें बहतर करोड़ बहतर लाख दस हजार दौ सौ दो नाड़ियों का निर्माण होता है। निर्माणवेत्ता निर्माण करता है, वहीं बुद्धि का माध्यम विद्यमान हैं देखो, बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी मानो यह बुद्धियों के अवृत कहलाए जाते हैं मानो देखो, मन के विकार हैं, मन की नाना प्रकार की धाराएं मानी जाती हैं, वही चित्त है, वही अहंकार है, और वही मानो देखो, बुद्धि का जगत कहा जाता है। इनका सबका समन्वय अन्तरिक्ष से परमात्मा के ब्रह्माण्ड से रहता है। जो लोक-लोकान्तरों की प्रतिभा में रत्त रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मे व्रतं मानो जब माता के गर्भस्थल में मानो पिण्ड का निर्माण होता है तो बेटा! देखो, देवताओं में एक विशेष क्रांति आती है, धीमी-धीमी क्रान्ति आती है, धीमी-धीमी चर्चाएं होती हैं, देवतव की मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा अमृत देना प्रारम्भ करता है, सूर्य प्रकाश देता है, अग्नि उष्णा बनाती है, अग्नि उष्णा बना करके मानो ब्रह्वे व्रतं और मानो यह तरल पदार्थ मानो देखो, उसकी आभा में रत्त रहता है, और पृथ्वी गुरूतव देना प्रारम्भ करती है। जिससे मानो नाना पिण्डों का निर्माण हो जाता है और मानो देखो, पिण्ड का निर्माण कहाँ? माता के गर्भस्थल में और निर्माणवेत्ता वह चैतन्य देव है। माता को यह प्रतीत नही होता

कौन निर्माण करने वाला है कौन निर्माणवेत्ता है? माता मानो तुझे वेद ने धेनु के रूप में वर्णित किया है, धेनु नामों से तुझे पुकारा है। उद्गीत रूपों में गाया है। तो मानो देखो, तू अपने में महान है, तो इस प्रकार देखो, यह ऋषि ने वर्णन किया, उन्होंने कहा ब्रह्मणे देखो, इस मानो पृथ्वी की रज को ले करके कहो प्राणाय स्वाहा, इसकी रज नही होगी तो प्राण अपने में मानो शुष्क बन जाएगा, और प्राणों का अपना कोई महत्व नही रहेगा। तो इसीलिए मानं ब्रहे देखो, गुरूतव तुम्हारे द्वारा होना चाहिए। यह पृथ्वी का स्वरूप माना गया है, तो विचार वेत्ता ने कहा कि हे यज्ञदत! ब्रह्मचारी तुम अपने में याग को दृष्टि करो। तो मेरे प्यारे! यज्ञदत ब्रह्मचारी ने नतमस्तिष्क हो करके कहा हे प्रभु! मैं यह जानना और चाहता हूँ यदि भगवन! ब्रह्मणे कृतं देवतवां भूतं ब्रह्मा यदि भगवन! देखो, कही रज भी न प्राप्त हो, तो हम याग कैसे करेंगे? उन्होंने कहा कही तुम्हें रज भी प्राप्त न हो तो मानो देखो, तुम एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके वेदमन्त्रों का पठन-पाठन करते रहो, और कहो कि प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः कह करके हूत प्रारम्भ करो और मुखारबिन्दु से कहो स्वाहाः अमृतं देखो, प्रमाणं ब्रहे वृतं स्वाहाः ऐसा उद्गीत गाना तुम प्रारम्भ करो। जिससे तुम्हारे जीवन में, एक महानता की ज्योति जाग्रत हो जाएं, और उसमें स्वाहाः कह करके वायु मण्डल को पवित्र करो जब प्रत्येक मानव, प्रत्येक कन्याएं प्रत्येक मेरी पुत्रियाँ प्रातः कालीन देखो, स्वाहाः-स्वाहाः अपने गृह में ध्वनि का गुंजन करती हैं, तो गृह के बहुत से अशुद्ध परमाणु नष्ट हो जाते हैं। और वाणी अपने में अच्युता को प्राप्त करके और वाणी अपने में वायु मण्डल वहाँ का पवित्र बन जाता है।

तो मुझे वह काल स्मरण है ऋषि कहता है क्या वह यज्ञनं ब्रह्मा यज्ञनं अवृतं देवत्वां स्वाहाः तो जब मुनिवरों! देखो, याज्ञिक अपने में, अपने याग को पूर्ण करता है तो तो अपने में महानता का दर्शन करता है। तो विचार आता रहता है वेद का ऋषि कहता है ममन्तं ब्रह्मे ममन्तं देवाः ममन्तं ब्रह्मणा व्रतं लोका वसुत्रे मेरे प्यारे! उस आभा को जानने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए क्योंकि एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके, कहो अग्नं ब्रह्मा स्वाहाः अग्नं ब्रह्े कृतं अन्नां भूतं प्रहे वाचन्नमं ब्रहे देवत्वां स्वाहाः ऐसा उद्गीत गाता है वेदमन्त्रों का उद्गीत गाना चाहिए। क्योंकि वेदमन्त्र जितना अन्तरिक्ष में गुंजायमान होता है उसका ही वायु मण्डल का प्रदूषण समाप्त हो जाता है परमाणु और तरंगे प्रदूषण को निगलती चली जाती है और जब उसके ऊपर साकल्य मानो विद्यमान हो करके अग्नि की धाराओं पर वही शब्द वही चित्र और वही मानो देखो, स्वाहाः की अग्नि द्यौ में प्रवेश हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने अपना वर्णन करते हुए कहा सम्भो ब्रह्मणा लोकाम् ऐसे लोक-लोकान्तरों की रचना करने वाला, वह देवतं अपने मन, वचन, को एकाग्र करते हुए, अपने सामान्यता में उद्गीत गाओ, और उद्गीत गा करके स्वाहाः उच्चारण करो, अग्न्याधान करो परन्तु देखो, कोई भी पदार्थ तुम्हारे द्वारा नही है, देखो, समिधा भी नही है साकल्य भी नही है यज्ञशाला भी नही है तो उस समय तुम अपने इस शरीर को और मुखारबिन्दु को यज्ञशाला स्वीकार करके और हृदय रूपी यज्ञशाला में मानो देखो, तो मानो देखो, प्रत्येक इन्द्रियों के इन्द्रियों के विषयों को एकाग्र करके और कहो मानो देखो, अमृतं ब्रह्मणा स्वाहाः ऐसा स्वाहाः उद्गीत रूप में गाना प्रारम्भ करो।

तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार अपने वाक् प्रगट किए तो ब्रह्मचारी अपने में धन्य-धन्य उच्चारण करने लगे ब्रह्मचारियों ने कहा-प्रभु! आपको धन्य है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की देखो, विज्ञानशाला में मानो व्रतं ब्रह्मा वसु देवाः तो विचार आता है कि हम अपनेपन का अपने में ध्यानावस्थित होते रहें। जिससे बेटा! हमारा जीवन एक महानता की ज्योति में प्रवेश होता रहे, और महान बन करके हमारे जीवन में एक महानता अपने में प्रवेश हो करके हम अपने में मनतं प्रह्वा अपनी इन्द्रियों में धर्म को विचार-विनिमय करने वाले बनें मानो देखो, नेत्रों में सुदृष्टि हो, श्रोत्रों में सु शब्द हों, और वाणी में सु शब्द हों और घ्राण में सु सुगन्धि हो और त्वचा में सुप्रीति हो, तो मेरे प्यारे! देखो, उसी का नाम धर्म है, धर्म कहाँ रहता है, वेद का ऋषि कहता है, क्या धर्म रहता है, मानव की

पांचों इन्द्रियों में विद्यमान रहता है।

आज का विचार अब मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट नही करूंगा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस प्रकार अपना विश्लेषण करते हुए मेरे पुत्रों! अपने में मौन हो गएं और यज्ञदत ब्रह्मचारी भी अपने में मौन हो गएं उन्होंने संसार रूपी ब्रह्माण्ड को मापते हुए कहा क्या यह यज्ञशाला है परमात्मा इसका ब्रह्मा है आत्मा यज्ञमान है पंच महाभूत देखो, हूत कर रहे हैं यह परमात्मा का याग चल रहा है तो मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार देखो, अब मैं अपने प्यारे महानन्द जी से दो शब्द जैसा उनका उद्गीत है वह दो शब्दों में अपने वाक् को उदघृत करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् यमा रथं मम वचा वर्चसव मां देवाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल, अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे, और गागर को अपने में मानं ब्रह्वे सागर में सागर को गागर में परिणत करने के लिए अपने विचारों में रत्त थे, और वह मानो एक-एक शब्द उनका बड़ा अमूल्य और वह मूल्यं ब्रह्मा कृतं और कृतियों में रत्त होने वाला है। आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विचार नही दूंगा, क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव के वाक्यों की मैं पुनरूक्ति करूं, यह मुझे शोभा नही देता है। परन्तु विचार केवल हमारा यह है, क्या जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है, यहाँ मानो देखो, याग का आयोजन हुआ और यह इतनी महान स्थली किसी काल में समय-समय पर देखो, इस स्थली पर नाना प्रकार के व्यवधान भी हुए हैं, पापा वरण भी हुए हैं, परन्तु देखो, यही आज देखो, अपने में यज्ञस्थली बन करके रही है। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ मुझे वह काल स्मरण है, जब देखो, महर्षि व्यास और महर्षि व्यास और महात्मा देखो, जैमिनी इत्यादियों का यहाँ आगमन होता रहा है, और यहाँ देखो, नदी के तट पर देखो, यागों का चयन होता रहा है, मैंने पुरातन काल में भी अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन किया था कि यह वह स्थली है, जहाँ देखो, महर्षि व्यास का जीवन व्यतीत हुआ, देखो, व्यास जी ने यहाँ विद्यालय की स्थापना की, यहाँ पाण्डव इत्यादि देखो, शिक्षा का पठन-पाठन प्रातः काल में करते रहें हैं। उसके पश्चात भी मानो उसी स्थली बन करके देखो, यहाँ यह वही स्थली है, जहाँ मंगलं ब्रहे महाराजा दुर्योधन ने एक मानो देखो, अशुभ गृह का निर्माण किया था पाण्डवों को नष्ट करने के लिए, परन्तु देखो, वह यहाँ से चले गएं, साम्राज्य करने को और देखो, यह स्थली है, गृह अग्नि के मुखारबिन्दु में परिणत हो गया है। यहाँ मानो देखो, यह जो स्थली है जहाँ भीम और घटोत्कच्छ दोनों अपनी स्थूलतम विज्ञानशाला बना करके यन्त्रों का निर्माण करते थे। वह अन्तरिक्ष में त्यागते रहते थे आज भी देखो, वर्तमान का जो वैज्ञानिक है, एक मानो समुद्र में छाया आती है, जिस छाया के आने से जो भी यन्त्र जाता है, वह छाया में समाप्त हो जाता है। तो यहाँ के वैज्ञानिक देखो, वर्तमान काल में बड़े चिन्तित होते रहते हैं, परन्तु मैंने पुरातन काल में कहा था वह महाराज भीम और घटोत्कच्छ का निर्माणित किया हुआ एक यन्त्र है, जो अन्तरिक्ष में गमन कर रहा है, अन्तरिक्ष में देखो, वह स्थिर भी हो जाता है, और वह स्थिर हो करके देखो, जहाँ समुद्रों में छाया जाती है। उस परिणीधी में जो भी यन्त्र है, नष्ट हो जाता है, उसका एक अंकुर भी वैज्ञानिकों को प्राप्त नहीं होता। मैंने बहुत पुरातन काल में वर्णन करते हुए कहा यह ऐसी स्थली रही है, जिस स्थली पर देखो, यहाँ नाना प्रकार की विद्या का चयन होता रहा है, और विद्यालयों में देखो, यहाँ धनुर्विद्याएं यहाँ वैदिक विद्याएं यहाँ वेद का पठन-पाठन देखो, वह पुरातन काल से ही देखो, यह महाभारत के काल से होता रहा है। उससे पूर्व काल में भी देखो, नदियों के तट पर देखो, ऋषि-मुनि रहे हैं। अपने-अपने कर्म बनाने के लिए मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से उच्चारण करके देखो, उद्गीत गाते हुए कहा था, पुरातन काल में देखो, महाराज व्यास देखो, यहाँ अमृतं ब्रह्मे देखो, देवतवां ब्रह्वा यहाँ एक विज्ञानशाला का निर्माण किया गया, और वहीं देखो, कुछ समय के पश्चात व्यास के पश्चात महाराज द्रोण का भी यहाँ शिक्षालय रहा है, और उन्होंने भी शिक्षा देना प्रारम्भ किया, और यही पाण्डवों को नष्ट करने की एक भूमिका बनाई। परन्तु

वह भी चले गएं, वह पांचाल राष्ट्र को चले गएं, तो वह शान्तं ब्रह्मे वह अपने में गृह समाप्त हो गया।

तो विचार आता रहता है मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से उच्चारण करता रहता हूँ समय-समय पर आने पर देखो, वह अमृते देखो, नाना कुछ रूढ़ियों ने कुछ रूढ़िवादियों ने धर्म के नाम पर रूढ़ियाँ बना करके इसके ऊपर नाना प्रकार की अशुद्धता का प्रसार किया अशुद्धता यहाँ देखो, वृत्ति हो गई, उसके पश्चात देखो, यह कैसा भूमि का संस्कार होता है अपने क्रियाकलाप मानो देखो, वायु मण्डल के होते हैं अरे, जहाँ अशुभ होते हैं वही शुभ कर्म होते हैं जहाँ अशुद्धियां विराजमान होती हैं, वही मानो देखो, शुद्धिकरण मानो देखो, वेद के मन्त्रों का गुंजन होता है, और स्वाहाः स्वाहाः की ध्वनियों से यह वायु मण्डल अपने में पवित्रता का अवधान कर रहा है।

तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि मैं राष्ट्रवाद की चर्चा तो विशेष नही देना चाहता हूँ, मैं राष्ट्रवाद को केवल इतना उच्चारण करना चाहता हूँ कि यदि राष्ट्र को ऊँचा बनाना है, विज्ञान को महान बनाना है, तो राजा को ब्रह्मवेत्ता बनना होगा और ब्रह्मवेत्ता बन करके और देखो, प्रजा को एक शुद्ध निर्देश देना होगा, सु प्रवृत्ति देनी होगी, मैंने बहुत पुरातन काल में कहा है, जितने भी नाना प्रकार के रूढ़िवादियों में आचार्य हैं, उन आचार्यों को एकत्रित करके उनका शास्त्रार्थ होना चाहिए। राजा की मध्यस्थता में और राजा ब्रह्मज्ञानी हो करके मानवता के लिए निर्णय देने वाला हो, और यह नाना प्रकार की रूढ़ियाँ समाप्त हो करके एकोकी विचार-विनिमय करके राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहिए। मैंने बहुत पुरातन काल में कहा है, जब तक समाज में पृथ्वी मण्डल पर नाना प्रकार की रूढियां बनी रहेंगी, ईश्वर के नाम पर वह रूढ़ियाँ ही मानो राष्ट्र और समाज का घातक बन करके इस समाज को विनाश के मार्ग पर ले जाती चली जाएगी। आज मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा कि राजा को ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए। जब तक राजा ब्रह्मवेत्ता नही होगा, चरित्र उसका महान नही बनेगा, और उसका आहार व्यवहार पवित्र नही बनेगा, जब तक देखो, राष्ट्र में शान्ति की स्थापना नही हुआ करती है।

तो आज का विचार-विनिमय क्या मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव का वाक् श्रवण करता हुआ, क्या यहाँ देखो, एक में देखो, याग महात्मा जैमिनी किया है, और यहाँ व्यास मुनि भी क्रियाकलापों का व्यवधान करते रहे हैं, और देखो, यहाँ गुरु द्रोणाचार्य अपने में धनुर्याग विज्ञानां भूतं देखो, नाना प्रकार की यागों का व्यवधान करने वाले ऋषि-मुनि देखो, महात्मा दुर्वासा शिक्षालायों में आ करके शिक्षा देते रहे हैं। तो विचार आता रहा है यह वही भूमि है, पवित्रता को रमण करने वाली, मैं अपने पूज्यपाद को क्या यहाँ विज्ञानशालाएं ऐसे रही हैं। आज भी घटोत्कच्छ का विज्ञान मानो देखो, जिसके यन्त्र वायु मण्डल में गमन कर रहे हैं, यहाँ का वैज्ञानिक जब भी अन्तरिक्ष में जाता है, चन्द्रमा के ऊपरले कक्ष में जाता है, मंगल के ऊर्ध्वा कक्ष में जाता है। तो उनका यान या तो नष्ट हो जाता है, या यान में किसी प्रकार की त्रुटियां आ जाती हैं, उन यन्त्रों का मिलान होता है। तो उसे अशुद्ध कर देते हैं, तो विचार आता रहता है कि मैं अपने पूज्यपाद को वर्णन करा रहा हूँ, आज मैं इसीलिए अपने उद्गीत गा रहा हूँ, क्या यहाँ एक याग का आयोजन हुआ है और मैं अपने यज्ञमान को देखो, अपना आशीश देना चाहता हूँ। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे तेरी महानता बनी रहे। मानो देखो, हे यज्ञमान! जब तू यज्ञशाला में विद्यमान होता है, तेरा कर्म, वचन, जब एकाग्र होता है, तो तेरा स्वाहाः द्यौ को प्राप्त होता है, और द्यौ से वही तुझे प्राप्त होता रहता है। हे यज्ञमान! मेरा जो अन्तरात्मा है, वह यज्ञमान के साथ रहता है, और यज्ञमान के साथ रह करके मैं कहता हूँ, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और इन्द्रियों में देखो, सदैव शक्ति बनी रहे। क्योंकि इन्द्रियों की शक्ति देवतव को प्राप्त करती है, और मानवीय शक्ति जब उपलब्ध हो जाती है, तो वही कर्मठता की आभा में रत्त रहते हैं।

महाराजा रघु का याग

तो आज का विचार-विनिमय क्या मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से उद्गीत गाने आया हूँ, क्या यहाँ एक याग का आयोजन हुआ और मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न है। मैं प्रसन्नता की प्रतिभा में सदैव रत्त रहता हूँ। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और तेरा याग तुझे प्राप्त होता रहे ऐसा मानो देखो, मेरा मन्तव्य रहता है आज का विचार केवल यह क्या हम अपने में मानो देखो, जीवन को राष्ट्रवाद वह देखो, ईश्वरवाद और धर्म और मानवीयता की रक्षा करने वाले बनें। क्योंकि धर्म कहते हैं, जो अपने कर्तव्य का पालन करता है, और जब कर्तव्य से विहीन हो जाता है देखो, न तो धर्म रहता है, और न मानवता रहता है, दूरिता मे परिणत हो जाता है। इसीलिए आधुनिक जो यह जो वर्तमान का काल यह यह देखो, मानवीयता की आवश्यकता है, यह मानो देखो, सुरा सुन्दरी और द्रव्य की लोलुपता में लिप्त न हो, यह सर्वत्र होने चाहिएं। परन्तु सामान्य रूप से होने चाहिएं। देखो, अपने मानवीय जीवन को नष्ट कर रहा है, द्रव्य को नष्ट कर रहा है, वही द्रव्य जब हीनता को दृष्टिपात कराता रहता है। वही द्रव्य जब सु कार्य करता है, वही तुझे नारकिक बना देता है, वही द्रव्य है, देखो, जो अमृतं ब्रह्मा तुम्हें देखो, नारकिता में और वही स्वर्ग में ले जाता है। तो स्वर्ग के गामी बनो, और राष्ट्र और समाज प्रसन्न होना चाहिए। जैसे योगी होता है, योगियों के लिए ने तो दिवस होता, और दिवस रात्रि होती है। जब यह संसार प्राणी जागता रहता है, तब उस समय मानो देखो, परमात्मा का जो भक्त है। वह विश्राम करता है, और जब यह देखो, संसार का प्राणी विश्राम करता है, तो यह परमात्मा के अवधान में मानो देखो, उसकी रचना में मानो अपने को ले जाता है और उसका ध्यान करता रहता है। इसी प्रकार राजा को चाहिए क्या राजा को दिवस रात्रि और देखो, रात्रि उसके लिए दिवस होना चाहिए। प्रजा में भ्रमण करना चाहिए। अपने नाना रूपों को धारण करके और मृत्यु से मृत्यु को विजय करके, राजा को भ्रमण करना चाहिए, और वह किसी प्रकार की त्रुटि हो उसका व्यवधान करना चाहिए। इसीलिए वह न्यायालय में स्थित हो करके न्यायधीस बने तो इस प्रकार देखो, राजा को ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मवेत्ता बन करके ऋषितव को प्राप्त होता हुआ ही राष्ट्र का पालन कर सकता है, और राष्ट्र को उन्नत बना सकता है, और यदि देखो, आलस्य और प्रमाद में आहार और व्यवहार में और दूसरों के रक्त को बहाने में लगा रहता है, चाहे वह द्रव्य प्रजा के वैभव को अपने में संग्रह करने वाला हो। चाहे वह देखो, किसी प्राणी को आहार बना करके तपा करके आहार करने वाला हो, वह राजा को दोनो ही मानो देखो, हानिप्रद होता है। तो इसीलिए मैं आज विशेष चर्चा प्रगट करना नही चाहता हूँ, विचार-विनिमय केवल यह क्या महानता की आवश्यकता है, चरित्र और ज्ञान और महानता की आवश्यकता है, जिससे समाज ऊँचा बनता है, प्रत्येक मानव अपने कर्तव्य का पालन करे यह समाज धर्म के मर्म को जानता है, और जब कर्तव्य ही नही रहेगा, तो चाहे वह ब्रीणि हो मानो देखो, सब भ्रष्ट हो जाता है, और परमात्मा के एक-एक वाक् का उद्गीत गाना चाहिए। परमात्मा एक है, वह रचनाकार है, वह द्रव्य का स्वामीतव करने वाला है परमात्मा का व्यवधान हो करके देखो, धर्म एक होता है और रूढ़ियाँ अनेक होती हैं इसीलिए रूढ़ियों को त्याग करके और धर्म को अपना करके मानवता का प्रसार करो ऐसा मानो देखो, मेरा मन्तव्य रहता है इसीलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को अपना वाक् उच्चारण करके मैं अपना विज्ञाम चाहता हूँ।

पूज्यपाद गुरूदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी महानन्द जी ने अपने उद्गीत गाए उनका एक ही विचार रहता है कि राष्ट्र ऊँचा हो, और मानव समाज में महानता की प्रतिभा हो, क्योंकि महानता के लिए जीवन ऊर्ध्वा में गमन करना चाहिए। ऐसा मानो इनका अपना मन्तव्य रहा है। इनके विचारों में बड़ी सार्थकता रही है और इनके विचारों के गर्भ में एक मानवीय मान्यताएं रही हैं जो परम्परागतों से ऋषिप्रद हैं तो आज का विचार समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।